सम्पादकः—वेङ्कटेश नारायण तिवारी, भारत-सेवक-समिति।

राष्ट्रीय ग्रन्थ-माला नं० ५

बीसवीं सदी का महाभारत।

लेखकः

विनयकुमार सरकार, एम० ए०।

अनुवादकः

बाबू मुरारिदास अग्रवाल।

प्रथम संस्करण
२००० प्रतियां। } १९१८। { मूल्य बारह आने।

अभ्युदय प्रेस की उत्तम, उत्तम पुस्तकें।

नाम	जिल्ददार	सादी
१ श्रीमान् गोखले के व्याख्यान	...	१।)
२ सप्त सरोज	...	॥।)
३ लखनऊ कांग्रेस में स्वराज्य	...	।)
४ भारतवर्ष के लिए स्वराज्य	...	।=)
५ कांग्रेस के सभापति का सम्भाषण	...	॥)
६ कांग्रेस चरितावली	...	॥)
७ अवकाश की बातें	...	-)
८ किसान	...	।=)
९ भारत-भारती	...	१)
१० आनन्दमय-जीवन	॥।≈)	॥≈)
११ प्राणघातक माला	...	॥=)
१२ कर्मवीर गांधी	...	॥)
१३ रामायणी कथा	...	१)
१४ दुखिया (नाटिका)	...	।≈,
१५ गूढ़ विषयों पर सरल विचार	...	।=
१६ क़ैसर रहस्य	...	।
१७ युद्ध की २५०० बातें	...	
१८ नवीन सम्पत्ति शास्त्र	॥)	
१९ कर्मवीर	...	॥)
२० हमारे शरीर की रचना	...	२।)

मैनेजर, 'अभ्युदय,' प्रयाग।

मैनेजर, 'प्रताप', कानपुर

शुद्धि अशुद्धि पत्रम् ।

अशुद्ध	शुद्ध	पन्ना	पंक्ति
उन्नीसवी	उन्नीसवीं	१	५
राष्ट्रिय	राष्ट्रीय	१	६
परिक्षा	परीक्षा	१	१३
भांती	भांति	२	७
हानी	हानि	२	१३
कारखानो	कारख़ानों	३	१२
बाजारों	बाज़ारों	३	१२
गर्जन	गर्जने	५	७
हडप	हड़प	५	११
नकशा	नक़शा	५	१२
तरीक	तरीक़े	५	१६
निरुपण	निरूपण	६	११
नगरो	नगरों	६	१८
नहीं हैं	नहीं है	७	१
अन्तरर्जातीय	अन्तर्जातीय	७	६
खून-खराबी	ख़ून-खराबी	७	१३
फाडफाडकर	फाड़फाड़कर	८	१

अशुद्ध	शुद्ध	पन्ना	पंक्ति
हडप	हड़प	८	६
चण्पड	चण्पड़	८	११
अंगरेज	अंग्रेज़	८	१३
पडा	पड़ा	८	१६
टुकडा टुकड़ा	टुकड़ा टुकड़ा	८	६१
खडे	खड़े	८	१७
घराऊ	घरेलू	९	१
झगडा	झगड़ा	९	१
लडाई	लड़ाई	९	८
मौका	मौक़ा	९	१०
डाक खाने	डाकख़ाने	१०	२०
शतव्दी	शताब्दी	११	११
हौ	हो	११	१४
अंगरेज	अङ्गरेज़	१२	८
अंगरेजो	अङ्गरेज़ों	१२	९
लडाई	लड़ाई	१२	१९
खवरे	ख़बरें	१२	१९
रोलने	बोलने	१४	१
देखाई	दिखाई	१४	४
कारखानो	कारखानों	१९	३
हजारो	हज़ारों	२१	११

अशुद्ध	शुद्ध	पन्ना	पंक्ति
जमीनों	ज़मीनों	३२	११
भविष्यत	भविष्य	३२	१२
चीजें	चीज़ें	३४	८
घराऊ	घरेलू	३५	३
लाखों	लाखों	३६	३
जहाजें	जहाज़ें	३४	१४
अंग्रेजी	अङ्गरेज़ी	३६	२२
गिरफ्तार	गिरफ़तार	३७	७
ज्यादा	ज़्यादा	३७	१०
जहाजी	जहाज़ी	३७	१३
नुकसान	नुक़सान	३८	३
बाकी	बाक़ी	३८	६
कानून	क़ानून	३२	१८
बाजार	बाज़ार	४३	१८
उपर	ऊपर	४५	१०
अगरेजी	अङ्गरेज़ी	५८	५
हजार	हज़ार	६२	६
आबाल	अबला	७६	३
आथक	आर्थिक	७७	१२
धनाढ़य	धनाढ्य	७६	३
रामनं	रोमन	८६	१९

अशुद्ध	शुद्ध	पन्ना
तोडती	तोड़ते	६२
ज़र्मनी	जर्मनी	६४
अंग्रेजा	अङ्गरेज़ों	६४
देखा	देखना	६६
बन्दूक	बन्दूक़	१००
जानेक	जानेके	११२
लायक	लायक़	११३
शौक	शौक़	११४
ढोना	ढोना	१२१
है	हैं	१२२

विंश शताब्दीका महाभारत ।

उन्नीसवीं शताब्दीका प्रायश्चित ।

गत १९७१ के आषाढ़ मासमें एक स्लाव युवकने अष्ट्रिया-हंगरीके भावी सम्राट्की हत्या की थी। उसके एक ही मासके भीतर समग्र जगत व्यापी भीषण समर (Armageddon) का प्रारम्भ हुआ। इस परस्परध्वंस-साधन-कारी महासमरमें उन्नीसवीं शताब्दीकी विज्ञान शक्ति अपना सुफल और कुफल एक साथ प्रकट कर रही है। इस संग्रामका झगड़ा तो बहुत दिनोंतक चलेगा पर हालमें एक सन्धि स्थापित हो सकती है, उस सन्धिसे प्रतिद्वन्द्वियोंके असली राष्ट्रिय प्रश्नका निपटेरा तो नहीं होगा, पर हां इस संग्राम के फलसे पाश्चात्य मनुष्योंकी आंखें खुल जायगी, और ये लोग अपनी सभ्यताके सम्बन्धमें घोर सन्देह करने लगेंगे। इस समय पाश्चात्य जीवनके आदर्श, और समाज बन्धनकी एक कठिन परिक्षा हो रही है । जिसका स्पष्ट अर्थ यह है कि उन्नीसवीं शताब्दीका मदमत्त युरोप आज अपने कार्य्योंका प्रायश्चित कर रहा है । इसलिये बीसवीं शताब्दीके संसारमें युरोपीय राष्ट्र शक्ति और सभ्यता-प्रवाह कितना स्थान अधिकार करेगा इसके समझनेमें मनुष्योंको देर नहीं लगेगी ।

विज्ञानके सामर्थसे वर्तमान कालमें मनुष्य समस्त जगत् को एक छोटेसे गांवकी तरह समझनेमें समर्थ है। रेल, तार, जहाज़, टेलीफोन और सम्वाद पत्रोंने मिलकर मानो इस पृथ्वी को एक छोटीसी बस्ती बना दिया है। उसदिन न्युयार्कमें एक यन्त्र को दबाकर युक्त-राष्ट्र (अमरीका) के सभापति ने २५०० कोस दूर पनामा नहरका द्वार खोल दिया। मनुष्य अपने शरीरको जैसे अपने आधीन समझता है उसी भांती आज मानो समस्त पृथ्वी ही वैज्ञानिक वीरों के अधीन हो रही है। शरीर के किसी अंशमें भी घाव होनेसे जैसे समस्त शरीरमें पीड़ा होतीहै उसी प्रकार आजकल्ह पृथ्वीके किसी स्थानमें भी उथल पुथल होनेसे दुनियामें सब जगह उसका प्रभाव आपहुँचता है। प्राकृतिक जगत् में भूमिकंपका प्रभाव भी इतनी जल्दी पृथ्वीके सब स्थानोंमें नहीं फैल सकता।

एक नाबालिग स्लाव प्रजाने अष्ट्रियाकी हानी की, उसका बदला लेने के लिये सम्राट्ने अपने आस पासके स्वाधीन स्लाव राष्ट्रोंके विरुद्ध युद्ध घोषणा की। इस भांति विस्मय जनक घटना संसारके इतिहासमें सैकड़ों वार हो चुकी हैं, यह कोई नयी बात नहीं है, संसारमें ऐसी घटनायें साधारणतः हुआ ही करती हैं। पृथ्वीके छोटे बड़े सभी नेपोलियन समय समय पर ऐसा कर चुके हैं।

वर्तमान कुरु-क्षेत्रमें भी क्षणभरमें अचिन्तनीय परिवर्तन होगया। अष्ट्रियाकी युद्ध घोषणा सुनतेही न्युयार्कसे लेकर टोकियो तक दाल रोटीकी दर चढ़ गई। लण्डन, पैरिस, बर्लिन, सेन्टपिटर्सबर्ग,

रायोडिजेनिरो, ब्रूनो, अयर इत्यादि सभी स्थानोंमें सोने चांदीके रुपये कम होने लगे। इंगलैण्डमें अण्डा, मक्खन चीनी इत्यादि का अभाव हुआ। कलकत्ता, बम्बई व अलेकजेण्ड्रियाकी आमदनी और रफ़तनी रुक गई। एक लाख अमरीकावासी स्त्री पुरुष युरोपके अनेक देशोंमें अटक गये उन लोगोंके जेबमें लाखों रुपयोंकी चेकवही मौजूद है पर वे १॥) दामकी वस्तुयें खरीद नहीं सकते! कोटि कोटि रुपयोंके अधीश्वर महाजनगण, लण्डन पैरिस, जेनेवा, ब्रसेल्स, वर्लिन इत्यादि स्थानोंके होटलोंमें निवास करनेमें असमर्थ हुए चेक का रुपया न मिलनेके कारण किसी भी होटल के मालिक उन्हें आश्रय नहीं देते। एक सप्ताहके भीतर एशिया, युरप, अफरीका और अमरीकाके कृषिक्षेत्रमें, शिल्प कारखानोंमें, रुपयेकी बाजारोंमें और वाणिज्य संसारमें ऐसा गड़बड़ क्या कभी और उपस्थित हुआ था? इस दृश्यकी कल्पना तो पहिले बहुतोंने की थी, परन्तु इसका यथार्थ चित्र धारणाके अतीत था। १९७१ के श्रावण मासके अन्तिम सप्ताहमें यह त्रिभुवन व्यापी आर्थिक विप्लव प्रारम्भ हुआ।

इस ओर तोप दागनेका दृश्य क्या कम अद्भुत है! अष्ट्रिया सर्वियाका राष्ट्रकेन्द्र दखल करना चाहता है, परन्तु अंग्रेज डवलिन की रक्षा करनेके लिये व्यस्त हुए। हौलैण्ड, बेलजियम, और सुईजरलैण्ड अपनी अपनी स्वतन्त्रताकी रक्षा करनेके लिये चेष्टा करने लगे। युरोपमें फिर हाथ बढ़ानेकी आकांक्षा तुर्कोंके हृदय में जागृत हुई। जर्मनी, अष्ट्रिया और रूसके दो करोड़ तीस लाख पोल-जातिके नरनारियोंके हृदयमें स्वाधीन पोलराष्ट्र गठन

करनेके उपायकी आलोचना होने लगी। युरपनिवासियोंके हृदयमें इस बातकी आशङ्का होने लगी कि कहीं चीन युरपनिवासियोंको वहांसे हटादेनेकी चेष्टा तो नहीं कर रहा है। जापान और अमरीकाके बीच झगड़ा होनेकी सम्भावना होने लगी। प्रशान्त-महासागर, भारत-महासागर, अटलान्टिक-महासागर इत्यादि सभी महासागर और सागरोंमें युद्ध पोत तैर रहे हैं। भूमध्य सागरसे होकर जहाजोंका आना जाना असम्भव हो रहा है। अष्ट्रिया और जर्मनी परस्पर चिर शत्रु होते हुएभी आज एक दूसरेके परम मित्र हैं। उधर चिरशत्रु रूस और इंगलैण्ड परस्पर एकता से बंधे हैं। राष्ट्रमण्डलमें ऐसी अघट-घटना क्या कभी हुई है?

हां! हुई है—मानव जातिके इतिहासमें अघट-घटना सदा होती आई है। अचिन्तनीय-घटना-राशिही राष्ट्रमण्डलका एक मात्र तथ्य है। फरासीसी क्रान्तिके समयमें और नेपोलियन के समयमें एशिया, युरप, अफरीका और अमरीकामें ऐसी घटनायें हो चुकी हैं; इसे सभी जानते हैं। परन्तु वास्तवमें तो सभी युगोंमें ऐसी घटनायें होती आई हैं। भेद इतनाही है कि किसी युगमें कर्म्म-क्षेत्र कुछ बड़ा होता है और किसी युगमें कुछ छोटा या किसी युगमें उलट पुलट थोड़ेही समयमें अधिक दिखाई पड़ती है, और किसी युगमें किसी विराट् परिवर्तन के लिये अधिक समय लगता है।

इस बीसवीं शताब्दीके महाभारतमें हम लोग नेपोलियनीय महाभारतका ही सब लक्षण देख रहे हैं। कर्म्मशक्ति या कार्य्य

प्रणालीमें सामान्य मात्र प्रभेद भी नहीं है । परन्तु पहिले एक स्थानसे दूसरे स्थान तक प्रभाव पहुंचनेमें देर होती थी—इस समय क्षण भरमें दुनियांके सब स्थानोंमें हलचल होने लगती है । क्योंकि नेपोलियनके समयमें नये विज्ञान, नये जहाज़ और नवीन शिल्प नहीं थे पर इस बीसवीं शताब्दीमें यह सब वैज्ञानिक सामान संसारमें इतना भरा हुआ है कि अष्ट्रियाकी तोप गर्जनके साथही अमरीकासे लेकर भारतवर्ष तक संसार के सभी देशोंमें बाज़ार दर ऊँची नीची होने लगी और सफेद जाति, कालीजाति, पीतजाति और लालजाति सभी जातियां युद्धके लिए पैतरा बदलने लगीं ।

अष्ट्रिया सर्वियाको हडप जाना चाहता है । परन्तु इसके कारण समस्त युरपका मानचित्र (नकशा) बदल जायगा । एशिया और अफरीकाके राष्ट्र-मण्डल नवीन आकार धारण करेंगे । उत्तर अमरीका और दक्षिण अमरीकाके छोटे बड़े स्वाधीन राज्य, और युक्तराष्ट्र, उपनिवेश और विजित प्रदेशोंकी चौहद्दी नये तरीकेकी होगी । किसी किसी स्वाधीन जातिका कुछ अंश पराधीनताके सिकड़ोंसे जकड़ जायगा । और कोई कोई पराधीन जाति भी स्वाधीनता रत्न लाभ करनेमें समर्थ होगी । आज जो लोग नितान्त तुच्छ हैं उनमें भी कोई कोई अपना सिर उठानेमें समर्थ होंगे । और जो लोग जगत्के हर्ता कर्ता विधाता हैं वे लोग भी अपना अपना घर संभालनेमें बाध्य होंगे । वर्तमान समरमें जो लोग मित्रभावसे शत्रुके विरुद्ध खड़े हैं वेही लोग परस्पर नोच खसोट करने लगेंगे । जिस बहानेसे यह

'आर्मागेडन,' महायुद्ध आरम्भ हुआ है, युद्ध समाप्त होने पर कदाचित् वह किसीको याद भी न रहेगा। उस समय बिलकुल अनसुनी और अनहोनी समस्यायोंकी मीमांसा होने लगेगी। दुनियामें ऐसा हजारों वार हो चुका है। बीसवीं शताब्दीके महाभारतमें भी वही होगा। "चक्रवत् परिवर्त्तन्ते सुखानि च दुःखानि च," संसारमें बस इसी नियमसे कार्य्य होता है। पर कब किसके भाग्यमें सुख होगा और किसके भाग्यमें दुःख इसका पहिलेहीसे अनुमान करना असम्भव नहीं है। इसके अतिरिक्त किन किन घटना चक्रोंके प्रभाव से किस जातिको सुख और किस जातिको दुःख होगा इसका भी विचक्षण बुद्धिमान लोग पहिलेहीसे निरूपण कर सकते हैं।

गत कई वर्षोंके भीतर युरपनिवासियोंने भिन्न भिन्न जातियों को मिलाकर कितने ही अन्तर-राष्ट्रीय सम्मिलन (International Conference) स्थापित किये हैं। कभी दर्शन-शास्त्रकी आलोचना के लिये रूस, जर्मन, अंगरेज़, फ़रासीसी, अमरीकन, हिन्दू, जापानी, मुसलमान इत्यादि कितनीही जातियां अपने अपने विशेषज्ञ लोगोंको रोम, जनेवा, शिकागो, सेन्टपिटर्सवर्ग, लण्डन इत्यादि नगरोंमें भेज रही हैं। और कभी शान्तिका आन्दोलन दृढ़ करनेके लिये संसारकी अनेक जातियां एक विराट् सभामें एकत्रित होती हैं। ऐसी अन्तर्जातीय सम्मिलनोंकी संख्या सौ से भी अधिक है। पर आज वे सम्मिलन कहां हैं? वे सब धुरन्धर विद्वानोंकी मण्डली आज कहां है जो कहती थी कि विद्या-मंदिरमें, पाण्डित्य-भवनमें किसी प्रकारका द्वन्द्व विरोध,

द्वेषाद्वेष नहीं हैं ? कहां हैं वे धुरन्धर पण्डित-गण जो कहते थे कि सारस्वत जगतमें, विद्याक्षेत्रमें, श्वेत, कृष्ण, रक्त, पीत चर्मका भेद नहीं है ?

*आज अन्तर्जातीय विद्या सम्मिलन, अन्तर्जातीय ऐतिहासिक सम्मिलन, जगत व्यापीय जातीय सभा, साम्प्रदायिक सम्मिलन, व्यवसाय सम्बन्धी अन्तर्जातीय सम्मिलन, व सोशलिष्टोंकी अन्तर-र्जातीय सभा आदि महासभाओंके नाम क्यों नहीं सुनाई पड़ते? आज सुधीगण निर्वाक् क्यों हैं? हे विंशशताब्दीके मनुष्यों, यही सब बातें न तुम्हारी वर्तमान सभ्यताकी गौरव-सामग्री हैं ?

इसके बाद †अन्तर्जातिय मन समझौता और युरपका ‡राष्ट्र सम्मिलन कुछ दिनोंसे ढोल पीटते थे कि, समग्र युरपही नहीं वरन् समस्त पृथ्वी वर्तमान युगमें ऐक्यबद्ध युक्त-मानव-परिवारमें परिणित हो रही है। मानव-समाजके भीतर अब किसी प्रकारका विरोध नहीं रहेगा। सामान्य विरोधके भी उपस्थित होतेही सब देशोंके प्रतिनिधियोंकी पञ्चायत बैठकर उसका निपटारा कर देगी। इस पञ्चायती बैठकमें जो व्यवस्था की जाती है उसका नाम अन्तर्जातिय समझौता है। इन सब सालिसी या पञ्चायतके नियमोंसे पृथ्वीमें सर्वत्र शान्ति प्रतिष्ठित होगी, मार-काट खून-खराबी बन्द हो जायगी, दुनियांमें सर्वत्र एक मानव परिवार विराजेगा।

---

*International Congress of Universities; International Conference of Historians; Universal Races Congress; Congress of Religions; International Congress of Trades Unions; International Conference of Socialists..

†International Law. ‡Concert of Europe.

नामी नामी राष्ट्र वीर गला फाड फाडकर इस आशा का प्रचार करते आये हैं, केवल आशाही नहीं उनमेंसे बहुतोंने समझाने का प्रयत्नभी किया है कि इसी बीचमें "युरोपीय राष्ट्र सम्मिलन" स्थापित हो गया है और थोडेही समयमें "मानवीय राष्ट्र सम्मिलन" (Parliament of Man) स्थापित हो जायगा। परन्तु सत्य घटना क्या है ? अधिक अतीत युग की बातों की आलोचना करने की आवश्यकता नहीं है। कुछ ही समय हुआ अष्ट्रिया के सम्राट् बोसेनिया और हर्जिगोविना नामक दो स्लाव राज्य हडप गये थे। उसी समयसे सर्विया अष्ट्रियाका प्रबल विरोधी हो उठा। किन्तु युरोपीय राष्ट्र मण्डलने उस समय क्या कुछ चूं चप्पड किया था ? इसके बाद अफरीकाके उत्तर पूर्व अञ्चल में एबिसिनिया निग्रुनिया इत्यादि प्रदेशोंके समीप गांवमें अंगरेज और फरासीसियोंसे एक दंगा हुआथा । उस दंगेको मिटानेके लिये युरोपीय राष्ट्र मण्डलने क्या हाथ उठाया था ? अभी उस दिन बाल्कन समरमें भी क्या दिखलाई पडा ? तुर्कीका टुकडा टुकडा कर देनेके लिये जब क्षुद्र स्लाव राष्ट्र कमर कस-कर खडे होगये थे उस समय 'कन्सर्ट ओफ युरोप' कहां था ? इंगलैण्डवाले इतने दिनों तक रूसके विरुद्ध तुर्कोंकी सहायता करते आये हैं परन्तु तुर्कोंके पुराने मुरब्बी अंग्रेजोंने भी तो राष्ट्र-सम्मिलनकी पञ्चायत नहीं बैठाई । और बातोंको जाने दीजिये बाल्कन के छोटे छोटे राज्य जब तुर्कोंको हटा देनेके बाद आपसहीमें मार काट मचाने लगे उस समय भी तो युरोपीय राष्ट्र-सम्मिलनने ईसाइयों

का घराऊ झगडा मिटानेके लिये पञ्चोंको नहीं इकट्ठा किया? सत्य तो यह है कि लडाई किसी समयमें भी बन्द नहीं हुई। राष्ट्र सम्मिलन सब दूरहीसे नीतिका अनुसरण सब जगह करते आये हैं।

हा राष्ट्र नीति! तुम सदासे ही मिथ्या बातें कहती आई हो, और भविष्य में भी यही करोगी। "मन मलीन तनु सुन्दर कैसा, विष रस भरा कनक घट जैसा", बस इस स्वरूपके अतिरिक्त तुम्हारा दूसरा रूप कभी देखनेमें नहीं आया है। "जिसकी लाठी उसकी भैंस", बस यही तुम्हारा एक मात्र उपदेश है। पर तुम अपने शिष्यों और भक्तोंको इस बातका उपदेश देकर सदा सावधान कर देती हो कि मौका और समय समझकर बलका प्रयोग करो। मैकियावेली नीति और चाणक्य-नीतिके अतिरिक्त राष्ट्र मण्डलकी और कोई दूसरी नीति नहीं है। पर तौभी मैकियावेली और चाणक्यको गाली देना ही सब राष्ट्र वीरोंका एक ढोंग रहा है।

जिस नीतिका अवलम्बन करके तुम समाजमें, पञ्चायतमें, सम्मिलनमें, और वक्तृतामें काम कर रहे हो उसी नीतिके विरुद्ध गाल बजानेका नाम राष्ट्र-नीतिज्ञता और 'डिप्लौमेसी' है?

हा विज्ञान आज तुम्हारी क्या दुर्दशा है! उन्नीसवीं शताब्दीके दूसरे चरणसे, तुम्हारा प्रसाद पानेके लिये न जाने कितने सहस्र साधकोंने प्राण उत्सर्ग किया है। और उनकी साधनाने सिद्धिलाभभी क्या कम किया है? विज्ञान! तुमने पृथवीकी दूरी कम कर डाली है। समस्त जगत् को एक गांव

का आकार और विस्तार प्रदान किया है। किन्तु आज एक दिन का कर्म्मफल क्या दिखाई पडता है? ५०, ७५, और १०० वर्ष का सब आविष्कार पल भरमें धूलमें मिल गया।

बेतारके तारको हमलोग नये विज्ञानका सबसे बढ़कर आविष्कार समझते हैं। परन्तु वही आज इस कुरुक्षेत्र समर में महाविपत्ति जनक वस्तु है। कलतक जिसकी सहायतासे न्युयार्क वाले बर्लिन वालोंके साथ बात चीत करते थे। आज वही उनके चलने फिरने आने जानेमें भी प्रतिबन्धक होरहा है। किस राज्यमें, कब, और कहां कितनी सेना इकट्ठी हुई है, यदि ये सब बातें एक दूसरेकी जान जायं तो युद्धमें जय पाना कठिन हो जाय। आपसमें समाचारोंका आना जाना बन्द करना ही अपना अपना स्वार्थ है। इसीसे बिनातारका तार तोड़ फोड़ कर नाश कर देना वर्तमान संग्रामकारियोंका नितान्त कर्त्तव्य है। कहांतो व्यापारी लोग सोचते थे कि लण्डनसे भारत तक स्थलपथमें सीधी रेल लाइन बैठाई जायगी—इधर युद्ध घोषणा के बादही देखते हैं कि इंगलैण्डके लोग फ्रांसमें नहीं जासकते और फ्रांसकी रेल इटलीमें नहीं जाने पाती। जर्मनीके साथ रूसका रेलपथ, फ्रांसका रेलपथ, सुइज़रलैण्डका रेलपथ सभी बन्द कर दिया गया। कहां तो कोटि कोटि रुपये खर्च करके रेल, पुल, तारघर और डाकखाने इत्यादि बनाये गये थे—और कहां आज सब लोग स्वयं अपनी अपनी सम्पत्ति निर्दयताके साथ अपनेही हाथोंसे नष्ट कर रहे हैं। जिस समय रेल नहीं थी तार नहीं था, यन्त्रचालित जहाज़ नहीं थे, संवादपत्र नहीं थे, उस

समय का जगत् कैसा था आजकल उसका अनुमान करना असम्भव है। किन्तु इस युद्ध घोषणाके समयसे ही असम्भव भी सम्भव हुआ। उस प्राचीन युगका दृश्य आज हमलोगोंके आखोंके सम्मुख उपस्थित है। हमलोग १०० वर्षके वैज्ञानिक युग और आविष्कारोंको लांघकर अठारहवीं शताब्दीके जगत्में आपहुंचे हैं। इंगलैण्डका समाचार जर्मनी नहीं पाता, जर्मनीका समाचार जापान नहीं पाता, भारतवर्षका सम्वाद जर्मनी नहीं पाता, तुर्कीका समाचार अमरीका नहीं पाता। आने जानेकी सुविधा, समाचारपत्र, जहाज़, रेल, तार इत्यादिके रहते हुएभी आज पृथवी उस मध्य युगकी अवस्थामें वर्तमान है। यह क्या विज्ञानका रोदनान्त नहीं है? हा! उन्नीसवीं शतब्दी किस पापके फलसे आज बीसवीं शताब्दीमें तुम्हारा यह प्रायश्चित होरहा है? हे नव-विज्ञानके लीला निकेतन युरोपीय-मानव क्या इसका यथार्थ उत्तर तुम दे सकते हो?

शत्रुता किसे कहते हैं ?

शत्रु मण्डलकी साधारण अवस्थामें झूठ बोलना बुरा समझा जाता है या नहीं यह तो नहीं मालूम, परन्तु युद्धके समयतो झूठ बोलनाही धर्म समझा जाता है यह देखनेमें आता है । शत्रु पक्ष वाले आपसमें गाली गलौज और दोषारोप करते हैं; सचाईतो कदाचित् मानव संसारसे निर्वासित होगई है । समाचार पत्रोंमें जो सब हाल प्रकाशित होते हैं उन पर कुछभी विश्वास नहीं किया जा सकता। अंगरेज जर्मनोंकी कापुरुषता और पराजय बतलाते हैं और जर्मन अंगरेजोंकी भीरुता और विश्वासघातकता प्रचार करते हैं । युद्धके पहिलेकी घटनाओंका वर्णनभी जर्मन सम्राट्ने जिस प्रकारसे किया है अंगरेज मन्त्रियोंने ठीक उसके विपरीत वर्णन किया है। किस पक्षकी बातें सच समझ कर ग्रहणकी जायें, आंखोंके सामने युद्ध होरहा है और उसके कारणको हर एक पक्ष भिन्न भिन्न रूपमें प्रचार करता है, समझ में नहीं आता। इस सब वाक्यजाल को और राष्ट्रीय कारचोपीको बेध करके सत्यका उद्धार करना असम्भवहै। इसलिये अतीत इतिहासकी घटनाओंकी आलोचना करते समय सत्य व मिथ्याको अलग करना क्या दुःसाध्य नहीं है ?

इसके उपरान्त समाचारपत्रोंमें रोज़ही लड़ाईकी खबरें प्रकाशित होती हैं किन्तु उनमेंसे सैकड़े पीछे १० अंशतक भी विश्वास योग्य हैं कि नहीं इसमें भी सन्देह है । एक पक्ष

कहता है कि "हम जीते" दूसरे पक्षवाले उसी घटनाके विषय में कहते हैं कि "हम जीते"। इस ओर सब देशोंके पत्र सम्पादकगण अपने शत्रु पक्षके सम्पादकोंको मिथ्यावादी कहकर तिरस्कार करते हैं। अस्त्र युद्धके साथही साथ वाग्युद्धभी कुछ कम नहीं चल रहा है। अस्त्र युद्धका असली समाचार तो कोई भी नहीं पाते, तिस परसे वाक्ययुद्धकी जटिलता इतनी अधिक है कि उसमें कौन कितना झूठ है यह समझना बड़ा कठिन है। सभी मिथ्यावादी हैं सभी जहां तक होसकता है अपनी ओर खींचकर बातें कहते हैं, पराजयका सम्बाद छिपा कर जय लाभ का समाचार छापते हैं, बल्कि यहां तक कि पराजय की घटनाओंकोही जयलाभके सम्बाद-रूपमें प्रचार करते हैं। इस मिथ्यावादके वेष्ठनमें कौन पक्ष अधिक मिथ्यावादी है इस का प्रमाण कभी भी प्रकट नहीं होगा। जिस समय युद्धका इतिहास लिखा जायगा उस समय यह मिथ्याराशि ही ग्रन्थके रूप में स्थायी होजायगी। इसके अतिरिक्त जोलोग वैज्ञानिक और दार्शनिक प्रणालीसे घटनाओंकी व्याख्या करने बैठेंगे वे स्वजातीय गौरवके प्रचार करनेकी ही चेष्टा करेंगे। इसलिये एकतो असत्य तथ्य उस परसे उसका एकतरफा बयान इसी का नाम इतिहास है। जर्मन पण्डित जो कुछ लिखेंगे वहभी इन दोनों दोषोंसे दूषित रहेगा। अंग्रेज़ भी जो ग्रंथ लिखेंगे उसमेंभी ये ही दोष सम्पूर्ण रूपसे रहेंहींगे। निष्पक्ष ऐतिहासिकोंके लिये कोई भी उपकरण नहीं रहेगा। इसीलिये नेपोलियन ऐतिहासिक ग्रन्थोंके पढ़नेकी इच्छा करनेपर अपने कर्मचारियोंको आदेश

करता था कि "मेरे झूठ रोलने वालोंको बुलाओ" इतिहास । सचमुच मिथ्या तथ्योंका असत्य वृत्तान्त है ।

लड़ाई आरम्भ होतेही प्रत्येक देशोंमें नयी नयी कवितायें वनने लगीं । प्रत्येक सम्वाद पत्रों में जोशीली स्वदेशी गीतें देखाई दीं । इंगलैण्डके राजकवि रावर्ट ब्रिजेस देखिये जर्मनीके कैसरके साथ अंग्रेज़ जातिकी तुलना करते हुये लिखते हैं—

The monarch Ambition
Hath harnessed his slaves;
But the folk of the ocean
Are free as the waves.

और देखिये एक विलायती कवि युद्ध उत्तेजित करनेके लिये स्वजातियोंकी हंसी उड़ाते हैं—

I am a little English boy
My spirits can't be damped;
For Nelson's on his monument
And father's card is stamped.

* * *

They say that England ought to help
The Froggies and the Bear:
England will show "a solid front"
And "mediate" and "prepare."

* * *

Believe me, war's a brutal thing
And makes good men ashamed,
Oh! let us never draw the sword—
We might get killed or lamed!

* * *

Now, friends, 'tis time I made my bow,
Don't let yourselves be scared,
Remember, if the worst should come
The navy is prepared.

* * *

The finest Navy in the world,
All mann'd and cleared and oiled,
Proudly it looms along the waves,
We must not have it spoiled.

* * *

I am a little English boy,
There are no flies on me,
The English do not "want to fight"
They have learnt to wait and see."

अंग्रेज़ पहिले लड़ाईके घोर विरोधी थे। अनेक अपमान सहन करके भी ये लोग लड़ाईमें अग्रसर नहीं हुए। इसी शान्तिप्रियता और स्थितिशीलताके विरुद्ध उपर्युक्त कवितामें तीव्र प्रतिवाद है।

यह तो अंग्रेज़ समाजका जोश है। पर जर्मनोंकी ओरसे भी अत्यन्त भीषण कवितायें प्रकाशित हुई हैं। जर्मन लोग कैसी अनुचित और अनकहनी भाषामें अंग्रेजोंको गाली गलौज दे रहे हैं, उसका नमूना नीचे लिखी कवितामें भली प्रकार दिखाई देता है—

"What, hast thou then the Teuton kinship broken,
Perfidious Albion!

And sett'st thyself to deeds of shame unspoken,
All for what Judas won!

* * * *

Our stength is in the truth of God eternal,
The truth that shall not end.
Launch, England, launch thy fleets of might infernal
We stand strong to defend!

* * * *

We, too. are lords of Ocean nor can pardon
Thy people's bartered troth;
Our heart and will to victory shall harden,
Staunch to our word and oath.

* * * *

Putt'st thou thy trust in cunning calculation
That we are few, ye more?
Learn that the spirit of the German nation
Makes hosts on sea and shore.

* * * *

Storm on with Slavs and strangers in alliance
Vile-hearted nation on!
Thou shalt not set God's judgment at defiance,
Perfidious Albion!" *

एक वार शत्रुता प्रारम्भ होजाने पर भद्र भाषा व्यवहार करने की भी आवश्यकता नहीं समझी जाती। अकथ्य भाषामें अंग्रेज़ और जर्मनोंमें वाग्युद्ध चलरहा है। लण्डनके रास्ते रास्तेमें जर्म्मन सम्राट् को "पागल कुत्ता" के रूपमें वर्णन करके विज्ञापन प्रचारित होरहा है।

* यह जर्मन भाषा के कविता का अङ्गल भाषा में अनुवाद है।

संग्रामका व्यय।

वर्तमान युगमें युद्ध करना कुछ हंसी खेल या केवल मुहँकी बात नहीं है। आजकलके संग्रामका व्यय उठाना कुछ सहज काम नहीं है। पहिले समयमें लड़ाई बहुत कुछ सीधी सादी बात थी। खेतीके कामोंमें ही देशकी लक्ष्मी प्राप्त होती थीं। युद्धके लिये कुछ फौज सदा तैयार रहती थी। कुछ समय तक दोनों ओरकी सेनायें एक दूसरेके शक्तिकी परीक्षा करती थीं। युद्धक्षेत्रके सिवाय देशमें और कहीं अधिक अशान्ति और उपद्रव नहीं होता था। साधारण प्रजा बहुत कुछ बेखटके गृहस्थी, खेती, और गोरक्षा इत्यादि कर सकती थी।

किन्तु उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दीमें प्राचीन समाज की सरलता नहीं है। इस समय समाजके एक ओर खिंचाव पड़नेसे सभी ओर चोट पहुँचती है। पहिले हज़ार हज़ार मनुष्य युद्ध करते थे इस समय सैन्य संख्या लाखों तक पहुँचती है। आजकल खेतीके बदले शिल्प-कारखाने और अन्तर्जातीय वाणिज्य ही जातीय धन सम्पत्ति का कोष है। इसलिये जब युद्धके समय सभी श्रमजीवी और मज़दूर लड़नेके लिये बाध्य होते हैं तो एकतो उनके इस प्रकार फंस जाने से आमदनीका रास्ता बन्द होजाता है, दूसरे उसपरसे लाखों सैनिकोंके लिये

भोजन वस्त्रादि जुटाना पड़ता है। इसलिये आजकल युद्ध करना कोई खेलवाड़ नहीं है।

अत्यन्त दरिद्र और हताश जाति ही इस विंशशताब्दीमें युद्ध करनेमें प्रवृत्त हो सकती है, क्योंकि वह जानती है कि उसकी अधिक हानि और क्या हो सकती है, वह तो दारिद्र्य दुःखकी अन्तिम सीमापर खड़ी ही है। और दूसरे वे युद्धमें उत्साहित हो सकते हैं जो अत्यन्त धनी जातिके मनुष्य हैं। जिनके घर अतुलित धन सम्पत्ति मौजूद है वे सहजमें ही युद्ध करनेका साहस कर सकते हैं।

वर्त्तमान युगमें अमरीकाका युक्तराष्ट्र स्पेनके साथ जब युद्धमें प्रवृत्त हुआ था, उस समय उसको व्ययके लिये चिन्ता नहीं करनी पड़ी थी, क्योंकि अमरीकाकी धन सम्पति असीम है। इसके सिवाय अंग्रेज़ लोग जब बोर लोगोंके साथ लड़ रहे थे उस समय उन्हें रुपयोंकी चिन्ता नहीं थी, क्योंकि ऐश्वर्य्यपूर्ण ब्रिटिश साम्राज्य तो रुपयोंकी खान कहा जा सकता है।

हालहीमें बालकन प्रदेशोंमें भी युद्ध हुआ था। यहां भी रुपये पैसेका शोच अधिक नहीं था। पर हां यहां इसका कारण दूसरा ही था। ये लोग अत्यन्त दरिद्री हैं, इन्हें धन सम्पत्ति नष्ट होनेकी कुछ भी आशङ्का नहीं है। इन लोगोंके पास है ही क्या कि उसकी रक्षा करनेके लिये आगा पीछा सोचना पड़ता? इसी से ये लोग "मरता क्या न करता" की तरह युद्धमें भिड़ गये थे। अवश्य पानीकी तरह रुधिर बहानेके लिये ये लोग तैयार थे।

आधुनिक कल कारखानोंका शिल्प इनके पास विशेष नहीं था, खेती ही प्रधान जीविका थी। इसीसे किसी तरह युद्ध चला सकने पर जीवन लाभ करना इन लोगोंके लिये अधिक सहज था। लड़ाईके कारण केवल मनुष्यहानि होगी किन्तु यदि जीत होजाय तो असल मै सूदके वसूल हो जायगा। और यदि पराजय होजाय तो भी कौनसी ऐसी हानि है। साधारण खेती बारीमें लगजाना तो हाथोंका खेल है।

किन्तु इंगलैण्ड, फ्रांस और जर्मनीका युद्ध इन सब लड़ाइयों से पृथक् है। इन देशोंकी आर्थिक और सामाजिक अवस्था दूसरे चालकी है। इसलिये संग्रामका व्यय भी अत्यन्त अधिक है। रक्तपात, मनुष्य हानि, और नक़द रुपयोंका ख़र्च तो हई है इसके अतिरिक्त वैज्ञानिक यन्त्रशिल्प, कल कारखाना, घर द्वार, बंक, वाणिज्य, जहाज़, रेल, इत्यादि कितनीही और हानि होंगी उसका अनुमान करना असम्भव है। इसीलिये युद्धका यथार्थ व्यय असीम है। समर शान्त होजानेके न जाने कितने वर्षोंके बाद इन लोगोंकी आर्थिक और सामाजिक अवस्था पूर्ववत् होगी इसका जानना दुस्तर है, यहांतक कि इस महाभारतके उपरान्त थे लोग नवीन रूपसे जीवन आरम्भ करनेमें समर्थ होंगे कि नहीं इसका सन्देह करनाभी कुछ अन्याय नहीं है। कदाचित इस लड़ाईके सुयोगमें नई नई जातियां इनका शिल्प वाणिज्य इत्यादि अपने हाथमें कर बैठेंगी और इन लोगोंको लड़ाईकी वेदना दूर करनेमें इतना समय लगेगा कि उस अवस्थामें नये प्रतिद्वन्दियोंको वाणिज्यक्षेत्रसे हटाना

असम्भव हो जायगा। इस भावी हानिसमूहको भी लड़ाईके खर्चके भीतरही समझना उचित है।

सम्वत् १९२७ वि० में फ्रान्स और प्रशियासे लड़ाई हुई थी। उसके बाद नवीन फ्रांसप्रजातन्त्र (रिपब्लिक), नव-जर्मन साम्राज्य, नवीन अष्ट्रिया-हंगेरी और ऐक्यवद्ध स्वाधीन इटली, वर्तमानरूपमें गठित हुये थे। लड़ाई केवल छः महीने चली थी। दोनों ओरसे सब मिलाकर पन्द्रह लाख मनुष्योंने युद्ध किया था। परन्तु युद्ध का खर्च साढ़े चार अरब पड़ा था। इसके सिवाय फ़रासीसियोंको युद्धकी क्षति पूर्ण करनेके लिये जर्मनोंको तीन अरब रुपया देना पड़ा था। इसप्रकार सब मिलाकर इस छोटीसी लड़ाईमें साढ़े सात अरब रुपया खर्च हुआ था।

बोर युद्धके खर्चका व्योरा भी इसी प्रकार है। किसी किसी समय अंग्रेजोंने चार लाख मनुष्य युद्ध क्षेत्रमें रक्खे थे। यह युद्ध अढ़ाई वर्ष चला था। और इसमें साढ़ेचार अरब व्यय हुआ था।

आजकलके समयमें युद्धक्षेत्रके आधुनिक साज सरञ्जामके साथ दस लाख मनुष्योंको सुसज्जित रखनेमें प्रति सप्ताह साढ़े सात करोड़ रुपयोंकी आवश्यकता पड़ती है। युरोपीय समरशास्त्र वेत्ताओंका यह मत है कि वर्तमान महाभारतमें विपक्षियोंको कमसे कम एक करोड़ सेनाका प्रवन्ध करना पड़ता है। यदि इस युरोपीय-राष्ट्र समूहके वर्तमान समरके प्रतिद्वन्दियोंके छः मासका व्यय जोड़ा जाय तो कमसे कम पन्द्रह अरब रुपया हो जायगा।

यह तो हुई नक्द़ खर्च की बात। इसके ऊपर वाणिज्य व्य-

वसाय, शिल्प, कारखाना, इत्यादि सभी वन्द हैं। इससे क्या प्रत्येक राष्ट्रोंके पूंजीका नुकसान कुछ कम होरहा है?

देखते हैं कि जयलाभ चाहे कोई करे पर विजयका मूल्य अत्यन्त अधिक होगा। इस ताण्डव लीलाके बाद कोई व्यक्ति भी यूरपकी प्राचीन मूर्तिको पहिचान नहीं सकेगा। यूरप-वाले आपसमें मारकाट करनेसे अत्यन्त हयरान हो जायंगे। इन लोगोंकी शक्ति इतनी अधिक क्षीण होजायगी कि संसारकी अन्यान्य जातियां इनका अधिक सम्मान या भय नहीं करेंगी। इस प्रकार जगतमें नवीन शक्ति-पुंजका समावेश होगा। विश्वका भारकेन्द्र किसी प्रकारभी वर्त्तमान अवस्था में नहीं रहेगा। बलवानोंकी शक्ति-क्षयके फलसे अपेक्षाकृत दुर्बल-जन-समाज-समूह जगतके कर्मक्षेत्रमें प्रकृत शक्तिशाली-जातिकी तरह विचरण करनेमें समर्थ होंगे। प्राचीन जातियां इनके उपर बलात्कार करना और आंख दिखाना वन्द करेंगी। इसी प्रकार संसारमें नये जातिका अभ्युदय होता है।
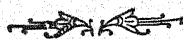
युद्धके समय रुपयेकी बाज़ार।

बंकमें जिन लोगोंका रुपया जमा था उनमेंसे सभी इस समय रुपया उठा लेनेके लिये व्यस्त हैं। हजारों मनुष्य पैरिस नगरके बंकोंके दरवाजों पर खड़े हैं। सोने चांदीका सिक्का अब खोजे नहीं मिलता। फ्रांसमें इस समय कागज़का नोट मौजूद है पर नोटका रुपया कोई देना पसन्द नहीं करता। बाज़ारमें दो चार आनेकी तरकारी खरीदनेमें भी बड़ी कठिनाई होती है। क्योंकि खरीदारोंके पास एक पैसा भी नहीं है। जो कुछ है सब दस पांच रुपयेका नोट!

बेलजियमकी भी यही अवस्था है। बंकसे रुपया उठालेने के लिये सभी व्यस्त हैं। परन्तु बंक सब लोगोंको रुपया कहांसे देगा? नोट देकरके ही सबको सन्तुष्ट कर रहा है।

अमरीकाके रुपयेकी बाज़ार भी बड़ी गड़बड़ होगई है। न्युयार्क के लेनदेनकी बाज़ारमें यूरपकी हुंडी बेचनेके लिये दलाल लोग झुक रहे हैं। इसतरह न्युयार्कसे सिक्का बाहर चला जायगा, उसके बदले थोडेसे कम्पनीका काग़ज़ मात्र पड़ा रह जायगा। मामला गड़बड़ देख कर न्युयार्कके व्यवसाय-धुरन्धरोंने 'स्टौक एक्सचेंज' बन्द कर दिया है। इसलिये कम्पनीका काग़ज़ बेंचकर अब रुपया न पानेसे बहुतसी कम्पनियोंका दिवाला निकल गया है।

लण्डनकी अवस्था भी इसी तरहकी है। बहुतसी कम्पनियां

देवालिया हो गई । कम्पनीका काग़ज़ बेंचकर दलाल लोग रुपया लेना चाहते हैं, परन्तु इतने लोग काग़ज़ बेचना चाहते हैं कि काग़ज़की बाज़ार बहुतही गिरगई है। इस भाव काग़ज़ बेचनेकी अपेक्षा न बेचकर देवालिया हो जानाही अच्छा है, ऐसा विचार बहुतसे कारबारियोंका है।

एक ओर बंकसे रुपया उठालेनेके लिये हज़ारों आदमी गिरे पड़ते हैं। दूसरी ओर नोटके बदले रुपया इकट्ठा करनेके लियेभी सभी हड़बड़ा रहे हैं। बंकके ऊपर रुपयेकी माँग इतनी अधिक होनेसे सब बंक शीघ्रही दिवाला मार बैठेंगे। फिर दलाल और कारबारी लोगोंके रुपया उधार न पानेसे देशका शिल्प और वाणिज्य घायल होजायगा।

वर्त्तमान युगमें लड़ाईके समय सबसे कठिन समस्या यही है। रुपयेका बाज़ार स्थिर न रहनेसे देश अल्प समयमें ही शिल्पहीन और व्यवसायहीन होजाता है। इसीसे पहिले रुपयेकी बाज़ारसे ही बाज़ारी गप और घबड़ाहटको दूर करना सब राष्ट्रवीरोंका कर्त्तव्य है। शत्रुपक्षवाले भी इस बातकी चेष्टा करते हैं कि कारबारोंमें, बंकोंमें और लेनदेनकी बाज़ार में गड़बड़ मचजाय। क्योंकि युद्धक्षेत्रमें मारकाटकी अपेक्षा देशके भीतरही शत्रुको पराजित करनेमें अधिक लाभ है। किसी उपायसे बंकोंका दिवाला निकलवादेनेसे समाजका सभी अंग विकल किया जासकता है। उसके कारण देशके धनी, महाजन, श्रमजीवी, वणिक, कृषक, इत्यादि सभी

श्रेणीके मनुष्य युद्धके विरुद्ध उठ खड़े होजाते हैं। इस अवस्था में घराऊ झगड़ा और भीतरी कष्ट इतना अधिक होजाता है कि उसको सम्हालना और साथही विदेशी शत्रुओंके साथ लड़ना असम्भव होजाता है । इसीलिये राष्ट्रवीर लोग युद्धके समय "रुपये की बाज़ार" के यथासम्भव शान्त रखनेकी चेष्टा करते हैं। वर्त्तमान समयमें भी अंग्रेज़, जर्मन, फ़रासीसी, अमरीकन, इत्यादि सभी अपने अपने रुपयोंके बाज़ारकी रक्षा करनेका उपाय सोचते हैं।

लायड जौर्जने पार्लामेण्ट में कहा "कि देखते हैं कि बाज़ारी गप में पड़कर हमारे देशके लोग नितान्त स्वदेश द्रोहिताका आचरण कर रहे हैं। सभी अपनी अपनी रोकड़ में नक़्द रुपया रखनेके लिये घवड़ा उठे हैं । असलमें ये लोग देशके घोर शत्रु हैं। क्योंकि शत्रुपक्षकी सेनामें सम्मिलित होकर देशका जितना अनिष्ट किया जासकता है उससे कहीं अधिक अनिष्ट इस उपायसे किया जा रहा है। मैं आप लोगोंको और स्वदेशवासियोंको साहस दिलाता हूं, भयका कोई कारण नहीं है । बंकोंसे रुपया उठालेनेके लिये व्यग्र न होइये।"

रुपया यदि बंकोंमें रहे तो सर्वसाधारणका दैनिक कार्य्य कैसे चल सकता है ? इस समस्याको पूर्ण करनेके लिये गवन्मेंटने एक पाउण्ड और दस शिलिंगका नोट निकाला है इससे लोग शान्त हैं।

इस समय विलायती बंकोंकी ओरसे पृथिवीके सभी स्थानों

से रुपया उधार लेनेके लिये सूदकी दर खूब बढ़ा दीगई है। दलाल लोग आमदनी और रफ्तनीका काग़ज़ ख़रीद फ़रोख्त नहीं कर सकते। इसके सिवा सबका दिवाला निकलनेसे बचानेके लिये क़ानून जारी किया गया है कि ऋण परिशोध के नियत दिनके एक महीने बादभी रुपया देनेसे वह स्वीकार किया जायगा। *इससे कारबारी लोग शान्तिके साथ अपना मामूली कारबार चलानेमें समर्थ होंगे।

रुपयेकी बाजार और बंकका कारबार भली प्रकार चलाने में असमर्थ होनेसे देशमें घोर अशान्ति उत्पन्न होती है, इसीलिये समर-विज्ञान-विशारदगण धन-विज्ञान[1] और शराफ़ी-विज्ञान[2] को भी युद्ध-विज्ञानका ही एक अंग समझते हैं। धन-विज्ञान व शराफ़ी विद्यामें पारदर्शी न होनेसे कोई राष्ट्रवीर भी समर-नीतिके परामर्शदाता नहीं होसकते। इस सम्बन्धमें लायड जौर्ज महाशयकी वक्तृत्यसे दो अंश नीचेदिये जाते हैं। *

---

१. Finance २. Commerce and Banking.

* "These decisions had been taken with a view to restoring the normal in business as quickly as possible, and they were confident that the bankers and traders would, with the patriotic assistance of the public, resume business, and there would be no necessity, which otherwise might arise, for closing mills and factories and throwing hundreds and thousands of people out of employment.

* "In this tremendous struggle, finance is going to play a great part, because it is one of the most formidable weapons in this exhausting war. Any one who for selfish motives of greed or excessive caution or cowardice, goes out of his way and attempts to withdraw sums of gold and appropriates them to his own use, let it be clearly understood that he is assisting them more effectively than if he were to take up arms for them."–LLOYD GEORGE."

इसी प्रकारके सम्मेलन, वक्तृता, आलोचना, और उपदेशोंका प्रचार होने लगा। इसी बीचमें कानूनके द्वारा चार पांच दिनोंके लिए विलायतके सब बंकोंका काम बन्द कर दिया गया। इसके कारण इन कई दिनोंमें कोईभी बंकोंसे रुपया या चेक इत्यादि कुछभी नहीं लासके।

सारांश यह कि विलायतमें एक ऐसा युग बीता जिसमें न बंकसे काम चलता था न सट्टेकी बाजारसे। विलायतके इतिहासमें कदाचित् इस प्रकारके चार पांच दिन और कभी नहीं आये थे।

खाद्य द्रव्य संग्रह ।

लड़ाई छिड़तेही जर्मनी, बेलजियम, और डेनमार्क ने क़ानून जारी किया कि देशसे कोईभी खाद्य द्रव्य विदेशोंको न भेजा जाये । अंग्रेज़ लोग भी कागज़ क़लमसे और पार्लमिण्ट सभामें प्रचार करने लगे कि कोई भय नहीं है। किसकी मजाल है कि हम लोगोंकी खुराक़ बन्द करसके। हम लोगोंकी जहाज़ें किस लिये हैं ?

सरकारतो आशावाणीका प्रचार करे ही गी, परन्तु जन-साधारणके मनमें तो प्रबोध जल्दी नहीं होता। लड़ाईकी बात सुनतेही स्त्री पुरुष सभी घबड़ा उठते हैं । सभी देशकी यही रीति है। जो लोग लड़नेके लिये युद्धक्षेत्रमें या जहाज़ोंपर चले गये वे लोग तो एक प्रकारसे निश्चिन्त होगये । स्वदेशी नाच गीत गाकर और मदिरा पीकर वे लोग तो सब दुर्भावना-ओंको भूल जाते हैं । उस समय उन्हें घर द्वार, स्त्री पुत्र, परिवार और देशकी चिन्ता नहीं रहती । किन्तु परिवारके जो लोग घरमें रहनेके लिये बाध्य हैं उनके चित्तमें असंख्य दुर्भावनायें आ जुटती हैं। प्राणका भय, लड़ाईमें हारकी डर, स्वाधीनता लोपका भय इत्यादि बड़ी बड़ी आशङ्कायें तो रहती ही हैं पर उसपर से भी दैनिक-जीवनयापन करनेमें वे शान्ति भोग नहीं कर सकते। चित्त सर्वदा अस्थिर और उद्विग्न रहता है। यही सबलोग त्रास उत्पन्न करके देशी कर्मवीरोंके कार्य्य

में रुकावट डाल देते हैं। इसलिये इन लोगोंको शान्त, सम्यत और सुस्थिर रखना राष्ट्रवीरोंका प्रधान कर्त्तव्य समझा जाता है । जहाज़ोंमें नाविकोंको भेजना, और युद्धक्षेत्रमें रसद भेजना जैसे आवश्यक हैं उसी प्रकार देशके रुपयेकी बाज़ार को ठगढ़ा रखना और देशी जन-साधारणका दिमाग़ ठीक रखनाभी समर-नीतिज्ञोंका आवश्यक कार्य्य है।

जिन जिन देशोंमें लड़ाई छिड़ी है उन सभी स्थानोंमें देखते हैं कि लोग खाद्य द्रव्य संग्रह करनेमें व्यस्त हैं। जिस प्रकार बंकसे रुपया उठालेनेकी एक धुन है उसी प्रकार अपने अपने घरोंमें दो चार महीनोंके लिये रसद एकतृत कर लेनेके लिये भी लोग प्राणपणसे चेष्टा कर रहे हैं। फ्रांन्स, जर्मनी, इंगलैगड, सभी जगह यह दृश्य दिखाई पड़ता है।

मूल्य बढ़नेके डरसे ही लोग पहिलेहीसे सस्तेमें खाद्य द्रव्य संग्रह करना चाहते हैं। इंगलैगडके भिन्न भिन्न ज़िलोंमें खाद्य द्रव्य संग्रह करनेकी धुन सबलोगों पर सवार है। यह धुन लगडन में भी कम नहीं है। दरिद्र गृहस्थोंकी तो बातही क्या है, मध्यवित्त और धनी लोगभी छः सात महीनोंके लिये ख़ोराक़ घर में रखनेकी चेष्टा कर रहे हैं।

गत कई दिनोंसे शाक सब्ज़ीकी बाजारोंमें, मांस मछलीकी दूकानोंमें, मोदीख़ाने और रोटी बिस्कुटके कारखानोंमें सर्वदा असंख्य ख़रीदार टूटे रहते हैं। किसी दूकानसे भी कोई चीज़ ख़रीदनेमें ख़रीदारोंको कमसे कम आध घंटेतक भीड़में ख़ड़े ही रहना पड़ता है । दूकानदार लोग सब किसीकी मांग

पूरी नहीं कर सकते । विशेष करके इन लोगोंके पास तारसे भी बहुतसी मांग आती हैं । कोई कोई दूकानोंमें तो इतनी मांग इकट्ठी होगई है कि दूकान एक सप्ताह तक बन्द करके केवल उन्हीं सभोंको भेजनाभी एक बहुत बड़ा काम है ।

दर बढ़ जानेके डरसे लोग ज़्यादा ज़्यादा फ़रमाइश देते हैं । परन्तु इसी बीचमें इतनी ज़्यादे फ़रमाइश दीगई हैं कि दूकानदारोंको लाचार होकर दाम बढ़ाना पड़ा है । तिसपर भी अब तक विलायतमें युद्धका कोई प्रभाव नहीं पहुंचा है ।

किसी किसी संवाद-पत्रके लोग रास्तोंमें घूम घूम कर दूकानदारोंके साथ आलोचना करते हैं । दूकानदार लोग कहते हैं, "बड़े खेदकी बात है कि देशके धनी लोगोंने ही गड़बड़ बढ़ा दी है। ये लोग कोई एक वर्षका माल, कोई छः महीनेकी रसद ख़रीद लेते हैं। ये लोग इतने स्वार्थपर हैं कि दरिद्र पड़ोसियोंकी अवस्था क्या होगी यह नहीं समझते । ग़रीब बेचारे रोज़ ख़रीदते हैं रोज़ खाते हैं, परन्तु बड़े आदमी लोग यदि दूकानोंकी सब चीजें ख़रीद लेंगे तो ग़रीब बेचारे खुराक कहांसे पावेंगे ? इस के अतिरिक्त धनी लोग सस्ती चीजें ख़रीदनेकी इच्छा करके गरीबोंको अधिक दाममें ख़रीदनेके लिये क्या बाध्य नहीं कर रहे हैं ?"

एक दूकानदारने कहा, "महाशय, मैं ऐसे बहुतसे परिवारको जानता हूं जो मामूली तरहसे दो रुपयेसे अधिकका सौदा नहीं ख़रीदते पर इस समय वही १०० रुपया लेकर सौदा ख़री-

इने निकलते हैं। यह क्या अन्याय नहीं है? कोई कोई दूकानदार ख़रीदारोंकी फ़रमाइशसे कम माल भेजते हैं जैसे १४ सेर मटर की जगह एक सेर देते हैं, दो बोरे आँटेकी फ़रमाइश पाकर उसका आठवां हिस्साही भेजते हैं।"

यह सब हालत देखकर ऐसा मालूम होता है मानों लण्डन नगर शत्रुओंसे घेर लिया गया है। खाद्य द्रव्य मानो अब मिलेहीगा नहीं। समय रहतेही जिससे जितनी होसके रसद इकट्ठी करले, यह धुन सबके सिरपर सवार है। इसी धुनके कारण सब ओर मूल्य बढ़ रहा है। एक दिन एक दूकानमें इसीलिये दंगा होगया। कोई पन्द्रह बीस स्त्रियां दूकानदारके ऊपर बिगड़ कर टेबुल पर सजाये हुए मालको इधर उधर रास्तेमें फेकने लगीं। पुलीसकी सहायतासे इन्हें हटा दिया गया परन्तु उस दिन फिर दूकान नहीं खुली। लण्डनके बहुतेरे महल्लोंमें इस प्रकारसे दूकानों पर आक्रमण बहुधा होजाता है।

लायड जौर्जने जिस प्रकार रुपयेवालोंको अनुरोध किया था कि 'महाशय आपलोग बंकसे रुपया उठा लेनेमें प्रवृत्त न हो इये, चेक और नोटसेही काम चलाइये', उसी प्रकार खाद्य द्रव्य संग्रहके बारेमेंभी बुद्धिमान नेता लोग और संवाद-पत्रोंके सम्पादकगण उपदेश देते हैं।

"कृपाकर शान्त रहिये। खाद्य पदार्थको बटोरकर रख लेनेसे बाज़ार बड़ी गरम होजायगी और ऐसा होनेसे सब पदार्थोंका भाव चढ़ जायगा जिससे निर्धन लोगोंका कष्ट और

भी बढ़ जायगा। अगर खाद्य पदार्थकी कमी हो जायगी (जिसकी कोई डर नहीं है) तो उसके वितरणका भार सर्कार ले लेगी। उस अवस्थामें जहां जहां खाद्य पदार्थ मिलेगा, चाहे दूकान्दारोंके पास वा गृहस्थोंके, सब पर सरकार अधिकार जमालेगी, ऐसा सोचते हुये जहां तक होसके कम खर्च करने की चेष्टा करना आवश्यक है पर घरमें गल्ला वा रुपया एकट्ठा करके रख लेना बड़ा अनुचित व देशके विरुध्य कार्य्यवाही है।"

इसके अतिरिक्त भोजनमें नफासत कम करनेके लिये सभी उपदेश देते हैं। कोई कोई कहते हैं—"नये चालका खाद्य खाकर जीवन धारण करनेमें अभ्यस्त हो। अण्डा, मांस, मक्खन, मछली, इत्यादि यदि न मिले तो क्या हर्ज है? हमारे देशमें जो सब वस्तुयें उत्पन्न होती हैं उसीसे उत्तम पुष्टिकर और स्वादिष्ट भोजन तैयार होसकता है।" इसके सिवाय देश के कृषकोंको आर्थिक सहायता देकर खेतीकी ओर प्रवृत्त करनेका उपाय होरहा है। जो सब ज़मीन परती पड़ी है या जो ज़मीन कम उपजाऊ समझ कर केवल घास मात्र उत्पन्न करनेके काममें लाई जाती है उन्हीं सब ज़मीनोंमें अब खेतीकी जायगी। खर्चके अनुसार कृषकों को चाहे लाभ न भी हो परन्तु सरकारकी "संरक्षण नीति" का सहारा मिलनेसे कृषकोंकी हानि नहीं होगी। यद्यपि अधिक खर्च करने पर गेहूं और दूसरे दूसरे अनाज उत्पन्न होंगे परन्तु सम्पूर्ण दुर्भिक्षकी अपेक्षा अधिक मूल्यमें खाद्य द्रव्य पाना क्या बुरा है?

गेहूंकी खेतीके बारेमें सरकार अधिक यत्न कर रही है । और कृषक लोगोंकी भी सहायता कररही है। इसी बीचमें राजकीय कृषि समितिके सम्पादक और परिचालक दोनों मिलकर देशके साधारण गृहस्थोंको उपदेश देते हैं, "देशके अनेक स्थानोंमें छोटी बड़ी बहुतसी भूमि खेतीके योग्य पड़ी हैं, उनसभोंका पड़ी रहना किसी अवस्थामें भी उचित नहीं है । समय जैसा दिखाई पड़ रहा है उससे यह अनुमान करना असम्भव है कि शीघ्रही हम लोगोंकी दशा कैसी होगी । परन्तु हम लोग सभी यदि यथाशक्ति कृषी कार्य्यमें लगजांय तो अभावके समय कुछ न कुछ उपाय करनेमें अवश्य समर्थ होंगे ऐसा हम लोगोंका विश्वास है । परती जमीनोंको जोतकर वर्तमान ऋतुके उपयोगी बीज अभीसे बो देना चाहिये, देर करनेसे भविष्यतमें हानि होनेकी सम्भावना है ।

इस ओर स्वयं प्रधानमंत्रीसे लेकर सम्वादपत्रोंके पाठक तक सभी, धनी लोगोंको चिताकर कह रहे हैं, "महाशयगण, आप लोग मछली, मांस और दूसरे दूसरे खाद्य द्रव्योंके कम व्यवहार करनेका अभ्यास कीजिये । यदि आप लोग मितव्ययी न होंगे तो बेचारे ग़रीब लोग खाद्य द्रव्य पावें हीं गे नहीं ।" धनवान ही क्यों बल्कि समाजके सभी श्रेणीके मनुष्योंसे मितव्ययी होनेके लिये आस्कुइथ साहब अनुरोध करते हैं * ।

---

* इसी सम्बन्धका टाइम्सपत्रमें से एक लेख नीचे उद्धृत किया जाता है—

"In the terrible visitation of war, I venture now to claim the most earnest personal attention of every one, rich and poor alike, to the cardinal importance of curtailing, to the utmost within reason, in each household and elsewhere, our usual demands on the food-supply of the kingdom. I suppose that there are few households in which some diminution, great or small, cannot be made without any prejudice to health or strength."

युद्धके समय श्रमजीवी-सम्प्रदाय ।

चार करोड़ मनुष्योंके देशमें लड़ाई छिड़नेसे रणक्षेत्र में कदाचित पांच छः लाख मनुष्योंसे अधिक नहीं जाते हैं । सेना विभागके कामोंमें देशके समस्त मनुष्योंको जाना नहीं पड़ता । परन्तु जो लोग घर बैठे रहते हैं उन लोगोंके भोजनका उपाय सहजमें होना आवश्यक है। धनी लोगोंको भोजन आच्छादनका कष्ट अधिक नहीं भोगना पड़ता क्योंकि उनके पास तो रुपया है, अधिक दाम देकरभी चीजें खरीदना उनके लिये सहज है। अत्यन्त आवश्यकता पड़ने पर विलासकी उच्च सामग्रियोंको छोड़नेमें वे बाध्य होसकते हैं। बस यही उन लोगोंके लिये असुविधा है । किन्तु साधारण लोग तो रोज़ पैदा करते हैं और रोज़ खाते हैं । सैकड़े पीछे अस्सी नव्वे मनुष्योंकी यही अवस्था है । चार करोड़ मनुष्योंमें कमसे कम साढ़े तीन करोड़ मनुष्योंको सिरका पसीना पैरोंमें गिराकर क्लर्की, खेती, और मजूरी करके अन्न जुटाना पड़ता है । लड़ाईके समय देशकी खेती, शिल्प और वाणिज्यके अवसन्न होजानेकी सम्भावना रहती है । ऐसी अवस्थामें इन लोगोंकी नौकरी, वेतन, और मज़दूरी सभी बन्द हो जासकती हैं, और विना खाये मरजानेकी आशङ्का बनी रहती है।

जब कि देशमें प्रति सैकड़े अस्सी नव्वे मनुष्य विना खाये मर रहे हों, ऐसी हालतमें शत्रुके साथ लड़ना क्या सम्भव है? एक सप्ताह के भीतरही घोर विप्लव और घराऊ मारकाट शुरू हो सकती है। इसीलिये रण-पण्डित लोग युद्धके लिये प्रस्तुत होनेके समय केवल जहाज़ोंके नाविकोंकी संख्या और सेनाके गोला बारूद इत्यादिका ही हिसाव जोड़कर चुप नहीं होजाते। उन लोगोंको देशके श्रम-जीवी, कृषि-जीवी और वणिक सम्प्रदायकी आर्थिक अवस्था विशेष रूपसे सहज, सरल और स्वाभाविक रखनेके लिये चेष्टा करनी पड़ती है। और इसीलिये शत्रुपक्ष वाले गुप्तचर रखकर देशके कृषि, शिल्प और वाणिज्यके भीतर बहुत तरहका गड़बड़ पैदा करनेमें प्रवृत्त होते हैं। शत्रुको भूखसे मार सकनेसे युद्धक्षेत्रमें पराजित करना बहुत सहज होजाता है। इसलिये कृषि, शिल्प और वाणिज्यकी रक्षा न कर सकते हुए युद्ध-क्षेत्रमें अवतीर्ण होना केवल लड़कपन है।

जर्मनी, रूस, इंगलैण्ड, फ्रान्स सभी अपने अपने मज़दूर सम्प्रदायको उनके चिर अभ्यस्त कामोंमें नियुक्त रखनेके लिये प्राण-पणसे चेष्टा करते हैं। कृषि, शिल्प और वाणिज्यका अनुष्ठान प्रत्येक देशमें भिन्न भिन्न प्रकारका है। इसीसे वर्त्तमान महाभारतके प्रतिद्वन्द्वी-गण अपने अपने अवस्थाके अनुसार व्यवस्था करते हैं।

अंग्रेजोंको सबसे पहिले विदेशोंसे खाद्य द्रव्य और शिल्प उपकरण मंगानेकी आवश्यकता पड़ती है। इन सब वस्तुओं

की आमदनी नियमित रूपसे न होनेसे एक तो सबको भूखे मरना होगा, दूसरे विना शिल्प उपकरणके सब कारखाने बन्द होजायंगे और इसलिये लाखों स्त्री, पुरुषोंको जवाब देना पड़ेगा अर्थात् लाखों मनुष्य बेकार होजायंगे।

पर युद्धके समय बाहरसे माल मंगाना भी तो कुछ सहज बात नहीं है। विदेशी व्यापारी लोग विना दाम पाये माल क्यों छोड़ेंगे? शान्तिके समय तो ज़बानी बातोंसे और कम्पनी के काग़ज़के विश्वास पर दुनियाका लेन-देन चलता है। पर इस समय तो नक्द रुपया चाहिये। नक्द रुपया न पानेसे कोई भी माल बेचना नहीं चाहेगा। अवश्य अंग्रेजोंके हाथ वर्त्तमान युद्धमें उधार माल बेचनेमें कोई देशवालेभी अधिक आपत्ति नहीं करते हैं। कम्पनीके काग़ज़, व हुण्डी इत्यादिके भरोसे ही माल छोड़ा जा रहा है। परन्तु माल विलायत तक पहुंचेगा कैसे?

बहुतसी मालकी जहाजें युद्धघोषणाके समय समुद्रमें थीं। दुश्मनोंकी लड़ाईकी जहाज़ उनके पीछे घूम रही थीं। डरके मारे वे निकटवर्त्ती उदासीन राष्ट्रोंके बन्दरोंमें घुस गईं। इस चालसे सैकड़ों माल लदी जहाजें उदासीन बन्दरोंमें अटक गईं। इस प्रकारसे आश्रय ग्रहण करने या अटक जानेका नाम 'इण्टर्नमेण्ट' है। वर्तमान युगके रणनीतिके अनुसार किसी उदासीन राज्यके बन्दरमें यदि कोई मालकी जहाज़ आश्रय ले तो उसपर शत्रुओंकी रणतरी आक्रमण नहीं कर सकती। जर्मन मालकी जहाज़, अंग्रेजी मालकी जहाज़ व अन्य देशोंकी जहाजें

इसी नियमके प्रभावसे अनेक उदासीन बन्दरोंमें आश्रय पाकर बचगई। परन्तु बच जाने ही से क्या लाभ? अपने देशमें तो शीघ्र नहीं आसकेंगी।

जर्मनीकी कोई कोई माली जहाज़ साहस करके समुद्रमें चलने लगीं। थोड़ेही घण्टोंमें वे सब अंग्रेज़ रण-पोतके आधीन होगई और 'प्राइज़ औव वार' के नामसे ब्रिटिश साम्राज्यके बन्दरों में भेजी जाने लगीं। कई एक गिरफ्तार की हुई जहाज़ कलकत्तेमें भी कैद करली गई।

समुद्र पथमें गिरफ्तार होनेका भय अंग्रेज़ जहाज़ कम्पनी बहुत अधिक कर रही हैं। कोई नई जहाज़ मंगाने या भेजनेमें सब बीमा कम्पनी बहुत ज्यादा बीमा मांगती हैं। १०००) रु० के मालकी बीमा कराई ८०) देना पड़ता है। बीमा कराई इतनी अधिक हो जानेसे जहाज़ोंमें माल भेजना एक प्रकार बन्द होजाय तो आश्चर्य ही क्या है? सचमुच जहाजी बीमेंका काम गत कई दिनों से बिलकुल मुलतवी होगया है। जहाज़खानोंमें, बन्दरगाहों में और डेकोंमें काम काज एक प्रकारसे बन्द होगया है। हज़ारों कुली व मज़्दूर इस समय बेकार होगये हैं। इसके सिवा लोहा लक्कड़ के बड़े बड़े कारखानोंको चलानेके लिये रुपया नहीं मिल रहा है। इसलिये भी असंख्य श्रमजीवी और गुमाश्ते बेकार होरहे हैं।

ऐसी अवस्थामें सरकारने दो नियम प्रचलित किये हैं। एक तो शिल्पी, महाजन और रोजगारियोंको रुपया उधार देनेके लिये बंकोंको क्षमता दीगई है। यदि कुछ नुकसान हो तो सरकार

ज़िम्मेवार रहेगी। सब नुकसान राज्य से भर दिया जायगा। दूसरे जहाज़ कम्पनीयोंको आतंकसे रक्षा करनेके लिये सरकारने स्वयं ज़िम्मेदारी लेली है। सब नुकसान सरकार भरदेगी इस शर्तपर बीमा विभाग खोला गया है। इसलिये अब मालकी जहाज़ निर्विघ्न समुद्रमें आ जा सकती हैं। अंग्रेज़ लोग अपने रण-तरीके शक्तिमें इतना विश्वास रखते हैं कि इतनी बड़ी ज़िम्मे-दारी लेनेमें भी राष्ट्र–मंत्रियोंने ज़रा भी आगा पीछा नहीं किया, यहां तक कि वे कहते हैं कि "यदि हमारी सैंकड़े पीछे ४० जहाज़ शत्रुओंके अधिकारमें होजाय तो भी कोई चिन्ता नहीं। बाकी जहाजोंमें ही खाद्य और शिल्प-उपकरण आसकेगा। शायद ऐसा होनेसे मूल्य तिगुना बढ़ जाय पर तौ भी क्या हानि है। देश वासियोंको खाना तो मिलेगा और कारखानोंका काम तो चलेगा। श्रमजीवी समाजको शान्त रख सकनेसे हमलोग निर्विघ्न शत्रुओंके साथ लड़सकेंगे। इसी युद्ध पर हमलोगोंका समस्त भविष्यत भाग्य निर्भर है। इसलिये रोज़गारके हिसाबसे लाभ हानि सोचनेका यह समय नहीं है।"

आमदनी रफ्तनी संरक्षित की गई। इस ओर स्वदेशी शिल्प और खेतीको भी सरकारी कानूनके अनुसार बैंकोंकी सहायता मिलने लगी। अतएव गुमाश्ते, कुली, मज़्दूर इत्यादिकी समस्या बहुत कुछ कम होगई है।

उस दिन 'डेलीन्यूज़' पत्रमें एक व्यक्तिने श्रम-जीवी समस्याकी विशद आलोचनाकी है। उनकी समझमें युद्धके समय दरिद्र

कुली, मज़्दूर और शिल्पियोंको काममें लगाये रखना कुछ विशेष कठिन नहीं है। चिन्ताशील राष्ट्र-वीरगण यदि पहिले ही से इसके लिये यत्न करते रहें तो जन-साधारणकी अवस्था किसी प्रकारसे भी शोचनीय नहीं होसकती। 'वेस्टमिनिस्टर गेज़ेट' लिखता है*

अर्थात् सब बैंक यदि साहस करके बड़े बड़े कारवारी लोगों को रुपया उधार देती रहें तो किसी प्रकारका गड़बड़ उपस्थित नहीं होसकता। उसके कारण बहुतसे नये लोगोंके लिये कर्मक्षेत्र बन सकेगा। यह सब शिल्प-उत्पन्न द्रव्य धीरे धीरे उदासीन देशोंमें भेजा जा सकता है। इस लिये देशकी आर्थिक अवस्था उन्नत होनेकी सम्भावना है। फिर इंगलैंडमें ऐसे बहुतसे शिल्प हैं जिसके लिये जर्मनी और अष्ट्रियासे उपकरण आते हैं। इसके कहने की आवश्यकता नहीं है कि वह सब शिल्प इस समय नहीं चल सकेंगे। इसके अतिरिक्त उपनिवेशोंसे भी खेतीसे उत्पन्न माल कदाचित् शीघ्र शीघ्र देशमें नहीं पहुंचेगा। इन सब उपकरणके ऊपर जो सब कारबार निर्भर हैं वे सब कुछ दिनों तक बन्द रहनेके लिये वाध्य होंगे।

---

*"If credit is secured, so that the flow of working capital continues, the first great step is taken, and the evil is at once reduced to a minimum. Industries, which can keep going, will get orders to replace foreign supplies, and gradually find new opportunities in colonial and neutral markets. Then the problem will be narrowed down to those industries which cannot replace their foreign trade or which are threatened with stoppage for lack of raw material supplied in normal times from enemy countries."

उसके फलसे असंख्य मनुष्य बेकार होजायंगे । इन सब बेकार मनुष्योंके लिये क्या किया जा सकता है ?

एक महाशय ने इस सम्बन्ध जो कहा है वह उन्हीं के शब्दों में नीचे उधृत है ।*

गवर्मेन्ट, म्युनिसिपेलटी, डिस्ट्रिक्टवोर्ड इत्यादि के अधीन अनेक प्रकार के सार्वजनिक कार्य्य खोलना आवश्यक है । इसमें सन्देह नहीं कि इनके द्वारा सर्वदा ही अनेक प्रकार के कारबार चला करते हैं । उनके सहायता से बहुतसे मनुष्यों का प्रतिपालन हुआ करता है । युद्धके समय यह सब कारबार पूर्ण शक्ति से चलाना उचित है, यहां तक कि और भी नयी नयी खेती, शिल्प, वाणिज्य, घर, सड़क, घाट, उद्यान, रेल इत्यादि के लिये चेष्टा करना आवश्यक है । राष्ट्रवीरोंको सदा ध्यान रखना पड़ता है कि—

लगातार बेकारीसे अच्छेसे अच्छे मनुष्य दरिद्र हो जाते हैं व जब घर एक वार तहस नहस हो जाता है तो उसका फिर से बनना असम्भव है । जातिको काममें लगाये रखनेसे उसकी हर प्रकार रक्षा होती है और इस प्रकार युद्धकी दुर्घटना व उसका बहुत कुछ प्रभाव रोका जा सकता है ।

कई एक व्यवसाई-कम्पनी ने अपने अपने कारबार का लाभ प्रकाश किया है । वर्ष में दो चार वार ऐसा करना रोज़गारियों

* "Some of them will be absorbed by the army, some by armament firms and war contractors, and a good many more, we trust, by useful public works."

की रीति है। किन्तु वर्त्तमान अवस्था में कम्पनी के कर्मचारी लोग कहते हैं-" हमलोगोंने हिस्सेदारों को लाभ वतला दिया। परन्तु युद्धका आतंक कम न होने से वे लोग प्राप्य रुपया नहीं पावेगें। इस रुपये को इस समय अपने यहां रखना आवश्यक है। क्योंकि बंकसे रुपया उधार न मिलनेसे इस लाभके रुपयेको खर्च करके कारबार चला सकेंगे। ऐसा न होनेसे दिवाला निकल जाने का भय है।"

परन्तु कम्पनियों की इस कार्य्य-प्रणालीके विरुद्ध तीव्र प्रतिवाद प्रत्येक समाचार पत्रमें निकल रहा है। असल बात यह है कि बहुतसे मध्यवित्त परिवार इस लाभके रुपयोंको पाकर विपत्तिके समय बहुतसे कष्टोंसे बच सकते हैं।

एक महाशय लिखते हैं कि—

"ज़रा उन लोगों का ख्याल कीजिये जिनकी पूंजी बहुत अल्प है। यदि इन लोगोंको ऐसे कठिन समय में मुनाफ़ेकी रकम न मिली तो इनके लिय तो एक प्रकार मरण ही हो जायगा"।

और एक सज्जन लिखते हैं कि—

"इस प्रकार मुनाफ़े की रकम का मिलना कितनोंके लिये ईश्वरी देनके बराबर इस समय होगी। बहुतोंने तो इसी मुनाफ़े की रकम पर इस समय अपना सर्वस्व निर्भर रखा होगा"।

कई एक कम्पनी स्वदेश सेवकका कार्य्य करके यथेष्ट यश उपार्जन कर रहीं हैं। युद्धके लिये श्रमजीवीगण स्वेच्छासेवक हो रहे हैं। यह देखकर महाजन लोग उनके परिवारके भरण

पोषणका भार ले रहे हैं। मज़दूर और शिल्पीगण इस व्यवस्थासे चौगुने उत्साहसे लड़ाईके लिये प्रस्तुत हो रहे हैं। उनके कारखाने के मालिकोंने उन्हें भरोसा दिया है कि "जब तुम लौटकर आवोगे तभी तुमलोगोंको काममें नियुक्त करनेकी चेष्टा की जायगी। इस बीचमें तुमलोगोंका वेतन तुम्हारे स्त्री पुत्रोंके निकट नियमित रूप से भेजा जायगा। इसलिये तुमलोग निश्चिन्त रहना।" कारबारी लोगोंने इस प्रकारसे अनेक हानियोंको अपने सिर पर ओढ़ लिया है। रेल कम्पनी, होटेल कम्पनी, तेलकी कल, ऊनकी कल और कपड़े की कल वाले, बड़े बड़े दूकानदार लोग, डाक्टरखाने के मालिक, ट्रैम कम्पनी इत्यादिके मालिक इंगलैण्डके सैकड़ों महाजन इस जातीय विपत्तिके समय श्रमजीवी समाजके बन्धु होकर सरकार तथा जनसाधारणके धन्यवादके भाजन हुए हैं। इस प्रकारके स्वार्थ त्यागका दृष्टान्त आजकल विलायती समाजमें असंख्यहै। इसीलिये श्रमजीवी समस्या यहां बहुत भीतिजनक नहीं है।
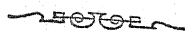
आमदनी, रफ़्तनी, और दलाली।

बैंकका कारबार और बदलेकी बाज़ारका लेनदेन बिना समझे वर्त्तमान जगत्का कायदा व कारख़ाना समझना असम्भव है। काग़ज़ का नोट, कम्पनी का काग़ज़, हुण्डी, चेक, 'बिल ओफ़ एक्सचेंज' इत्यादि प्रतिज्ञा पत्र और आदेश पत्रोंका आजकल करोड़ों सोने चांदीके सिक्कों के बदले व्यवहार होता है। और इन्हीं की सहायतासे दुनियाके एक प्रान्तसे दूसरे प्रान्त तकका व्यापार बहुत ही सहजमें चलता है। कृषि, शिल्प, वाणिज्य इत्यादि सभी व्यवसाय इन काग़ज़ोंकी सहायतासे चलते हैं। यूरपके बड़े बड़े कारबारमें नक्द रुपयोंका व्यवहार होताही नहीं। भारत वर्षमें भी यह क़ायदा खूब प्रचलित हो रहा है। जगत्के किसी स्थानमें भी अब इन कागज़ोंका प्रभाव रुका नहीं रह सकता।

इस काग़ज़के साम्राज्य प्रतिष्ठित होनेके फलसे हम दो बातें देखते हैं। एक तो यह कि दुनियामें कहीं भी यदि कारबारमें ज़रासी भी गड़बड़ी होजाय तो उसका प्रभाव सब स्थानों में पहुंच जाता है। दूसरे आमदनी रफ्तनी का परस्पर सम्बन्ध अर्थात् विनिमय बाज़ारके साथ रुपये की बाजार का घनिष्ठ सम्बन्ध है। रुपये की बाज़ारमें अर्थात् बंक मोहालमें किसी तरहकी गड़बड़ी होनेसे विनिमय बाजारमें अर्थात् दलाल महालमें

तुरन्त उसका असर पहुंचता है। और आमदनी रफ्तनीके सम्बन्धमें कोई घटना होनेसे बंक महालमें भी हो हल्ला मच जाता है। इसलिये आजकलका कृषि, शिल्प, वाणिज्य इत्यादिके किसी विभागमें सामान्य हलचल होनेसे भी उसका फल सब विभागोंमें दिखाई पड़ता है।

युद्धके समय इन सब तत्वों की ओर सदा ध्यान न रखने से राष्ट्रवीर गण शीघ्र पराजित हो जा सकते हैं। केवल लोहा लकड़, गोलागोली, जहाज़, तोप इत्यादिके ही ज्ञान से वर्त्तमान युगका युद्ध नहीं चलाया जा सकता। रुपयेकी बाज़ार और विनिमय बाज़ारके सम्बन्धमें गम्भीर ज्ञान न होनेसे रण पण्डित-गण नितान्त अकर्मण्य हो जाते हैं।

मानलीजिये कि कलकत्तेके "दे, दत्त" कम्पनीने अमरीकाके "ब्रायन" कम्पनीके यहाँ जहाज़ या रेल सम्बन्धी कल कवज़ा, लोहा लक्कड़ इत्यादिके लिये मांग भेजी है। इस मांगको 'इन्डेन्ट' कहते हैं। ब्रायन कम्पनीने इस मांग को पाकर अमरीकाके अनेक कारखानोंसे माल खरीदा। उसके बाद माल कलकत्ते भेजनेका प्रबन्ध करने लगे। इस प्रबन्धके करनेमें जहाज़ कम्पनी, बीमा कम्पनी, रेल कम्पनी इत्यादि अनेक कम्पनीयोंके सहायताकी आवश्यकता है। सब ठीक ठाक होजाने पर ब्रायन कम्पनी ने बीजक तैयार किया। मामूली तरह पर नीचे लिखे मधमें खर्च लिखा जाता है—

१ मालका दाम
२ घाटका (डौक या जेटी) किराया
३ जहाज़का किराया
४ रेलका किराया
५ समुद्र बीमाका महसूल
६ बीमाके लिये स्टाम्प खर्च
७ कुली भाड़ा
८ फुटकर खर्च
९ ब्रायन कम्पनीका कमीशन

इन नौ मधोमें जितना खर्च हुआ उन सबको मिलाकर एक मूल्य पत्र बनाया गया। इस बीजक या मूल्यपत्र का नाम है 'बिलऑफ एक्सचेंज'। ब्रायन कम्पनी 'दे दत्त' कम्पनीसे इस बीजक का रुपया पावेगी, इस बीजकके रुपये की मुद्दती हुण्डी 'ब्रायन' कम्पनी 'दे, दत्त' कम्पनी के उपर लिखेगी।

'बिल ऑफ एक्सचेंज' इस हिसाबसे, एक आदेश पत्र की तरह है। कागज़के नोट गवर्नमेन्ट या बंकके प्रतिज्ञापत्र हैं। उनमें लिखा रहता है कि गवर्नमेन्ट या बंक जन साधारण का इतना रुपया उधार लेती है, इसलिये इतना रुपया किसी समयमें लौटा देगी।

नोटके ऊपर गवमेंट या बंकके मालिक लिखते हैं कि–

"मैं नोट देखते ही इसे सकार दूंगा, या रुपैया देदूंगा" किन्तु 'बिलऔफ एक्सचेजं' के ऊपर लिखा रहता है—"हुण्डी बेची अमुक व्यक्ति के नाम" चेक वही में भी इसी तरह का आदेश लिखा जाता है, जैसे बनारस बंक में जमा किया हुआ रुपया पानेके लिये बंकको आदेश करना होगा, अर्थात् यहां यह समझाना होगा कि बंकने रुपया उधार लिया था। बीजक व हुण्डी

दोनोंहीके सहारे बाज़ारमें काम चलता है। अन्तर केवल यही है कि बीजक का लेखक धनी या विक्रेता या रफ्तनी करनेवाला है, व हुण्डी का लेखक ऋणी वा कर्ज़दार है।

खैर जोहो, 'ब्रायन कम्पनीने' बीजक तैयार कर डाला। इसके बाद वे इस पत्रको बेचनेके लिये या 'बेची' कराने की चेष्टामें घूमने लगे। पत्र न बेचनेसे रुपया कहाँसे आवेगा? और रुपया न मिलनेसे वे दूकानदारोंका दाम कहाँसे चुकावेंगे? भविष्यत्‌में नया कारबार कैसे चलावेंगे?

रुपयेकी खोजमें "ब्रायन" बंक महालमें आवेंगे। बंक महाल में स्वदेशी विदेशी अनेक बंकोंका कारबार चलता है। "ब्रायन" कलकत्तेके किसी बंकके न्यूयार्क स्थित शाखाके पास पहुंचे। मानलीजिये कि "ब्रायन" के साथ यदि इस शाखा बंकका कार-बार पहिले ही से चलता हो तो बिना आपत्तिके "ब्रायन" बीजक के अनुसार रुपया पाजायंगे। इस बीजक को बेचनेके बाद "ब्रायन" रुपया लेकर घर आवेंगे। उसके बाद न्यूयार्क की वह शाखा-बंक उस बीजक और उसमें लिखे हुए मालकी मालिक हो जायगी। क्योंकि बीजक को रुपया देकर ख़रीद ने से यह समझना चाहिये कि बंकने उन मालों को ही ख़रीद लिया है।

इस बीचमें माल कलकत्ते आपहुंचा। इसके दो एक सप्ताहके भीतर ही शाखा बंकने कलकत्ता बंकके पास "ब्रायन" का बीजक भेज दिया। बीजक पहुंचते ही कलकत्ता बंक

ने 'दे, दत्त' को समाचार भेजा। "दे, दत्त" ने रुपया देकर बीजक स्वीकार करलिया। इस कारण न्यूयार्क बंक या कलकत्ता की शाखा बंकने 'बिल औफ एक्सचेंज' और मालका हक (स्वत्त्व) 'दे, दत्त' को दे दिया।

अतएव यह देखनेमें आया कि "दे, दत्त" कम्पनी ने अमरीका के किसी कारखानेसे माल मंगाया। उस कारखानेसे इनका कोई कारबार नहीं था। "ब्रायन कम्पनी" ने एजेन्टके तौर पर माल खरीद दिया। किन्तु माल खरीदने के लिये कलकत्तेसे न्यूयार्क रुपया नहीं भेजा गया। "ब्रायन कम्पनी" ने न्यूयार्ककी बंक से रुपया पाया। यहाँ "दे, दत्त" कम्पनीने कलकत्ते की बंकोंमें रुपया जमाकर दिया। इसके बाद कलकत्ता बंक और न्यूयार्क बंक से समझौती बुझौती होती रहेगी। यदि दोनों बंककी मालिक एकही कम्पनी हो तब तो कोई गड़बड़ नहीं। किन्तु दोनों बंकों की मालिक यदि दो कम्पनियां हों तो कलकत्ता बंकसे एक दिन न एक दिन रुपया भेजना पड़ेगा। यह रुपया भेजने का नियम भी बड़ा विचित्र है।

प्रायः यह देखने में आता है कि "ब्रायन कम्पनी" खुद बङ्क में जाकर रुपया नहीं लाती। वह सब बीजक दलालोंके हाथ बेच डालती है। उसके बाद बङ्कके साथ दलालोंका कारबार चला करता है। आमदनी रफ्तनीका काम प्रत्येक देशमें इतना अधिक है कि दलालोंकी संख्या गणनातीत

है और प्रतिदिन असंख्य बीजक दलालोंके द्वारा खरीदा बेचा जाता है । परन्तु दलालोंको अन्तमें कारबार चलानेके लिये बङ्कों हीं पर निर्भर करना पड़ता है ।

युद्धके आरम्भमें नगरका दृश्य ।

युद्ध घोषणाके बाद ही प्रत्येक राष्ट्रने अपनी रेलगाड़ियोंको सामरिक नियमसे चलाना आरम्भ किया । सेनाविभागके अभाव मोचनके लिये जब जैसी आवश्यकता होगी तब तैसा किया जायगा यह विज्ञापन रेलवेके मालिकोंने जनसाधारणमें प्रचार कर दिया । जनसाधारणके आने जाने और व्यवसाय वाणिज्यकी ओर लक्ष्य नहीं किया गया । अष्ट्रिया, जर्मनी, और फ्रान्स इन तीनों ही देशोंने कठोर नियम जारी किये । डाकख़ाना, तारघर, और टेलीफ़ोनके लिये भी यही नियम प्रचलित हुआ । राष्ट्र कर्मचारियोंने इस विज्ञापनको सर्वत्र प्रचारित कर दिया कि जनसाधारणके व्यक्तिगत अभाव मोचनके लिये यदि यह सब व्यवहार न हो सके तो कोई आपत्ति नहीं कर सकेगा । सारांश यह कि एक देशसे दूसरे देशमें आने जानेका रास्ता और उपाय पूरी तरहसे नष्ट कर दिया गया ।

इंगलैण्डमें भी रेल, तार और डाकख़ाना इत्यादि सरकारी शासनके अधीन हो गये । यहांकी रेल कम्पनियोंने अपना अपना समय विभाग सरकारी परामर्शके अनुसार बदलना शुरू किया । जनसाधारणको आने जानेकी अत्यन्त कठिनाई होने लगी । किन्तु "आतुरे नियमो नास्ति" ।

जून, जुलाई, अगस्त और सितम्बर मासमें युरपवासी नाना

देशोंमें भ्रमण करनेके लिये निकलते हैं। जूलाई मासके शेष सप्ताहमें लड़ाई छिड़ी थी। इसीलिये फ्रान्स, जर्मनी, इटली, बेलजियम, सुइज़रलैण्ड इत्यादि देशोंके नगरों और गावोंमें अनेक अमरीकन, अंग्रेज़, जर्मन, फरासीसी, इत्यादि उस समय वास करते थे। इन लोगोंके ऊपर विना मेघका वज्रपात हुआ। अकस्मात् युद्ध भेरी बज उठी, चारों ओर सेनाका आना जाना शुरू हुआ। किसी नगर या गांवमें मोटर या रेल पानेका उपाय नहीं रहा। क्योंकि सभी सरकारके अधीन हो गया। इसलिये पर्य्यटक गण जहांके तहां रुक गये।

कोई कोई घूम फिर कर अनेक उपायोंसे स्वदेश लौट आनेमें समर्थ हुए हैं, पर अधिकांश लोग विदेशमें ही पड़े हैं। एक व्यक्ति युद्ध घोषणाके दिन जर्मनीमें थे, तबतक इंगलैण्ड के साथ जर्मनीकी लड़ाई शुरू नहीं हुई थी, सिर्फ़ वाक् युद्ध चल रहा था। फ्रांकफोर्ट नगर जर्मनीका एक प्रधान व्यवसाय केन्द्र है, यहाँके व्यवसायी होटल, कैफ़ै, और सभागृहोंमें सर्वियाके विरुद्ध जोश भरी बातें कह रहे थे। अष्ट्रियाके पक्ष-में और स्वदेशके विषयमें जोश भरे गीत जहां तहां सुनाई पड़ते थे। हाईडेलबर्ग विद्याका केन्द्र है, यहां भी इसी प्रकार उत्तेजना और आन्दोलन हो रहा था। कई दिनोंके बाद यह व्यक्ति धनियोंके एक विलास नगरमें गये, वहां एक सुन्दर प्रमोद कानन है। इस बाग़की जनतामें भी पर्य्यटकने अष्ट्रिया और जर्मनी-का जातीय संगीत सुना। इसके उपरान्त सेना केन्द्र कोब्लेनज़

नगरमें आकर भी वैसाही उन्माद दृश्य देखा। अष्ट्रिया और सर्वियासे लड़ाई छिड़ते ही जर्मनीके सभी केन्द्रोंमें युद्ध वासना प्रबल वेगसे जग उठी।

जर्मनीके अनेक स्थानोंमें इस प्रकारके जोशीले गीत सुनकर पर्य्यटक विस्मित हो गये। वह कहते हैं "मुझे जनताके एक गीतके भी सुननेका यदि मौका मिले तो मैं उनके मनकी बात जान जाऊं"। सामरिक गीत गाते हुए, जर्मन लोग रक्तमय दृश्यकी कल्पना करते थे। उनके पास एक अंग्रेज़ी समाचारपत्र था। उन्हें उसे पढ़ते देखकर होटेलके मैनेजरने पूछा "क्यों महाशय, इसमें आयर्लैण्डके स्वराज-आन्दोलनकी खबर कुछ है? मालूम होता है कि अंग्रेज़ लोग आयर्लैण्डके झगड़ेसे बड़े ही परेशान हैं। युरपके इस विराट व्यापारमें क्या ये लोग हस्तक्षेप कर सकेंगे? इस समय तो इंगलैण्डमें घरेलू लड़ाई चल रही है।"

एक व्यक्ति अष्ट्रियासे इटलीको जा रहे थे। यह कहते हैं कि अष्ट्रियाके विरुद्ध युद्ध घोषणाके बादहीसे ट्रियेष्ट नगरके स्लाव लोगोंको अष्ट्रियाके कर्मचारीगण बहुत दुःख देने लगे। अष्ट्रियाको सर्वदा सन्देह रहता है कि मौका पाते ही उसके विजित स्लाव प्रजागण सर्वियाका पक्ष अवलम्बन करेंगे।

वह अंग्रेज़ पर्य्यटक शीघ्रतासे इंगलैण्ड लौटनेकी चेष्टा करने लगा। कुक कम्पनीवालोंने इनसे कहा कि सुइज़रलैंडके रास्तेसे पैरिसतक जाना कुछ कठिन नहीं होगा, पर पासपोर्ट

सदा अपने साथ रखियेगा। पर्य्यटक मिलान नगरतक आ सके, वहां उनसे कहा गया कि रेलकी राह फ्रान्सका इटलीके साथ सम्बन्ध तोड़ दिया गया है। अनेक उपायसे यह फ्रान्समें पहुंचे। वहां इन्होंने फरासीसी सेनापतिसे मिलकर उन्हें समझा दिया कि "मैं अंग्रेज़ हूं, देशमें लौटकर स्वयंसेवकोंमें नाम लिखाऊंगा। उसके बाद तो फरासीसियोंके साथ मिलकर शत्रुओंके विरुद्ध युद्ध करूंगा"। इन बातोंको सुन कर फरासीसी कर्मचारियोंने इनको पैरिस जानेकी गाड़ी दिखादी। यहां पहुंचनेमें इन्हें साधारणसे चौगुना समय लगा। दस बारह बार गाड़ी बदल कर अन्तमें पैरिस पहुंचे।

इस समय चार सौ अंग्रेज़ सुइज़रलैंडके लोसाननगरमें रुक गये हैं। साथमें नगद रुपया न होने तथा पूंजी मद्धे सिर्फ चेक होनेके कारण उन्हें घोर कष्ट होरहा है। सुइज़रलैण्डमें अभी लड़ाई नहीं छिड़ी है पर आत्मरक्षाके लिये सैन्य एकत्रित होना प्रारम्भ होगया है।

फ्रान्सके सभी कर्मक्षेत्रोंमें सामरिक नियम प्रचलित होगया है। देशकी सब सेना जर्मन सीमाकी ओर भेजी जारही है। इस ओर रेल, सुरंग, पुल इत्यादि सेनाओंसे सुरक्षित किया गया है। गांवोंमें सिर्फ वृद्ध, बालक और स्त्रियां वास कर रही हैं, युवा और बलवान मनुष्यमात्र सेना विभागमें भरती किये गये हैं। फ्रान्सकी प्रत्येक राह और गलीकी रक्षा करनेके लिये विशेष प्रबन्ध किया गया है। सन्ध्याके बाद कोई नगरके बाहर

नहीं जासकता। बाहर जानेसे उसे सज़ा दी जाती है। इंगलैण्ड-की ख़बर फ्रांसवाले नहीं पाते और न फ्रान्सकी ख़बर इंगलैण्ड-वाले पाते हैं। यहांतक कि पैरिस नगरवासी भी युद्धकी कोई ख़बर नहीं पाते। भूमध्यसागरकी रणतरीके सम्बन्धमें और बेलजियमकी जर्मन सेनाके सम्बन्धमें अतिसामान्य समाचार प्राप्त होता है, सो भी उड़ता पुड़ता।

फ्रान्सके अनेक स्थानोंमें जर्मनोंके गुप्तचर नाना प्रकारसे घूम रहे हैं। उनको गिरफ्तार करनेके लिये अनेक चेष्टा होरही है, तौभी कोई फल नहीं होता है। ये लोग रेल पथ और सेतु पथ तोड़ डालनेके लिये जर्मन सेना नायकोंके द्वारा नियुक्त हैं। इसीलिये फ्रान्सकी गली, बाज़ार, होटल, दूकान, रेल, जहाज़ सभी स्थानोंमें सामरिक नियमसे शासन होरहा है।

वास्तवमें फ्रान्सके आबाल, वृद्ध, वनिता सभी युद्ध सम्बन्धी किसी न किसी काममें लग गये हैं। शिक्षक, लेखक, वकील, जोलाहे, लोहार, मिस्त्री, मज़्दूर, कृषक, गड़ेरिये, मल्लाह, मन्त्री, और शासनकर्त्ता इत्यादि सभी श्रेणीके सबल मनुष्योंने अस्त्र धारण किया है। स्त्रियां अस्पतालके कामोंमें लग गई हैं। युद्ध-में आहत सेनाओंकी सुश्रूषा करनेके लिये इनको शिक्षा दी जारही है। रेल, डाक, तार इत्यादि अनेक कार्य्यालयोंसे पुरुष युद्धक्षेत्रको चले गये हैं, उनके स्थानपर काम करनेके लिये हज़ारों स्त्रियां नियुक्त होगई हैं। इसीको कहते हैं कि सारादेश ल-ड़नेपर तुला है। इंगलैण्डमें भी यह सब हलचल कुछ कम नहीं है।

रेल, डाक, तार, टेलीफ़ोन इत्यादि सब सर्कारके अधीन होगया है। बाज़ार दरसे लेकर बङ्कोंकी व्यवस्था पर्य्यन्त सब ओर सरकारका ध्यान गया है। इंगलैण्ड, स्कौटलैण्ड, और आयर्लैण्डमें सर्वत्र देशरक्षा करनेके लिये उपाय होरहा है। नगर नगरमें लोग युद्ध समाचार पानेके लिये व्यस्त हैं। देशसेवा के लिये अनेक प्रकारका प्रस्ताव और आलोचना होरही है। दिनमें आठ दस बार करके कई समाचार पत्रोंका नया संस्करण निकल रहा है। युद्धकी असल ख़बर कुछ हो या न हो पर गप शप, लोमहर्षण काण्ड, असीम साहसकी कहानी इत्यादिसे समाचारपत्र परिपूर्ण रहता है। उसीको देशके शिक्षित अशिक्षित सभी बड़ी सावधानीसे पढ़ते हैं। इस ओर जर्मनोंने प्रायः आधा हिस्सा बेलजियमका दख़ल कर लिया। तौ भी यहांके अख़बारोंमें प्रकाशित हुआ कि बेलजियम सेना ख़ूब सफलता प्राप्त कर रही है।

एक दिन लन्दनकी एक राहमें कुछ आवाज़ हुई। बस, तुरन्त अफ़वाह उड़ने लगी कि आकाशयानसे बम गिरा। यार्कशायरके मछुओंने यह गप्प उड़ाई कि, उन लोगोंने समुद्रमें मछली पकड़ते समय अंग्रेज़ और जर्मनके लड़ाऊ जहाज़ोंके भीषण युद्धका शब्द सुना है। डोवरसे थोड़ी ही दूर टेम्सनदीके मुहानेके पास तोपें दग रही हैं, इत्यादि अनेक प्रकारकी गप्प और कहानीका प्रचार करके समाचारपत्रवाले रुपया पैदा करते हैं।

कई पत्रोंमें यह प्रकाश हुआ कि बेलजियमके लीज नगरमें जो लड़ाई हो रही है, उसका शब्द इंगलैण्डके पूर्वी किनारे तक पहुंचता है। इस समाचारके बारेमें एक दूसरा समाचार पत्र लिखता है कि—"यह असम्भव नहीं है, क्योंकि एक सौ वर्षके पहिले उसी जगह वाटर्लूका युद्ध हुआ था। उस समय भी इंगलैण्डके पूर्वी किनारोंके रहनेवालोंने युद्धका शब्द सुना था। आजकलकी तोपोंका शब्द पहिलेकी तोंपोंसे कहीं अधिक है।"

इसी बीचमें सरकारी समाचार विभाग स्थापित होगया। कर्मचारी गण कहने लगे कि—"हमलोग युद्धकी सच्ची खबर जनसाधारणको बतला देंगे। साधारण समाचारपत्रोंमें जो सब झूठी गप्प छपती है, उसपर विश्वास करनेकी आवश्यकता नहीं है। पर प्रतिदिन समाचार बतलाया जा सकेगा या नहीं इसमें सन्देह है, क्योंकि वास्तविक घटनाओंके जाननेका उपाय बहुत कम है।"

इस सरकारी विज्ञापनके भाष्यके तौरपर 'टाइम्स' समाचार-पत्रवाले लिखते हैं कि—"अवश्य ऐसी अनेक लड़ाइयां होंगी जिनका यथार्थ वृत्तान्त तुरन्त प्रकाशित नहीं किया जासकता। बन्धु बान्धव गण युद्ध क्षेत्रमें घायल और मृत व्यक्तियोंका नाम जाननेके लिये अत्यन्त उत्सुक रहते हैं। परन्तु जिन विभागोंमें बड़े बड़े सेनानायक और कप्तान लोग हैं वहांका यह समाचार प्रकाश करना कि वे कहां और किस अवस्थामें

हैं कदापि उचित नहीं है । इसके सिवाय कहांका कौन व्यक्ति कब घायल हुआ या मरा यह भी नहीं बतलाया जा सकता । क्योंकि यह बात बतलानेसे प्रधान प्रधान सेनानायकोंकी गति विधि और असली हालत प्रकाशित होजायगी। युद्ध क्षेत्रकी सम्पूर्ण अवस्थापर विना विचार किये जय पराजयकी घटनाका प्रचार करना असम्भव है । इसलिये देशवासीगण धैर्य्य धारण करें। जिनके ऊपर देशरक्षाका भार अर्पित किया गया है, उनकी अवस्था शीघ्र शीघ्र जाननेके लिये उत्कण्ठित न हों। यथा समय सब प्रकाशित की जायगी"।

लन्दनकी सड़क और बाज़ारोंमें आजकल नवीन दृश्य दिखाई पड़ता है। प्रायः सभी मनुष्योंके हृदयोंमें उद्वेग, चिन्ता, और गम्भीरता विद्यमान है । इनके सम्मुख एक प्रकाण्ड समस्या उपस्थित है। इसलिये पहिलेकी प्रसन्नता न जाने कहाँ चली गई है। समाचार-पत्रोंमें और वक्तृताओंमें सब यही कह रहे हैं—"यह कठिन समय है। जयलाभ किंवा मरण येही दो उपाय हैं।" "नेपोलियनके समयसे भी बढ़ कर यह आफ़त है।" इत्यादि बातोंके सुनने और आलोचना करनेसे प्रायः बहुत लोग घबड़ा उठे हैं। एक व्यक्ति 'डेलीन्यूज़' पत्रमें इस अवस्थाकी आलोचना करते हुए लिखते हैं—

"जिन लोगोंको संसारकी सब बातें नितान्त सत्य और जीवित सी प्रकट होती हैं उनकी बुद्धि केवल बच्चोंकी तरह है"

.........जब जीवन मरणका सामना मनुष्यको करना पड़ता है तब वह सौम्य और सरलताकी मूर्ति धारण करता है—मानो उसका पुनर्जन्म होता है।"

लन्दनके रास्तेमें निकलनेसे दो तरहके मनुष्य दिखाई पड़ते हैं। एक प्रकारके मनुष्य युद्ध सम्बन्धी कोई काम करते हुए, और दूसरे उनकी गति और अवस्थाकी ओर देखते हुए।

मानों सैनिकोंके चेहरेसे ही दर्शक गण कोई अपूर्व भाव समझ लेते हैं। घर द्वार, स्त्री, पुत्रको, त्याग कर युद्ध-क्षेत्रमें ये लोग जीवन दान करनेके लिये व्रती हो रहे हैं। इसलिये आज तो ये यथार्थ वीर हैं, वास्तविक देहत्यागी हैं। अबतक लोगोंने न जाने कितनी सेनाएँ देखी हैं, परन्तु इससे पूर्व उन्हें मालूम होता था कि सेनाएँ राष्ट्रकी पौशाक पहिरे हुए वस्तु मात्र हैं। अनेक प्रकारके पोशाकोंसे सजे हुए सिपाहियोंकी पर्वरिश राष्ट्र कर रहा है और व्यर्थ खर्च बढ़ा रहा है। किन्तु आज सामान्य खाकी कपड़ा पहिने हुए युवकोंको देखकर अंग्रेज़ नरनारी मात्र विचित्र आवेगसे भर जाते हैं क्योंकि ये ही तो यथार्थ स्वदेशसेवक हैं—ये ही तो रक्त बहाकर देशरक्षा करेंगे।

लन्दनके हर एक बगीचेमें आजकल फ़ौज तैयार हो रही है। इंगलैण्डमें अनिवार्य्य सैन्य-सेवा-प्रथा नहीं है अर्थात् यहाँ युवा अवस्थामें ज़बर्दस्ती सेनामें भरती करनेका नियम नहीं है। इसलिये बहुतसे अंग्रेज़ यह भी नहीं जानते कि युद्ध किसे कहते हैं। परन्तु इस महाभारतके लिये लाखों मनुष्योंको

युद्ध विद्या सिखाई जा रही है। जो लोग पहिले युद्ध विद्याका श्रीगणेश भी नहीं किये थे, वे अब आवश्यकता पड़ने पर निपुण सैनिक बन रहे हैं।

एक व्यक्तिने लन्दनकी इस वर्त्तमान अवस्थाका वर्णन ललित भाषामें किया है। उसका कुछ अंश नीचे अंगरेजीमें दिया जाता है। *

लन्दनके सरकारी इमारतोंके सामने सन्ध्याको हज़ारों मनुष्य इकट्ठे होते हैं। बकिंघम राजमहलके सामने, पार्ला-मेण्ट गृहके सम्मुख, ह्वाइट हाल गृहोंके सम्मुख, ट्राफलगर स्का-यरकी वीर मूर्तियोंके सम्मुख अगणित मनुष्य एकत्रित होते हैं। सभी बेकार हैं, सभीके हाथोंमें चार पांच समाचारपत्र हैं। कुछ भी होहल्ला नहीं है। परन्तु इन सब स्थानोंपर एकत्रित होनेसे इनको क्या सुख मिलता है? इसका उत्तर कुछ कठिन नहीं है। 'गवर्नमेण्ट', 'स्वराज्य' 'कान्सटीट्यूशन', 'डिमा

* London has become a city of drill, a camp, barrack yard: every-thing else rather seems irrelevant. It is a world in which the civilian has an uneasy feeling that he has lost his bearings. He is a little bewildered like a sheep in the traffic. He buys innumerable papers in the hope that they will enable him to understand it all. He has simply lost his way. He is merely filled with wonder. As yet he feels neither depressed nor boastful. Perhaps he buys a Union Jack from a hawker's appeal: "A penny, wear your English flag, a penny, all made of silk." He smiles refusal as another hawker offers him what he describes as "the Kaiser's memorial card," a humorous "in memoriam insult to the Kaiser, relating how he became so inflated with conceit that he bursts".

क्रसी' इत्यादि शब्दोंसे साधारण नर नारियोंका पेट नहीं भरता, इनसे उनका सन्तोष नहीं होता। ये लोग सरस और सजीव वस्तु चाहते हैं। इसी लिये राजमहलके सामने खड़े होनेसे इनका चित्त आवेग और उत्साहसे भर उठता है। समर भवनके सम्मुख खड़े होनेसे इनको स्वदेश रक्षाकी जीवित मूर्ति दिखाई पड़ती है। पार्लामेण्टके सम्मुख खड़े होनेसे स्वदेश भक्त व्यवस्थापक गणोंकी मूर्ति निकट दिखाई पड़ती है। 'ट्राफलगर स्क्वायर' में उपस्थित होनेसे प्राचीन कालके देश रक्षकों-की स्वर्गीय मूर्तिका दर्शन होता है। इसीलिये हज़ारों मनुष्य इन स्थानोंपर उपस्थित होते हैं। क्योंकि जन साधारण दार्शनिकतत्त्व नहीं चाहते, वे नीरस राष्ट्र विज्ञानके सिद्धान्त नहीं समझते, वे रक्त मांसका मनुष्य चाहते हैं। वे चाहते हैं ऐसी वस्तुका साथ जो स्पर्श की जा सके। संसारमें मनुष्य मात्रका यही स्वभाव है।

शत्रुपक्षके सामरिक और साधारण।

अबतक अष्ट्रिया और जर्मनीके विरुद्ध सर्विया, मौन्टिनिगरो, रूस, बेलजियम, फ्रान्स, और इंगलैण्ड, एक साथ मिलकर लड़ रहे हैं। एक ओर दो, दूसरी ओर छः हैं। दो शत्रुराज्योंको अन्तर्जातीय नियमकी परिभाषामें युयुत्सू (विलिगरेण्ट) कहते हैं। इस युद्धमण्डलके बाहरके सब राष्ट्र उदासीन कहे जाते हैं। इटली, हौलैण्ड, अमरीका, तुर्की, जापान और चीन इत्यादि राष्ट्र उदासीन कहे जाते हैं। *

प्रत्येक राज्यमें जगत्के अन्यान्य राज्योंके मनुष्य घूमने फिरनेके लिये अथवा किसी कार्य्यसे वास करते हैं। जर्मनी और अष्ट्रियामें अंग्रेज़, फरासीसी, रूसी, सर्व, इत्यादि सभी जातिके स्त्रीपुरुष वास करते हैं। उसी प्रकार रूस, फरान्स, इंगलैण्ड इत्यादि राष्ट्रोंमें भी जर्मन और अष्ट्रियन जातिके नरनारी वास करते हैं। लड़ाई छिड़ते ही जो लोग सेना विभागमें काम करनेके लिये बाध्य थे वे अपने अपने राज्योंमें चले गये, लन्दनसे फरासीसी, जर्मन, रूसी, अष्ट्रियन इत्यादि जातिके कितने मनुष्य चले गये, उनकी संख्या नहीं बताई जा सकती। इसी तरह पैरिस, बर्लिन, सेण्टपिटर्सबर्ग, इत्यादि नगरोंसे भी अन्यान्य राष्ट्रोंके सेना विभागके मनुष्य स्वदेशको लौटने लगे।

---

* यह लेख इटली और तुर्कीके लड़ाईमें सम्मिलित होनेके पहिले लिखा गया था।

परन्तु इंगलैण्डसे सभी जर्मन और अष्ट्रियन नहीं चले गये। बर्लिनसे भी सब फरासीसी, अंग्रेज़, रूसी और अन्यान्य शत्रुपक्षके स्त्री पुरुष नहीं चले गये। इनमेंसे कोई कोई दस दस, बारह बारह वर्षोंसे सपरिवार विदेशमें वास करते हैं यहीं इनकी जीविका चलती है। क्या एक दिनमें ये यहाँसे निकल जा सकते हैं। इसीलिये लड़ाई छिड़नेपर भी शत्रुपक्षके दस दस बारह बारह हज़ार मनुष्य प्रत्येक राष्ट्रमें रह गये हैं। बहुत लोग अपने अपने देशोंमें लौट जाना चाहते हैं, परन्तु जानेके लिये गाड़ी, जहाज़ या मोटर बिचारे कहांसे पावेंगे?

इंगलैण्ड और जर्मनीके बीच लड़ाई छिड़ी है, इसलिये क्या इंगलैण्डके समस्त मनुष्य जर्मनीके समस्त मनुष्योंको शत्रु समझ कर उनको पीड़ित कर सकते हैं या उनकी हत्या कर सकते हैं? दो राष्ट्रोंके बीच युद्ध छिड़ जानेपर किन किन पदार्थोंको और किन किन व्यक्तियोंको शत्रु समझना चाहिये इस सम्बन्धमें वर्त्तमान युगकी रणनीतिमें कई एक सहज नियम बने हैं। हां, उसके अनुसार कार्य्य करना न करना प्रत्येक राष्ट्रके अधिकारमें है।

प्रत्येक राष्ट्रके मनुष्य दो भागोंमें विभक्त हैं। जो लोग युद्ध, विग्रह, देशरक्षा, और परराष्ट्र आक्रमणके लिये नियुक्त हैं उन्हें सामरिक (कामबटेण्ट) मनुष्य कहते हैं। इसके सिवा बाकी सब मनुष्योंको जन साधारण (सिविलियन) कहते हैं। नयी रणनीतिके अनुसार युद्ध कालमें "सामरिक," "सामरिक," में परस्पर शक्ति परीक्षाका होना उचित है। एक-

पक्षके "सामरिक" यदि दूसरे पक्षके "साधारण मनुष्य" के साथ कोई असद् व्यवहार करें तो उनकी निन्दा होती है। उसी प्रकार यदि किसी पक्षके "साधारण" छिपकर दूसरे पक्षके सामरिकको तंग करें तो उनकी भी निन्दा होती है। दूसरे पक्षवाले ऐसे "साधारण" को भी "सामरिक" समझ कर उनके विरुद्ध अस्त्र धारण करते हैं। परन्तु मामूली तौरपर दोनों पक्षके "साधारण" जन युद्धके उपद्रवसे रक्षा पाया करते हैं।

इसीसे आज लन्दनमें प्रायः तीस हजार जर्मन वास करते हुए भी अंग्रेज़ोंके द्वारा कोई अत्याचार नहीं सहते हैं। इसी प्रकार वर्लिनमें भी अनेक अंग्रेज़ स्त्री पुरुष सुख और स्वच्छन्दतासे जीवन यापन कर रहे हैं। ये लोग शत्रुराष्ट्रके केन्द्र स्थलमें वास कर रहे हैं तौ भी शत्रुपक्षका एक अस्त्र भी इनके विरुद्ध नहीं उठता है।

शत्रुपक्षवालोंका "सामरिक" और "साधारण" विभागके सम्बन्धमें युरपमें भिन्न भिन्न समयमें भिन्न भिन्न नीति बनाई गई है। अन्तर्जातीय नियम विषयक प्रत्येक ग्रन्थमें इनका ऐतिहासिक विवरण और वर्तमान अवस्था लिखी गई है। भारतवर्षमें क्या नियम था यह संस्कृत साहित्यके अनेक स्थानोंमें वर्णन किया गया है। उन सबको संग्रह करनेसे हिन्दूराष्ट्र नीतिके अन्तर्जातीय विभागका विशद चित्र अङ्कित हो सकता है।

सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दीतक युरोपीय राष्ट्रमण्डल-

में "सामरिकगण" युद्ध कालमें "साधारण मनुष्य" के ऊपर अत्याचार करते थे। गत एक सौ वर्षोंके भीतर नवीन नीतिका प्रचार हुआ है। पर हां इसका यदि कोई उपयोग न करे तो ज़बर्दस्ती उपयोग करानेके लिये किसीमें क्षमता भी नहीं है।

लौरेन्सने अपने ग्रन्थमें "साधारण मनुष्यों" के विषयमें आधुनिक नीति इस प्रकार लिखी है।

(१) साधारण जनताको कोई शारीरिक कष्ट नहीं दे सकता। हां, यदि नियमित रीतिसे युद्धकी अवस्थामें उन्हें आकस्मिक चोट चपेट लगजाय तो कोई ज़िम्मेदार भी नहीं है। आक्रमण करनेवाले उन्हें उस अवस्थामें दण्ड दे सकते हैं जब वे उनके प्रति कोई दण्डनीय कार्य्य करें।

(२) युद्धमें जीते हुए नगर निवासियोंपर सैनिकोंको बलात्कार करनेका अधिकार नहीं है।

(३) जो लोग रोगियोंकी सेवा या देख भाल करते हैं उनकी रक्षा विशेष रूपसे करनी शत्रुओंका कर्तव्य है।

जहाँतक दिखाई पड़ता है, अबतक शत्रुपक्षवालोंने "साधारण मनुष्यों" के सम्बन्धकी नीतिका आदर किया है। हाँ अवश्य इसबीचमें जर्मनोंको असभ्य, निर्दय, वर्वर कहकर वर्णन किया गया है। फ्रान्स, रूस और इंगलैण्डके कागज़ोंमें प्रकाशित हुआ है कि जर्मनोंने अपने शत्रुपक्षके राष्ट्रदूतोंका अपमान करनेमें भी कसर नहीं छोड़ी है। बेलजियमके शान्त, शिष्ट गृहस्थ और कृषकोंकी हत्या जर्मनोंने की है। परन्तु जर्मन पत्रोंमें ठीक

इसकी उल्टी ख़बर प्रकाशित हुई है। वे लोग कहते हैं "बेलजियमके साधारण मनुष्य जर्मन सामरिक पुरुषोंको तरह तरहसे तंग करते थे, इसीलिये उनलोगोंको साधारण समझना असम्भव था।"

किन किन व्यक्तियोंको शत्रु या सामरिक समझा जायगा इसकी आलोचना "शत्रुओंके प्रति युद्धके नियम" नामक अध्यायमें प्रकाशित होती है। हाल, लारेन्स, ओपेनहाइम इत्यादिके प्रणीत ग्रन्थोंमें इसका विशद विवरण है। इसीप्रकार कौन कौन वस्तु या सामग्रीको शत्रुके दख़लके योग्य समझना उचित है इसकी आलोचना "शत्रुके वस्तु सम्बन्धी नियम" नामक अध्यायमें लिखा गया है।

"साधारण मनुष्यों" के लिये वर्त्तमान युगमें बहुत कुछ दया और शान्तिका ही बर्ताव होता है। किन्तु "साधारण" बन कर बहुतसे लोग जासूसका काम किया करते हैं। लन्दन, पैरिस, बर्लिन इत्यादि सभी राजधानियोंमें जासूसोंके पकड़नेकी धूम मची है। कभी कभी बहुतलोगोंको गुप्तचर समझकर दण्ड दिया जाता है। इंगलैण्डमें प्रायः प्रतिदिन दस बारह जर्मनोंको गिरफ्तार किया जाता है। कोई किलेके पास, कोई जलाशयोंके पास, पकड़े गये हैं; किसीके घरपर बम, किसीके बन्दूक और इंगलैण्डका नक़शा इत्यादि निकला है, इसलिये पकड़े गये हैं। अर्थात् इस प्रकार सन्देह जनक माल पाये जानेके कारण जर्मन मात्रको अंग्रेज़ लोग सन्देहकी दृष्टिसे देखने लगे हैं।

अब साधारण मनुष्योंके सम्बन्धकी नीतिके अनुसार कार्य्य करना कठिन हो जायगा। क्योंकि देशवासी सब यदि उत्तेजित हो उठेंगे तो शत्रुपक्षके साधारण मनुष्योंकी रक्षा करना असम्भव होजायगा।

इन्हीं सब कारणोंसे पार्लामेण्टने एक नया "विदेशी प्रतिबन्धक नियम" (एलियन्स रेस्ट्रिक्शन) नामका बनाया है। इस नियमके द्वारा केवल उन्हींको दण्ड दिया जायगा जो "साधारण विदेशी" देशको हानि पहुंचाते हैं।

इस ओर सभी राष्ट्र अपनी विदेशस्थित प्रजाकी खोज खबर लेनेकी चेष्टा करते हैं। शान्तिके समय सभी राष्ट्रोंमें प्रत्येक राष्ट्रके प्रतिनिधि रहा करते हैं, उनकी सहायतासे वे राष्ट्र अपनी अपनी प्रजाओंकी अवस्था जान सकते हैं। किन्तु जब युद्ध ठनता है तब शत्रुपक्षके प्रतिनिधिगण अपने अपने देशोंमें वापस चले जाते हैं। आजकल किसी राष्ट्रके दूतको विदा कर देना ही युद्ध घोषणाका प्रथम लक्षण है। वर्तमान समयमें जर्मनी और अष्ट्रियाके सिवाय अन्यान्य राष्ट्रोंके संग इंगलैण्डका पत्र व्यवहार चल रहा है। यद्यपि लड़ाईके कारण साधारण समाचार अधिक नहीं आते जाते तथापि इंगलैण्डवाले अपने प्रजावृन्दका समाचार निज दूतोंसे पाते हैं। इस सम्बन्धमें देशान्तर विभागने निम्नलिखित विज्ञापन निकाला है—

"जो बृटिश जातिके लोग यूरपके भिन्न भिन्न देशोंमें हैं उनको आर्थिक व अन्य प्रकारकी सहायता पहुँचानेका पूरा

यत्न किया जा रहा है। और इस बातका भी पूरा यत्न हो रहा है कि उनको रेल व जहाज़की पूरी सुविधा अवसर पड़नेपर दी जाय।

"किन्तु व्यक्तिविशेषके बारेमें रेल वा तार द्वारा हाल चाल दर्याफ्त करनेका या उनके वासस्थान जाननेका विशेष यत्न होना असम्भव है। व्यय देनेपर भी देशान्तर विभाग इस कार्यको नहीं कर सकता और न अन्यदेशोमें पड़े हुए लोगोंको धन भिजवानेका प्रबन्ध कर सकता है।

"सबको यह जान लेना चाहिये कि यूरपके भिन्न भिन्न देशोंसे तार व डांकका सम्बन्ध बड़ाही गड़बड़ होगया है। और जहांसे है भी वहांपर भी समाचार आने जानेमें बड़ा विलम्ब होता है।

"जर्मनीमें जो बृटिश प्रजा है उनसे सीधे सीधे खत किताबत तो नितान्त असम्भव है।"

यह तो हुआ शत्रु राष्ट्रोंके सामरिक और साधारण मनुष्यों-का सम्बन्ध। अब युद्ध मण्डलके बाहर उदासीन राष्ट्र और उनके प्रजावृन्दकी बातें पृथक् हैं। शत्रु पक्षके "साधारण मनुष्यों" से भी "उदासीनों" की अवस्था भिन्न है। वर्त्तमान समरमें अमरीकाका युक्त राष्ट्र विशेष प्रसिद्ध हुआ है। इसकी दो एक बातोंकी आलोचना करनेसेही उदासीन राष्ट्रोंकी नियमावली समझमें आजायगी।

युद्ध मण्डल और अमरीकाका युक्तराष्ट्र।

गरमीके दिनोंमें अमरीकाके असंख्य मनुष्य देश देशान्तरोंमें भ्रमण करनेके लिये निकलते हैं। इस वर्ष एक लाख मनुष्य युरोपमें आये थे। उनमेंसे बीस हज़ार मनुष्य लड़ाई छिड़नेके पहिले स्वदेशको लौट गये। परन्तु अस्सी हज़ार मनुष्य युरोपके अनेक स्थानोंमें अबतक पड़े हैं जिनका वहांसे शीघ्र छुटकारा होना कठिन है।

इंगलैण्डमें ही प्रायः बीस हज़ार अमरीकन आ[illegible] गये हैं। इंगलैण्डके साथ जर्मनीके युद्ध छिड़नेके दो एक दिन पहिले भी इनमेंसे पांच छः हज़ार मनुष्य लन्दनमें उपस्थित हुए थे। इनके साथ कपड़ालत्ता, सन्दूक बिछौना इत्यादि कुछ भी नहीं था, सब विदेशोंमें पड़ा है। गाड़ीमें इतनी अधिक भीड़ थी कि बीस मनुष्योंकी जगह पच्चीस मनुष्योंको बैठाना पड़ा। माल असबाब साथ लानेके लिये तिलभर भी जगह नहीं थी। नक्द रुपया भी किसीके पास नहीं है। पूंजी मद्धे केवल जेबमें चेक हैं। बहुतोंके पास चेक भी नहीं हैं। इसलिये इनके दुर्दशाकी सीमा नहीं।

पर्य्यटकगणोंमें अनेक प्रसिद्ध व्यापारी, महाजन, अध्यापक, साहुकार व शिल्पी हैं। इन सब लोगोंने मिलकर एक

"अमरीकन समिति" बना ली है। यह समिति अमरीकन लोगोंकी चेक भंजानेका उपाय करती है, विदेशोंसे माल असबाब मंगानेका प्रयत्न करती है, और जहांतक शीघ्र हो सकता है लोगोंको स्वदेश भेजनेका प्रबन्ध करती है। इस समितिके कामोंको देखनेसे बोध होता है कि इन लोगोंने एक छोटासा राष्ट्र गठन कर लिया है। दलबद्ध होकर काम करनेका स्वभाव अमरीका-वासियोंमें कुछ नया नहीं है। इसीसे बहुत ही थोड़े समयमें ख़ूब सिलसिलेके साथ इन विपदग्रस्त नरनारियोंकी सहायता हो रही है। यह समिति लन्दन स्थित युक्तराष्ट्रके राजदूत या दूत-विभागके सहयोगरूपसे कार्य्य कर रही है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक युक्तराष्ट्र-वासीकी अवस्था जाननेके लिये इंगलैण्ड, स्कौटलैण्ड और आयरलैण्डके बड़े बड़े होटलोंमें एक एक मनुष्य नियुक्त किया गया है।

इसी बीचमें युक्तराष्ट्रके सभापतिने कांग्रेससे पूछकर सरकारी जहाज़ और नक़द रुपया लन्दनके अपने दूतविभागमें भेजा है। एकसौ छब्बीस धनियोंने मिलकर एक नया जहाज़ खरीद लिया है जिसका दाम डेढ़ लाख रुपया था। इसमें चार सौ मनुष्य जा सकते हैं। इनके सिवा और बहुतसे जहाज़ अमरीकाकी ओर रवाने किये गये हैं। साधारणतः जितना किराया देना पड़ता था उससे तीसगुणा अधिक किराया देना पड़ता है, तौ भी जहाज़ भर भर कर लोग स्वदेश लौटे जारहे हैं। परन्तु जो लोग फ्रान्स, जर्मनी, सुइज़रलैण्ड, इटली इत्यादि

देशोंमें गये थे उनकी अवस्था बड़ी शोचनीय है । उनके लिये योग्य प्रबन्ध करनेमें अबभी बहुत समय लगेगा।

युक्तराष्ट्र जबतक वर्त्तमान युद्धमें 'उदासीन' रहेगा तबतक अंग्रेज़ों और जर्मनोंको नीचे लिखे नियमोंके अनुसार चलना पड़ेगा।

(१) युक्तराष्ट्रकी सीमाके भीतर युद्ध सम्बन्धी कोई काम किसीको करनेका अधिकार न होगा।

(२) समुद्रमें युक्तराष्ट्रके जो सब तार लगे हुए हैं उन्हें कोई काटने नहीं पावेगा । (किन्तु इस नियमका पालन करना बड़ा ही कठिन है क्योंकि युक्तराष्ट्र अंग्रेज़ोंके पक्षमें या जर्मनोंके पक्षमें अपना तार व्यवहार कर रहा है—इस बातका सन्देह शत्रुपक्षवालोंको सदा लगा रहेगा।)

(३) युक्तराष्ट्रकी चौहद्दीके भीतर कोई पक्षभी लड़ाईकी तैयारी इत्यादि नहीं कर सकेंगे।

(४) युक्तराष्ट्रकी भूमिपरसे कोई पक्षवाले भी सेना नहीं ले जा सकेंगे । उसके बन्दरगाहोंमें भी शत्रुपक्षका जहाज़ २४ घण्टेसे अधिक नहीं रह सकेगा । मृत और आहत व्यक्तियोंको ले जानेके लिये सेवा सुश्रूषा करनेवाले तथा चिकित्सकगण युक्तराष्ट्रसे होकर जा सकेंगे । परन्तु शत्रुपक्षवालोंकी सेनाके उदासीन राष्ट्रोंमें प्रवेश करते ही उसको निरस्त्र करनेका अधिकार उन्हें है। शत्रुसेनाकी इस अवस्थाका नाम नज़रबन्दी (इण्टर्नमेण्ट) है। इसी प्रकार २४ घंटेसे अधिक

बन्दरगाहमें रह जानेसे शत्रुपक्षके जहाज़ोंको निरस्त्र करनेका नियम है।

दूसरी ओर युक्तराष्ट्र तथा अन्य उदासीन राष्ट्रोंके लिये भी कर्त्तव्य और नियम बने हैं । जैसे—

(१) ये लोग जर्मन या अंग्रेज़ किसी पक्षवालोंको भी किसी प्रकारकी सामरिक सहायता नहीं दे सकेंगे। सैन्य-सहायता, आर्थिक-सहायता, अस्त्र-सहायता इत्यादि किसी प्रकारकी भी सहायता करना निषेध है। परन्तु उदासीन राष्ट्रोंके जन-साधारण यदि किसी पक्षकी कुछ सहायता करें तो उसके लिये उदासीन राष्ट्र ज़िम्मेदार नहीं होंगे। जैसे यदि युक्तराष्ट्रके जन-साधारण जर्मन राष्ट्रकी सहायता करें तो उन्हें बाधा देनेके लिये युक्तराष्ट्र बाध्य नहीं होगा। यदि अंग्रेज़ इस सहायताका समाचार पाकर रास्तेहीमें रुपया, मनुष्य, या अस्त्र शस्त्र गिरफ्तार क़र सकें तो ठीक है, नहीं तो युक्तराष्ट्रको ये दोषी नहीं ठहरा सकते।

(२) युक्तराष्ट्र, या अन्य उदासीन राष्ट्र, वर्त्तमान युद्धके समय किसी पक्षको अपनी चौहद्दीके भीतर युद्ध करने, युद्धके लिये तैयार होने, युद्धक्षेत्रसे अस्त्र भेजने, और अधिक समय-तक लड़ाऊ जहाज़ रखनेकी अनुमति नहीं दे सकेंगे। इन सब कामोंको बन्द करनेके लिये उन्हें यथासाध्य चेष्टा करनी पड़ेगी। इसके सिवा कोई पक्षवाले यदि इन उदासीन देशोंमें अपना समाचार-विभाग खोलें तो उसे भी बन्द करदेना होगा।

(३) यदि अंग्रेज़ या जर्मन युक्तराष्ट्र इत्यादि उदासीन राष्ट्रोंके जहाज़ोंकी खानातलाशी लेना चाहें तो उन्हें इसे सहना पड़ेगा चाहे किसी जहाज़के मुसाफ़िरोंको इससे कष्ट भी भोगना पड़े। शत्रुपक्षवाले इन जहाज़ोंको दोषी समझकर अपने बन्दरोंमें गिरफ्तार भी कर सकते हैं। इससे निर्दोष व्यवसायी और मुसाफ़िरोंकी हानि हो सकती है। उस समय उचित समझनेसे शत्रुपक्षवालोंको अन्तर्जातीय नियमके अनुसार अपराधी समझ सकते हैं। जैसे यदि अंग्रेज़ अमरीकाके जहाज़को विना दोष गिरफ्तार करें तो उन्हें क्षति पूर्ण करनी पड़ेगी। यदि क्षति पूर्ण न की जाय तो अमरीका और इंगलैंण्डके बीच लड़ाई छिड़ जाना असम्भव नहीं है।

युद्ध-मण्डलके साथ उदासीन राष्ट्रोंका क्या सम्बन्ध है सो कुछ कुछ समझमें आगया। किन्तु उदासीन राष्ट्रोंके जनसाधारणके साथ युद्ध मण्डलका सम्बन्ध कैसा है यह अभी नहीं कहा है। पहिले कहा जा चुका है कि युक्तराष्ट्र या अन्य उदासीन राष्ट्रोंके जनसाधारण यदि अंग्रेज़ों या जर्मनोंका पक्ष ग्रहण करें तो उसके लिये उनके राष्ट्र ज़िम्मेदार नहीं हैं। इसीलिये देख पड़ता है कि इटलीके कोई कोई समाचारपत्र अंग्रेज़ोंको गालियां दे रहे हैं। उसीतरह अमरीकाके समाचारपत्रोंके सम्पादकगण भी अपने अपने स्वार्थके अनुसार एक एक पक्षका अवलम्बन करते हैं। उसी प्रकार इंगलैण्डके समाचारपत्रभी जर्मनोंके विरुद्ध अमरीका और इटलीको उभाड़ रहे हैं। जर्मनके सम्पादकगण भी

अंग्रेज़ोंके विरुद्ध युक्तराष्ट्रवासियोंको उभाड़ रहे हैं। परन्तु इन सब सार्वजनिक आन्दोलनोंको बन्द करनेके लिये कोई उदासीन राष्ट्र बाध्य नहीं है। और न अंग्रेज और जर्मन प्रतिद्वन्दीगणभी इन उदासीन राष्ट्रोंको अपनी प्रजाका मुँह बन्द करानेके लिये बाध्य कर सकते हैं।

उदासीन राष्ट्रोंके जनसाधारणको और भी बहुतसी सुविधाएँ हैं। ये लोग दोनों पक्षोंके साथ कारोबार चला सकते हैं। यद्यपि कभी कभी ख़ानातलाशीका कष्ट और व्यर्थ हलाकानी भी उठानी पड़ती है। फिर भी यह कहा जा सकता है कि वर्त्तमान रणनीतिके अनुसार उदासीन राष्ट्रोंके जनसाधारणका व्यवसाय युद्ध मण्डलके द्वारा नष्ट नहीं हो सकता। संवत् १९६४ के अन्तर्जातीय पंचायतमें इस विषयके दो नियम इस प्रकार बनाये गये थे—

* (१) जहाज़ यदि उदासीन राष्ट्रोंका हो तो उसके भीतरका सब मालभी उदासीन ही कहा जाना चाहिये। यदि शत्रुपक्षके किसी व्यवसायीका मालभी उस जहाज़में हो तो उसे दूसरे पक्षवाले गिरफ्तार नहीं करसकेंगे। किन्तु इस जहाज़के भीतर यदि लड़ाईका सामान हो तो उसे गिरफ्तार कर सकते हैं।

(२) यदि शत्रुपक्षके किसी जहाज़के भीतर उदासीन राष्ट्रका माल हो तो ख़ानातलाशी लेनेवाले राष्ट्र जहाज़ गिरफ्तार कर-

---

* (1) Free ships, Free goods. The Neutral flag covers the enemy's goods (with the exception of contraband of war.)

(2) Neutral goods (with the exception of contraband of war) are not liable to capture under the enemy's flag.

सकेंगे परन्तु माल गिरफ्तार नहीं कर सकेंगे। किन्तु उदासीन राष्ट्रोंके मालके भीतर यदि लड़ाईका सामान हो तो वह गिरफ्तार किया जा सकेगा।

इसलिये मालूम होता है कि वर्त्तमान महासमरमें अमरीकाके युक्तराष्ट्रके व्यवसायियोंकी विशेष हानि न होगी। खानातलाशी और अनर्थक गिरफ्तारीके कारण भलेही कुछ समय नष्ट हो पर अधिक हानि नहीं होगी। परन्तु ये लोग यदि लड़ाईका सामान बेंचकर अंग्रेज़ोंके साथ व्यापार करें तो जर्मनीके जानलेनेपर इनकी हानि हो सकती है। अथवा जर्मन पक्षको यदि युक्तराष्ट्र-वाले लड़ाईका सामान भेजें तो वह अंग्रेज़ोंके द्वारा गिरफ्तार किया जा सकता है।

जर्मनीके लड़ाऊ और अंग्रेज़ोंके लड़ाऊ जहाज़ सदा सब समुद्रोंमें पहरा दे रहेहैं। युक्तराष्ट्र या अन्य उदासीन राष्ट्रोंके जहाज़ दिखाई पड़नेसे वे ठहराये जायँगे। कप्तान लोग कह सकते हैं कि "हमलोग उदासीन राष्ट्रके हैं यह तो हमारे निशानसे ज्ञात होता है"। किन्तु अंग्रेज़ या जर्मन केवल यही सुनकर सन्तुष्ट नहीं होंगे। ये लोग सम्पूर्ण जहाज़की तलाशी लेंगे। यदि लड़ाईका सामान होगा तो वह ज़ब्त करलिया जायगा, यदि न होगा तो जहाज़ निर्विघ्न नियत स्थानको जासकेगा। किन्तु लड़ाईका सामान छिपाकर भेजना बहुत कठिन नहीं है। उदासीन राष्ट्रोंके अनेक जहाज़ोंमें इस प्रकारके सामान भेजे जाते हैं और उनका पता कदाचित् किसी पक्षको भी नहीं लगता।

इसलिये उदासीन राष्ट्रोंके जनसाधारण स्वाधीन रूपसे युद्ध-मण्डलके किसी पक्षका अवलम्बन कर सकते हैं। केवल उदासीन राष्ट्रोंको स्वयं सम्मिलित न होना चाहिये। इनकी प्रजा भले ही जो चाहे करसकती है। उसको कोई बाधा नहीं दे सकता।

इंगलैंडमें स्वदेश-रक्षाका आन्दोलन ।

युद्ध प्रारम्भ होते ही इंगलैंगड और आयलैंगडमें सर्वत्र स्वदेश-सेवाकी तैयारी होने लगी। विलायतके प्रत्येक पत्रमें प्रतिदिन तीस चालीस छोटे बड़े प्रेरित पत्र छपने लगे। सम्पादक गण भी नाना प्रबन्धोंमें समाज सेवाका उपाय बतलाने लगे। नेपोलियनके आतंककी अपेक्षा जर्मन विभीषिकाने अंग्रेज़ समाजपर प्रबल रूपसे आक्रमण किया है। इसलिये प्रधान मंत्रीसे लेकर रास्तोंके मज़दूरतक सभी लोग देशवासियोंको उनका वर्त्तमान कर्त्तव्य समझा रहे हैं। धनियोंका कर्त्तव्य, निर्धनोंका कर्त्तव्य, व्यवसायियोंका कर्त्तव्य, कृषकोंका कर्त्तव्य, शिक्षकोंका कर्त्तव्य, छात्रोंका कर्त्तव्य, बालकोंका कर्त्तव्य, वृद्धोंका कर्त्तव्य, स्त्रियोंका कर्त्तव्य, दुकानदारोंका कर्त्तव्य, दर्ज़ियोंका कर्त्तव्य, खेलाड़ियोंका कर्त्तव्य, थियेटरवालोंका कर्त्तव्य इत्यादि नाना कर्त्तव्योंकी आलोचना सहस्रों प्रबन्धोंमें हो रही है।

आजकलके संवादपत्रोंमें विशेषतः तीन विषयोंकी रचना प्रकाशित होती है—(१) युद्ध—समाचार, (२) रुपयेका बाज़ार (३) स्वदेशसेवाका उपाय। स्वदेशसेवाके उपायपर इतने अधिक लोगोंने आलोचनाकी है कि उसका अनुमान करनेहीसे चकित होना पड़ता है। केवल प्रचार, व्याख्या और आलोचना

करके ही लोगोंने इतिश्री नहीं करदी है। साथ ही साथ सहस्रों सेवानुष्ठान भी प्रारम्भ करादिये गये हैं। गावोंमें, नगरोंमें, घरोंमें आबाल वृद्ध वनिता सभी यथाशक्ति देशके लिये अपने अपने कर्त्तव्योंका पालन कर रहेहैं। जलदान, अन्नदान, वस्त्रदान, औषधदान, अर्थदान और प्राणदान करनेके लिये सभी एक साथ प्रस्तुत दिखायी पड़ते हैं। देशके अशिक्षित और अर्द्ध-शिक्षित मनुष्योंको धीरज, साहस और आशा दिलानेके लिये एक साथ हज़ारों कर्म्मवीर और वक्ता उठ खड़े हुये हैं। इस विपुल सेवा और आन्दोलनको देखकर विस्मित और पुलकित होना पड़ता है। देखते हैं कि सेनाविभाग और रणतरीविभागमें काम करनाही स्वदेशसेवा नहीं है। बल्कि अन्यान्य कर्म-क्षेत्रोंमें भी कर्मवीरोंकी प्रचुर आवश्यकता है। देशमें नाना श्रेणीके अनेक कर्मवीर मनुष्योंके न रहनेसे केवल सैनिकविभाग द्वारा स्वदेश रक्षा करना असम्भव है।

विख्यात टाइम्स पत्रके सम्पादक प्रधानतः इन दस नियमोंको पालन करनेके लिये समस्त अंग्रेज़ोंसे अनुरोध करते हैं—

(१) दिमाग़ ठीक रक्खो। शान्तिके साथ सब काम काज करते जाओ। निरर्थक अपवाद या आन्दोलन पैदा न करो।

(२) दूसरेके लिये आजकल कुछ अधिक सोचो। पड़ोसी-को भोजन आच्छादन मिलता है या नहीं, युद्धके समय इसकी विशेष खोज करते रहना। साधारण अवस्थामें स्वदेश और

स्वसमाजके विषयमें जितना सोचते हैं उसकी अपेक्षा इस समय अधिक सोचो।

(३) अपने अपने कर्मक्षेत्रके भीतरही रहकर यथा सम्भव अपना अपना कर्त्तव्य करते जाओ। अनधिकार चर्चा या निरर्थक आलोचनामें समय न बिताओ। सब विषयोंमें संयत और मितव्ययी हो। खाने पहिरनेमें विलासकी मात्रा कम करदो।

(४) नीच और कापुरुषोंकी तरह जामा, जोड़ा, कपड़ा, इत्यादि अधिक ख़रीदकर घरमें मत रखना। ऐसा करनेसे देशमें शीघ्रही दुर्भिक्ष उपस्थित होगा और दरिद्रोंको घोर कष्ट उठाना पड़ेगा।

(५) नक्द़ रुपया घरमें एकट्ठा न कर रखना। रुपयेका हेर फेर बन्द मत करना। साधारण अवस्थामें जिस तरहसे लेन देन करते हो इस समय भी उसी प्रकार करते रहना।

(६) अपनी अवस्थासे दरिद्रोंकी आर्थिक अवस्थापर ध्यान सर्वदा अधिक रखना। बनिया, धोबी, दर्ज़ी, फेरीवाले, कोयलेवाले, मछलीवाले इत्यादि सब लोगोंका रुपया चुकादेना। चीज़ वस्तु उधार न खरीदना। ग़रीब लोगोंका हक़्क़वाजिब दाम शीघ्र चुकादेना।

(७) तुम्हारे अधीन यदि मज़्दूरे काम करते हों तो उनका वेतन नियमित रूपसे देतेजाना कुछ बाकी न रखना। कारबारुसे लोगोंको जवाब मत देना। कारबार बन्द न करना। यदि दिनमें आठ घण्टा काम चलानेलायक़ पूंजी न हो तो भी मज़्दूरोंको काममें

लगाये रहना । बहुत आवश्यकता पड़ने पर आठ घण्टेकी जगह तीन घंटा काम चलाना पर कारबार बन्द न करना ।

(८) तुम यदि किसी महाजनके कारखानेमें मज़्दूरी करते हो तो महाजनोंकी वर्तमान दुरवस्था समझकर काम करना । तुम अपना नियमित वेतन नहीं पा रहे हो यह देखकर अप्रसन्न न होना । सदा इस बातका ध्यान रखना कि तुम्हारी अपेक्षा सहस्रगुणा कष्ट युद्धक्षेत्रमें सैनिक लोग उठारहे हैं ।

(९) देशकी सेनाओंको उत्साहित रखना । उनकी प्रफुल्लता किसी प्रकार कम न होने पावे । सैनिकोंके सुख और स्वास्थ्य-के लिये देशमें बहुतसे कर्म्म हो रहे हैं । इन सब कार्य्योंमें सहायता करना ।

(१०) नाबालिग़ और अशिक्षित व्यक्तियोंमें युद्ध सम्बन्धी बातोंका प्रचार करना । युद्धका कारण और हम लोगोंकी वर्त्त-मान अवस्थाके सम्बन्धमें सबको शिक्षा देना ।

इन दसों अनुशासनोंको युद्धकालकी "नित्य-कर्म-पद्धति" समझ सकते हैं । सभी देशोंमें युद्धके समय ये नियम पालन करनेके योग्य हैं ।

पार्लमेंटके एक सभ्य कहते हैं-"देशमें बहुतसे वृद्ध मनुष्य हैं । ये लोग युद्धमें जानेके लिये स्वयंसेवक (वालंटीयर) नहीं हो सकेंगे । किन्तु यदि ये लोग सात आठ सप्ताहतक खेतोंमें काम करें तो देशका महत् उपकार हो । कृषकोंमेंसे बहुतसे लोग खेती छोड़कर युद्ध करने चले गयेहैं । किन्तु थोड़ेही दिनोंके

बाद अनाज काटनेका समय उपस्थित होगा। इन कामोंको करनेके लिये हमारे शिक्षित और वृद्धगण अग्रसर हों।"

एक धनाढ्य बालिकाने एक समाचार पत्रमें लिख भेजा कि—"युद्धक्षेत्रमें जो सब सैनिकगण जीवनदान करनेके लिये व्रती हुए हैं उनकी स्त्री, पुत्र, कन्या इत्यादिको अन्नवस्त्र कौन देगा? उनके लिये इसी समय समिति स्थापित की जाय। प्रत्येक महल्लेमें समितिकी शाखाओंका स्थापित होना आवश्यक है। इस समिति-के द्वारा चन्दा और अन्य प्रकारकी सहायता एकत्रित करनेकी चेष्टा की जाय। देशकी धनी स्त्रियां स्वदेशसेवाके कार्य्योंमें लग जायं। मैं अपना सर्वस्व दान करनेके लिये प्रस्तुत हूं। शारीरिक परिश्रम करनेमें भी मुझे किसी प्रकारकी आपत्ति नहीं है।"

एक दूसरी महिलाने लिखा है—"साधारण रूपसे हमारे नित्यके भोजनमें बहुतसे पदार्थ नष्ट हुआ करते हैं। इस फ़ज़ूलखर्चीको दूर करनेके लिये घरकी मालकिनोंको प्रयत्न करना चाहिये। रोटी, तरकारी, मक्खन, चीनी, नमक, इत्यादि सभी चीज़ोंको नापजोखकर व्यवहार करना उचित है। कोई चीज़ थालीमें पड़ी रहनेसे उसे यत्नसे उठाकर रखलेना उचित है। सामान्य और थोड़ी चीज़ोंको भी नष्ट न होने देना चाहिये। प्रत्येक घरकी मालकिनोंको चाहिये कि भण्डारकी ताली अपने पास रक्खें। अपनी देखभालमें प्रतिदिन खाद्य द्रव्य बाहर निकलवाया करें। ऐसा करनेसे फ़ज़ूल खर्ची कम हो सकेगी।"

एक सत्ताईस वर्षका युवक स्वयंसेवक होनेके लिये सेनाध्यक्षके पास गया । उसके शरीर और स्वास्थ्यकी परीक्षा करके अध्यक्षने कहा-"तुम्हारा दाँत ख़राब है। दाँतोंकी उन्नति न होनेसे सेनाविभागमें भर्त्ती नहीं हो सकोगे । " वह युवक इस बातसे अत्यन्त दुखी हुआ । समाचारपत्रोंमें लिखापढ़ी होने लगी । एक आदमीने यह परामर्श दिया कि-क्या गवर्नमेण्ट इस युवकके दाँतोंकी परीक्षा कराकर उसे आरोग्य नहीं करा सकती ? नये दाँतोंके बंधानेहीमें कितना खर्च पड़ेगा ? उसके बाद नियमित रूपसे दाँत मांजनेहीसे स्वास्थ्यरक्षा हो सकेगी । "

घोड़दौड़ बन्द करनेका मनसूबा ज्योंहीं सरकारकी ओर से स्थिर हुआ त्योंही अनेक समाचारपत्रोंमें प्रकाशित होने लगा कि-" इस दुःसमयमें अनेक मनुष्य अन्नाभावसे मर जायँगे। घोड़दौड़ यदि नियमित रूपसे होती रहेगी तो बहुतसे सहीस, घासवाले व घोड़सवार इत्यादिका कार्य्य बन्द नहीं होगा । सैकड़ों परिवारोंका भरणपोषण सहजहीमें हो सकेगा । इसलिये घोड़दौड़ बन्दकरना उचित नहीं है । "

एक सेनापति लिखते हैं-" सुनता हूं, देशकी स्त्रियाँ हमारे सैनिकोंके दुःख निवारणके लिये पोशाक तैयार कर रहीहैं । उनसे मेरा अनुरोध है कि सेनाओंके लिये टोपियोंकी अपेक्षा जूतों और गंजियोंकी अधिक आवश्यकता है। यह समझकर वे लोग काम करें तो अच्छा होगा । "

कोई कोई कहते हैं कि—"युद्धके समय ऐश आराम और खेल तमाशे बन्द करा देना अत्यन्त आवश्यक है। इस दुस्समयमें नाच रंग, थियेटर, घोड़दौड़, बायस्कोप, इत्यादि बन्द कर देना परम कर्त्तव्य है।" परन्तु बुद्धिमानोंका अधिकतर मत यह है कि आमोद, प्रमोद, नृत्यगीत इत्यादि उत्सवोंको बन्द करना कदापि, उचित नहीं है। ऐसा करनेसे अनेक मनुष्योंका कामकाज बन्द हो जायगा, वे खाने बिना मर जाँयगे। इसके सिवा चित्त प्रसन्न करनेका साधन न होनेसे देशवासी मात्र हाय हाय करके मर जाँयगे। दिन रात चौवीसों घण्टे लड़ाईकी चर्चा रहनेसे मश्तिश्क ख़राब होजायगा। दुश्चिन्ता और उद्वेग से शरीर अवसन्न होजायगा। बहुत लोग पागल हो जांय तो आश्चर्य्य नहीं। पर हाँ सब समय—अतिसर्वत्रवर्जयेत्—विशेषतः जातीय विपत्तिके समय अधिक विलास प्रियताको आश्रय देना कदापि उचित नहीं है, क्योंकि ऐसा करनेसे कठोरता और कर्त्तव्यकी बात भूल जाती है। इसलिये संयम और नियमके सहित आमोद प्रमोदमें सम्मिलित होना उचित है।"

केम्ब्रिज विश्वविद्यालयके एक अध्यापक लिखते हैं—"सुनते हैं कि देशके कोई कोई धनी गृहस्थ अपने नौकर मज़्दूरनियोंको जवाब दे रहे हैं। यह बड़े ही दुःखका विषय है। बिचारे इस विपत्तिके समयमें कहां जांयगे? गृहस्थ लोग कुछ दिनोंके लिये यदि कुछ कष्ट सहन करें तो नौकर चाकरोंके भरण पोषणमें अस-

मर्थ नहीं होंगे। यदि ये लोग मितव्ययी हो जांय तो नौकर चाकरोंके वेतनमें जितना खर्च पड़ता है उसे एकही सप्ताहमें बचा सकते हैं। तब फिर ग़रीब बेचारोंको बेकार क्यों किया जा रहा है?"

विलायतमें प्रायः बहुत ही कम मनुष्य युद्धविद्यामें निपुण हैं। इसलिये वर्त्तमान अवस्थामें बहुत लोग दुःख प्रकाश कर रहे हैं। ये लोग समरभूमिमें जाना चाहते हैं किन्तु सेना विभागमें इनको भरती नहीं किया जाता। इस लिये कुछ लोग प्रस्ताव करते हैं कि "हमारे यहां प्रवीण और नवीन सभी लोगोंकी यही अवस्था है। इसलिये उत्साही, कामकाजी और बलवान मनुष्योंकी सहायता यदि देशरक्षाके कामोंमें न ली जायगी तो बड़े दुःखका विषय होगा। बैरिस्टर, इंजिनियर, शिकारी, फुटबॉल-उस्ताद, क्रिकेट-उस्ताद, और अन्यान्य श्रेणीके लोगोंको पुल, रेल, तारघर, तालाब, पानीकी कल, मालगुदाम, इत्यादि रक्षा करनेके लिये क्या नियुक्त नहीं किया जा सकता? कुछ लोगोंको साधारण क्लर्कोंके काममें भी लगाया जा सकता है।"

कोई कोई प्रवीण व्यक्ति कहते हैं—"बुअर युद्धके समय हमारे देशमें मृत, आहत और पीड़ित व्यक्तियों और उनके परिवारोंकी सेवाके लिये बहुतसी समितियां स्थापित हुई थीं। इसके अतिरिक्त देश रक्षाके लिये बहुतसे कार्य्यालय और मिशन भी स्थापित किये गये थे। किन्तु दुःखकी बात है कि उन सभोंकी

कार्य्यप्रणाली एक तरहकी नहीं थी। प्रत्येक समिति निज निज प्रणालीसे काम करती थीं। इस कारण कहीं तो दो दो बार सहायता पहुँच जाती थी और कहीं कहीं एकाबर भी सहायता नहीं पहुंचती थी। कोई कोई समितियाँ रुपयेकी कमीके कारण अधिक काम नहीं कर सकीं और किसी किसीके पास रुपया बच गया। कहीं तो कामका ही अभाव रहा और कहीं इतना अधिक कामका बोझ आपड़ा कि उसे संभालना कठिन हो गया। इसलिये वर्त्तमान अवस्थामें प्रयत्न करना चाहिये कि सिलसिलेके साथ काम हो। इस समय देशके चारों ओरसे जिस प्रकार सेवा प्रवृत्ति उमड़ रही है उसका यथोचित उपयोग करनेके लिये बुद्धिमान् और कर्मवीरोंकी आवश्यकता है। जो लोग पहिले नाना प्रकारके सेवा समितियोंमें काम कर चुके हैं उन्हींको इसका भार उठाना उचित है। शासन विभागके कामोंमें विशेष ज्ञान और अभ्यास न होनेसे इस विराट सेवा कार्य्यको सुचारु रूपसे चलाना असम्भव है।

एक विद्यालयकी पाठिका कहती हैं-"गरमीकी छुट्टीके बाद स्कूलोंके खुलनेपर साधारण लिखना पढ़ना वन्दकर देना उचित है। उसके वदले युद्ध सम्बन्धी अनेक विषयोंकी शिक्षा बालक बालिकाओंको देना आवश्यक है। बालिकाओंको शुश्रूषा, स्वास्थ्य विज्ञान, रन्धन कार्य्य, पुलिन्दा बाँधना इत्यादि सिखलाया जासकता है। बालकोंको तम्बू बनाना, रोगियोंको ढोना, साइकिल चढ़ना इत्यादि सिखाया जाय। तैरना दोनोंहीको सिखाना आवश्यक है।"

बहुतसी स्त्रियोंके मत नीचे लिखे जाते हैं—ट्रैमवे, रेलवे, मोटरकार इत्यादि चलानेकी शिक्षा हम लोगोंको देना अत्यन्त आवश्यक हैं। क्योंकि पुरुषोंके युद्धमें चले जानेपर ये सब काम हमीं लोगोंको करना पड़ेगा। इसके सिवा रेलवे सिग्नैलिंग, तारघरका काम, पोस्ट औफिसका काम, डाकियेका काम, इत्यादि भी स्त्रियोंको सीखना परम आवश्यक है। विशेषतः सैनिकोंके लिये जूता, मोज़ा, गंजी, पतलून, टोपी इत्यादि तैयार करके बड़े बड़े दुकानोंमें भेजनेकी चेष्टा करना भी आवश्यक है।

विलायतकी स्त्रियोंने मिलकर एक बहुत बड़ा सिलाई परिषत् स्थापित किया है। यह काम कुछ नया नहीं है, इंगलैण्ड स्कौटलैण्ड, और आयरलैण्डके नाना स्थानोंमें इसकी अनेक शाखायें हैं। महारानी स्वयं इसकी पृष्ठपोषक हैं। अभी हालहीमें उन्होंने सिलाई परिषत्के प्रत्येक शाखा समितियोंके सभापतियों-के निकट निवेदन किया है—"हमलोग यदि जल्दी जल्दी बहुतसा पोशाक तैयार कर सकें तो अच्छा हो। देर होनेसे हानि होगी। सैनिक, नाविक, वॉलण्टियर और उनके स्त्री, पुत्र और कन्यायों के लिये प्रयोजनी पोशाकें तैयार करना आवश्यक है। इसलिये अपने अपने समितिके सभ्यगणोंको उत्साहित कीजिये। फला-लैनकी कमीज़, मोज़ा, गरमगंजी, पायजामा इत्यादि नाना प्रकारकी वस्तुओंकी आवश्यकता है।"

अनेक धनियोंकी कन्यायें स्वेच्छासेवकोंके कार्य्यमें नियुक्त हो रहीं हैं, यह देखकर एक व्यक्तिने लिखा है कि—" धनी कन्याओं

का स्वार्थ त्याग प्रशंसनीय है इसमें सन्देह नहीं, परन्तु इनके कारण दरिद्र श्रमजीवियोंकी स्त्री और कन्यायें काम नहीं पा रही हैं। आज कल अनगिनती स्त्रियां काम न मिलनेके कारण इधर उधर घूम रही हैं। इनके द्वारा चिट्ठी पत्री लिखनेका काम सिलाईका काम, छपाईका काम, क्लर्कीका काम, हिसाब रखनेका काम इत्यादि बहुत तरहके काम कराये जासकते हैं। धनी कन्यायें यदि स्वयं यह सब काम न करके आर्थिक सहायता करें तो इन बेकार स्त्रियोंको वेतन देकर कार्य्योंमें नियुक्त किया जासकता है।"

स्वयं परिश्रम करके उपकार करनेकी अपेक्षा, रुपया दान करनेसे अनेक अवसरों पर देशका अधिक लाभ होता है।

ठीक यही बातें 'टाइम्स' ने भी लिखा है—

युद्ध में सहायता देने के बारे में हमारे पाठकोंके यहांसे अनेक परामर्श आरहे हैं। इनमेंसे बहुतोंने इस ओर ध्यान दिलाया है कि अनजान लोगोंने जो दानके भावसे प्रेरित होकर काम करना प्रारम्भ किया है उससे एक प्रकार का बड़ा भय है। इसपर पूर्ण ध्यान देनेकी आवश्यकता है। यह ठीक है कि हमारे जल व स्थल सैनिकों, व उनके परिवारकी तथा जो लोग दुःखमें हैं उनकी भी आवश्यकतायें बड़ी सीधी सादी हैं पर साधारण वस्तुओंका बनाना सर्वदा सरलही नहीं हुआ करता फिर इनकामोंके लिये बहुतसी बड़ी बड़ी दूकानें भी हैं जिनका यही रोज़गार है। और इन्होंने अपनी दूकानें खोल रक्खी हैं और अपने यहांके काम करनेवालोंको जवाब

नहीं दे रहे हैं। इनके अतिरिक्त हज़ारों दस्तकार स्त्रियाँ बेकार होगई हैं और भविष्यमें होंगी इसलिये हमारा अपने पाठकोंसे यह अनुरोध है कि वे दानके भावसे देश सेवा यदि कुछ करना चाहते हैं तो धन देकर ग़रीबोंसे काम करावें और स्वयं काम न करें। इसीसे अधिक उपकार होगा।

महासमर के युद्धाभिलाषी ।

बींशशताब्दीके इस विराट युद्ध-मण्डलमें दुनियां-के छोटे बड़े सभी राष्ट्र शत्रु, मित्र या उदासीन रूपसे एक दूसरेसे सम्बद्ध हैं। दूर तक सोचनेसे यह भली प्रकार समझमें आसकता है कि जो लोग मित्रता बन्धनमें बन्धे हैं वे भी अपनाही स्वार्थ देखते हैं, दूसरे पक्षवालोंके साथ इनके शत्रुताका कारण एक ही प्रकारका नहीं है, बल्कि भिन्न भिन्न हैं। और जो लोग अब तक उदासीन हैं या कहते हैं कि उदासीन रहेंगे, वे भी जुदे जुदे कारणोंसे इस युद्धमण्डलके बाहर हैं। इस महाभारतमें जर्मनीका हुंकार, आ-ष्ट्रियाका दुःख, सर्वियाकी चिन्ता रूसकी गुर्राहट, इटलीकी स्वार्थपरता, अंग्रेज़ोंकी आत्मरक्षा, फ़रासीसियोंका रोदन, तुर्की-का मौक़ा, जापानकी चतुराई और अमरीकाकी पण्डित मूर्खता विशेष रूपसे ध्यानदेनेके विषय हैं। इस एकही महासमरमें भिन्न भिन्न इतनी शक्तियोंका साथ और संघर्षण हो रहा है कि यह नहीं कहा जासकता कि युद्धके क्रमविकाशके साथही साथ इन राष्ट्र मण्डलका भी विचित्र परिवर्त्तन होता रहेगा।

गत चालीस वर्षोंके युरोपीय इतिहासने आजकी इस घटनाके पथको प्रस्तुत किया है। उसके पहिले तुर्क-समस्या पूर्व युरोपके लिये प्रधान भयका विषय था। परन्तु १८६७ सालके

बादसे अष्टिया-समस्याही सचमुच युरोपमें आँधीकी तरह चल रहीहै। इस बीचमें जर्मनी विज्ञानबल और संरक्षण नितिके प्रभावसे जगतका भारकेन्द्र नये स्थानमें स्थापित करनेकी तैयारी कर रहा है। रूस भी जर्मनीकी तरह समृद्धिशाली बृटिश शक्तिका प्रवल विरोधी हो उठा था। किन्तु सन् १९६२ विक्रमीमें जापानके साथ समरमें उसकी जलशक्ति नष्ट हो गई—इसलिये अंग्रेज़ोंके लिये रूसका भय बहुत कुछ कम होगया। सन् १९६२ के बादसे युरोपके इतिहासमें अष्ट्रिया समस्या और अंग्रेज़ों के लिये जर्मन आतङ्क दिखाई पड़ता है। गत वालकन समरमें अष्ट्रिया समस्याकी ही मीमांसा हो रही थी। उसके कुछ दिन पहिले (सं० १९६८ वि० में) मरको और अलजिरियाके कारण जर्मन आतङ्ककी भयङ्कर मूर्ति दिखाई पड़ी थी। परन्तु घटना चक्रमें पड़कर वह अन्तर्ध्यान होगई। परन्तु इतने दिनोंके बाद जर्मन विभीषिका सचमुच दिखाई पड़ी जिसका बहाना वही अष्ट्रिया-समस्या थी। इसलिये युरोपकी प्रधान दो शक्ति वर्त्तमान समरमें मिल गई हैं। इन्हीं दोनोंके मिलनेसे इस महासमरकी तैयारी हुई है।

यह अष्ट्रिया समस्या क्या है? प्रथम इसकी भीतरी राष्ट्रीय फूट और अशान्ति, द्वितीय भूमध्यसागर और कृष्णासागर की ओर इसकी युद्ध यात्रा, तृतीय रूसके साथ इसका विरोध।

तुर्कीके स्थल राज्य और जलराज्य इत्यादिके हिस्सोंके ही कारण अष्ट्रिया और रूसमें शत्रुता है। परन्तु रूस एक ओर

नया बहाना पागया है। वह कहता है कि अष्ट्रिया रूसके स्वजातीय स्लाव लोगोंको सताना चाहता है, इसलिये उसके इस काममें वाधादेना हमारा धर्म है। इस प्रकार अष्ट्रिया समस्या स्लाव विभीषिकामें परिणत होगई है।

अब यह कहा जा सकता है कि इस विंशशताब्दीके कुरुक्षेत्रमें पूर्वी युरपको स्लाव विभीषिका, मध्ययुरपको जर्मनी विभीषिका और पाश्चात्य युरपको अंग्रेज़ोंकी प्रधानता, यह तीन शक्तियोंका खेल हो रहा है। दैव योगसे इस समय स्लाव विभीषिका और अंग्रेज़ोंकी प्रधानता एक होकर जर्मनी विभीषिकाके विरूद्ध खड़ी होगई हैं।

अष्ट्रिया और रूससे परस्पर प्रायःनित्यही संघर्षण हुआ करता है। अष्ट्रिया राष्ट्र रामन कैथलिक धर्मावलम्बी है और रूस ग्रीक मतानुयायी ईसाई है। अष्ट्रिया अपनी प्रजाओंको रोमन कैथलिक मतानुसार शिक्षित करना चाहता है। और यह नहीं चाहता कि उसके स्वजातीय अपना धर्म छोड़दें। धर्म और जातिके कारण रूस बहुत दिनोंसे झगड़ रहा है। पूर्वीय युरपमें स्लाव सभ्यताकी वृद्धि होगी या ट्युटैनिक सभ्यताकी वृद्धि होगी, यह कोई नहीं कह सकता। अष्ट्रियाके द्वारा विजित और उसके पड़ोसी सभी स्लाव ग्रीक मतानुयायी ईसाई हैं। ये लोग एक स्वाधीन युक्त-स्लाव-राष्ट्र गढ़ना चाहते हैं। बस इसी कामसे अष्ट्रियाका विरोध है और रूसकी मित्रता, अष्ट्रिया और रूसमें परस्पर शत्रुता बढ़नेका भी मुख्य यही कारण है।

अष्ट्रियाके भावी सम्राट-जिनकी हत्या अभी हुई है-पक्के रोमन कैथलिक और स्लावोंको सताने वाले राजपुरुष थे । इनकी हत्या करके स्लाव लोगोंने अपने परम शत्रुका नाश किया है। और इसीसे अष्ट्रियाने भी अपना अन्तिम शस्त्र ग्रहण किया है ।

आश्चर्य्यका विषय यह है कि ठीक जिस समय अष्ट्रिया समस्या कठिन अवस्थामें आ उपस्थित हुई, उसी समय जर्मनी विभीषिकाका भी भयङ्कर रूप दिखाई दिया है। १९४४ वि० से जर्मनी एक बहुत बड़ी नहर खोदकर वाल्टिक समुद्रके साथ उत्तर सागरको मिला रहा था। एक मास हुआ वह सम्पूर्ण होगई है। इसके कारण जर्मनीके जहाज़ अब बहुत ही कम समयमें एक समुद्रसे दूसरे समुद्रमें आ जा सकेंगे। यह नहर जब नहीं थी तो डेनमार्कके पासकी एक सकरी नहरसे आना जाना पड़ता था। बहुतसे स्वाधीन राष्ट्रोंके प्रभावमें रहना पड़ताथा। और समयभी बहुत लगताथा। अब यह सब कठिनाई दूर होगई है। जर्मनीके जहाज़ वेखटके चल सकते हैं। विस्मार्ककी भविष्यद्वाणीके अनुसार कील नहर के द्वारा जर्मनीकी रणतरी दूनी प्रतापशाली होजायगी । अनेक राष्ट्र-वीरोंको भी यही विश्वास था कि जब तक यह नहर सम्पूर्ण न होजायगी तब तक जर्मनी हुंकार न करेगा ।

इस नहरके सम्पूर्ण होनेके एक मासके भीतरही किसी युवक ने अष्ट्रियाके भावी सम्राटकी हत्या करके अष्ट्रिया समस्या प्रबल

करदी । जिसके कारण जर्मनीको भी अपनी शक्तिकी परीक्षा करनेका अवसर मिलगया ।

युद्ध मण्डलका नियम ।

युद्ध छिड़नेके पहिले इंगलैंडके लोग जर्मनीमें विदेशीय बन्धु समझकर सम्मानित होते थे। जर्मनलोगभी अंग्रेज़ समाजमें विदेशी मित्र कहे जाते थे। शान्तिके समय युरोपके राष्ट्र मराडलके भिन्न भिन्न देशवासियोंमें परस्पर लेन देन सहजहीमें हुआ करता है। जर्मनीके प्रति अंग्रेज़ोंका कर्त्तव्य और अंग्रेज़ोंके प्रति जर्मनीका कर्त्तव्य साधारण क़ानूनके अनुसार पालन किया जाता है। इसके अतिरिक्त जर्मनोंको इंगलैंडमें वास करनेसे कई एक अधिकार मिलते हैं। इंगलैंडके स्वदेशी लोगोंको जो सब अधिकार प्राप्त हैं इन जर्मन लोगोंको भी प्रायः वही सब अधि-कार प्राप्त हैं। इसी प्रकार जर्मनीमें जर्मन स्त्री पुरुषोंको जो सब अधिकार प्राप्त हैं विदेशी बन्धुओंको भी प्रायः वही अधिकार प्राप्त हैं। वास्तवमें कुछ दिन पहिले लेन देन, आचार व्यवहार, सौजन्य शिष्टाचार, शिल्प व्यवसाय, वाणिज्य, खेल तमाशा, चलना फिरना, आराम, व्यायाम, पर्य्यटन इत्यादि किसी विषय में भी इङ्गलैण्ड वासी अंग्रेज़ और जर्मनोंमें प्रभेद नहीं दिखाई पड़ता था। इसी प्रकार जर्मनीमें जर्मन और अंग्रेज़ नागरिकोंका फ़रक भी नहीं जाना जाता था। शान्तिके समय राष्ट्र मराडलमें स्वदेशी और विदेशी पार्थक्य प्रायः दिखाई नहीं पड़ता था।

किन्तु राष्ट्रोंमें परस्पर जब युद्ध छिड़ जाता है तब राष्ट्र मण्डलका रूप अन्य प्रकारका हो जाता है। युद्धके समय राष्ट्र मण्डलमें कुछ नियम क़ानून, रीति नीति, कर्त्तव्य अधिकार इत्यादि स्वीकृत होते हैं। एक दूसरेको चाहे जिस प्रकार हो सके ध्वंस नहीं कर सकता। युद्ध मण्डलके नियमको आङ्गल भाषा में "दी ला आफ़ वार" कहते हैं। इन नियमोंको शत्रु पक्षवाले यदि मानना चाहें तो अच्छा है, किन्तु यदि वे लोग इन नियमोंको तोड़कर कार्य्य करना चाहें तो उनको बाधा देने की सामर्थ्य किसको है? किसीको भी नहीं। किसी पक्षवाले यदि इन क़ानूनोंको न माने तो उनको दण्ड देना असम्भव है। यदि दूसरे पक्षवाले उनको परास्त कर सकें तभी इन कानूनोंको न माननेके लिये दण्ड दिया जा सकता है, नहीं तो नहीं। अनेक वार देखा गया है कि बिना अपना कुछ स्वार्थ देखे कोई राष्ट्र भी इन नियमोंका आदर नहीं किया चाहते। जैसे जर्मनी यदि देखे कि बिना इन नियमोंको तोड़े जयलाभ करना कठिन है तो वह पहिले ही इनसब नियमोंको तोड़नेके लिये तैयार हो जायगा। नियमोंको तोड़ती समय अंग्रेज़, फ़रासीसी, या युक्तराष्ट्रकी लाल आंखें देख कर नहीं डरेगा, जर्मनी यदि समझे कि इन सब नियमोंको तोड़कर वह समग्र जगत्के विरुद्ध अकेला लड़ सकेगा तो वह कुछ काग़ज़के टुकड़ोंपर लिखे हुए सन्धिपत्रों की दुहाई नहीं मानेगा। उसी प्रकार इंगलैंड यदि समझें कि इन नियमोंको न माननेसे उसके स्वदेश रक्षामें या साम्राज्य

रक्षामें या किसी प्रकार भी स्वार्थ रक्षामें व्याघात होगा तो वह उन नियमोंको मान कर चलनेके लिये सचेष्ट रहेगा। और युद्ध मण्डलके सभी राष्ट्रोंको उन सब नियमोंको माननेके लिये बाध्य करेगा। यदि ज़र्मनी अंग्रेजोंके अनुरोधको न माने तो कदाचित अंग्रेज़ युक्तराष्ट्र, जापान, इटली इत्यादि उदासीन राष्ट्रों से कहेंगे कि "जर्मनी राष्ट्रमण्डलके नियमोंको अस्वीकार करके असभ्यता और बर्बरताकी सीमा उल्लंघन कर रहा है। देखिये आप लोग इन सब बातोंको याद रखियेगा।" बस यहीं तक। दोनोंही पक्षवाले निज निज स्वार्थके अनुसार नियमोंको न माननेकी दुहाई दिया करते हैं।

वास्तवमें अन्तर्जातीय नियम सब, कागजोंमें लिखे हुए सन्धिपत्र मात्र हैं। जगत्‌के अनेक राष्ट्रोंने शान्तिके समय सम्मिलित होकर इन नियमोंको लिखा है। किन्तु युद्धके समय इन नियमोंकी दोहाई अधिक कार्य्यकारी नहीं होती। इसमें सन्देह नहीं कि छोटे छोटे राष्ट्रोंके ऊपर इन नियमोंका बोझ लाद देना कुछ असम्भव नहीं है। किन्तु इंगलैंड, जर्मनी, रूस इत्यादि बड़े बड़े राष्ट्रोंके बीच गड़बड़ मच जानेसे ये क़ानून बिचारे हवामें उड़ जाते हैं। ये लोग वर्तमान युद्ध क्षेत्रकी चरम आवश्यकताके अनुसार अपना अपना कर्त्तव्य स्थिर करते हैं। सभी जानते हैं कि युद्धमें जय पराजयके बाद जब सन्धि होगी तब देखा जायगा यही समझकर इस समय युद्ध मण्डलकी नियमावली-को अपने अपने स्वार्थके अनुसार सब काममें ला रहे हैं।

राष्ट्रोंमें परस्पर जब युद्ध ठनता है तब एक पक्षके सभी लोग दूसरे पक्षके सब लोगोंके शत्रु समझे जाते हैं । दोनोंही राष्ट्रोंमें परस्पर आना जाना, चिट्ठी पत्री, व्यापार वाणिज्य, आदान प्रदान सब बन्द होजाता है । दोनोंही जाति वालोंमें एक दूसरेसे किसी प्रकार सन्धि, परामर्श, या आलो-चना नहीं चल सकती। एक राष्ट्र अपर राष्ट्रके प्रत्येक नरनारियों-को अपने कानूनके बाहर समझते हैं। शान्तिके समय इंगलैंड वासी जर्मन लोग अंग्रेज़ी अदालतोंमें जो सब अधिकार भोग करते थे इस समय उसमेंसे उनको एक अधिकार भी प्राप्त नहीं हो सकता। यह कहा जासकता है कि कानूनका सम्बन्ध युद्ध कालमें दोनोंके बीच अणुमात्र भी नहीं है।

पर हां कई एक सहज नियमोंको सभी राष्ट्रवाले थोड़ा बहुत स्वीकार करते हैं। यह सब साधारणतः नीति परायण और सभ्य मानवके धर्मज्ञानके ऊपर निर्भर करते हैं । युद्धके कारण दुःख कष्ट यन्त्रणा जिसमें अधिक लोग न पावें इसी लिये इन नियमोंको मानते हुए लोग चलते हैं। नियमोंमेंसे बहुतसे नियम अब तक लिखे नहीं गये हैं। थोड़ेसे नियम अन्तर्जातिय बैठक में बैठकर केवल स्थिर और प्रणालीबद्ध किये गये हैं। अधिकतर इन सब नियमोंके सम्बन्धमें प्रत्येक राष्ट्र अपनी चिर अभ्यस्त प्रथाका अवलम्बन करते हैं।

युद्ध मण्डलके नीति संगत नियमोंको निम्नलिखित उपाय से श्रेणीबद्ध किया जासकता है—

(१) शत्रु पक्षवालोंके राष्ट्रके जो सब स्त्री पुरुष युद्धके कामोंमें नियुक्त नहीं हैं अथवा युद्धके लिये तैयार नहीं होरहे हैं उनकी रक्षा करना सबका कर्त्तव्य है । इनलोगोंको "नॉन कोमबिटेण्ट सीविलियन" अथवा 'साधारण' कहा जाता है ।

(२) रुग्ण, आहत और मृत सैनिक और नाविक लोगोंकी शुश्रूषा, सुखविधान और सत्कार करना उभय पक्षवालोंको आवश्यक है ।

(३) सरकारी घर द्वार, दुर्ग, जहाज़, तारघर, डाकघर, रेल, सड़क और अन्यान्य सम्पत्तिपर आक्रमण किया जा सकता है । परन्तु इनको छोड़कर जन साधारणका हाट, बाज़ार, घर, मन्दिर इत्यादि यथा सम्भव बचाकर आक्रमण कारियोंको चलना उचित है ।

(४) राष्ट्रोंके जिन सब हिस्सोंमें किला, तोप, गोला गोली, जहाज़, सेनानिवास इत्यादि नहीं है, अर्थात् जिन अंशोंमें 'साधारण' लोग वास करते हैं उन स्थानोंको घेरना या नाश करना उचित नहीं है ।

(५) युद्धके समय दंगा, हंगामा, मारकाट, लूट-पाट, इत्यादि विषयोंमें नितान्त निर्दय और पशु स्वभावोचित व्यवहार न करना उचित है ।

यह कहनेकी आवश्यकता नहीं है कि इन नियमोंका पालन होना शत्रुपक्षवालोंके दयार्द्र वृत्तिके ऊपर निर्भर करता है । किन्तु दयाकी मात्रा कितनी होगी यह युद्धक्षेत्रकी अवस्था

विना समझे कोई सेनापति या कप्तान नहीं कह सकते। इसके सिवा तुम हमारे आचरणको निर्दय और बर्बर कहते हो परन्तु कदाचित उसी आचरणको हम अत्यन्त नरम और सभ्यजनोचित कहते हैं। और युद्धके प्रयोजनके अनुसार जब जो अवश्य कर्त्तव्य समझा जायगा सेनापति लोग उस समय उसे करनेके लिये बाध्य हैं, क्योंकि ऐसा न करनेसे मूर्खताके कारण देशकी स्वाधीनता नष्ट हो सकती है। इसलिये युद्ध मण्डलमें दया प्रकाशक सब नियमोंको काममें लाना बड़ा कठिन है।

वर्त्तमान समरमें जर्मनीके आचरणकी निन्दा उसके शत्रुपक्षवालोंने करना शुरू किया है। परन्तु इस प्रकारकी निन्दा भर्त्सना और गाली-गलौज युद्धके समय परस्पर सभी लोग करते हैं। इस विषयमें सत्यका उद्धार किसी दिन भी नहीं होगा। आजकल अंग्रेज़ी सम्वादपत्रोंमें लड़ाई मण्डलकी नियमावलीकी आलोचना कुछ कुछ हो रही है। आलोचनाका स्वर दो श्रेणीके अन्तर्गत है। एक श्रेणीकी आलोचनामें दिखाई पड़ता है कि लेखक लोग यह समझानेकी चेष्टा करते हैं कि "जर्मनी युद्धमण्डलके किसी नियमको भी नहीं मानता—सभ्य-जगत्में जर्मनीको मुँह दिखाना भी असम्भव होगा। उसने बेलजियम और लक्समबर्गको दख़ल करके अन्तर्जातीय सन्धि तोड़ डाली है। "गोवेन" जहाज़को युद्धके समय तुर्कोंके हाथ बेंचकर युद्ध मण्डलके नियमको भंगकर दिया है—अमरीकाके

दूत विभागका अपमान करके उदासीन राष्ट्र सम्बन्धीय नियमों-को अस्वीकार किया है—और बेलजियमके "साधारण" जनों-के ऊपर अत्याचार करके वर्वरताको आश्रय दिया है। इस अवस्थामें अंग्रेज़ अन्तर्जातीय नियमोंका पालन क्यों करेंगे? ऐसी अवस्थामें उदासीन जहाज़ोंके जर्मन माल इत्यादिको गिर-फ्तार करलेना ही उचित है। १९१४ सालकी पंचायतमें स्थिर हुआ था कि जहाज़ यदि उदासीन राष्ट्रोंकी सम्पत्ति हो तो उसके भीतरका कोई माल भी गिरफ्तार नहीं किया जायगा। इसी नियमके अनुसार अंग्रेज़ोंके लड़ाऊ जहाज़ अमरीकाके जहाज़ोंके भीतरके जर्मनीके मालको गिरफ्तार नहीं करसकते। किन्तु इस नियमका आदर करना अंग्रेज़ोंके लिये अब उचित नहीं है। उदासीन जहाज़के जर्मन मालोंको दख़ल करके इंगलैण्ड जर्मनीको भूखों मारे तो जर्मनीकी युद्ध पिपासा शीघ्रही शान्त हो जायगी"।

"दूसरे प्रकारकी आलोचनासे यह समझमें आता है कि जर्मनी यदि इंगलैंडपर आक्रमण करे तो अंग्रेज़ोंके "साधा-रण" जन गण क्या रक्षा पावेंगे? साधारणतः शत्रु-पक्षीय-सैनिक केवल हमारी सेनाओंको नाश करनेके लिये अधि-कारी हैं। जर्मनोंके लिये यह अनुचित है कि हमारे साधारण जर्मन गृहस्थोंके ऊपर हाथ उठावें। इसके सिवा एक बात और है। लोग जब इंगलैंडके किसी किसी अंशको दख़ल कर बैठेंगे

और अन्य दूसरे दूसरे अंशोंमें लड़ाई जारी रहेगी तब ये लोग हमारे 'साधारण' मनुष्योंको जर्मनोंकी ओरसे लड़नेके लिये क्या बाध्य करेंगे ? जर्मनी यदि बर्बर है तो उसके लिये ऐसा करना भी कुछ असम्भव नहीं है। देखा चाहिये क्या होता है। अंग्रेज़ "साधारण" यदि जर्मन सेनाओंके साथ मिलकर अंग्रेज "सामरिक" गणोंके विरुद्ध लड़नेके लिये बाध्य हों तो दुर्दशा और हीनताकी सीमा नहीं रहेगी। जर्मनीके प्रतिनिधि विगत अन्तर्जातीय पंचायतमें इस व्यवहारके प्रतिकूल थे। किन्तु उनके रायमें अंग्रेज़ साधारणको अंग्रेज़ सामरिकगणोंकी गतिविधिके सम्बन्धमें सम्वाद देनेके लिये बाध्य किया जासकता है।"

आजकल लन्दन और इङ्गलिस्तानके नगर और बन्दरगाहोंमें एक नवीन आशंकाका कारण उपस्थित हुआ है। कुछ दिन पहिले अन्तर्जातीय राष्ट्रमण्डलकी पंचायत में निम्न लिखित नियम प्रचारित हुए थे—कि अरक्षित बन्दरगाह, नगर, ग्राम, निवासस्थान या अन्य प्रकारके गृहों पर "आक्रमण" शब्दके अन्तर्गत, विमान पर से भी किसी प्रकारकी हानि करना शामिल है। इस नियमके अनुसार जर्मनीके लड़ाऊ जहाज़, आकाशयान अथवा स्थल सेना इङ्गलिस्तानके साधारण गांव, शान्तगृह, अरक्षित बन्दर और नगर और दुर्गहीन शहरोंपर आक्रमण नहीं कर सकता। किन्तु दुर्गहीन या अरक्षित स्थान किसको कहते हैं? लन्दन नगरको ही लीजिये। नगरके चारो ओर

क़िला या दुर्ग प्राचीर या सामरिक उद्देश्य से कोई खाई नहीं है सही । परन्तु अस्त्र शस्त्र, तोप बन्दूक, जहाज़ इत्यादि का तो अभाव नहीं है । इसलिये लन्दनकी अवस्था बड़ीही शोचनीय है ऐसा समझ कर लन्दन विश्वविद्यालयके राष्ट्रविज्ञानाध्यापक ने "डेलीन्यूज़" में पत्र लिखा है ।

दुर्भिक्ष निवारणके लिये उद्योग।

युद्ध छिड़तेही मामूली शिल्प, वाणिज्य, दूकानदारी इत्यादि सब एकाएक बन्द होगई। असंख्य श्रमजीवी, शिल्पी, दूकानदार और मज़दूर बेकार होकर घूमने लगे। दूसरी ओर बड़े आदमी लोग अधिक अधिक वस्तुयें ख़रीद कर रखने लगे। इस कारण दूकानोंमें खाद्य सामग्रियोंका मूल्य बहुत बढ़ गया। तिसपरसे सेना विभाग, रणतरीविभाग, पुलिस विभाग और अन्यान्य सरकारी देश रक्षा-विभागोंके लिये हज़ारों स्वेच्छा-सेवकोंकी आवश्यकता हुई। ये लोग दलके दल अपनी अपनी नौकरी छोड़ कर देश उद्धारके कामोंमें लगगये। इसलिये उनके स्त्री, पुत्र और परिवारको अन्न कष्ट होने लगा। एक तो मूल्य वृद्धि व भावमें कमी, तिस परसे घरके कमाने वाले लोग राष्ट्रके कामोंमें स्वेच्छा सेवक। युद्ध घोषणाके एक सप्ताहके भीतरही अंग्रेज़ समाजमें घोरतर आशंका और नैराश्य दिखाई पड़ी। युद्धके विपदकी अपेक्षा यह विपद अधिक भयंकर बोध होने लगी। इसलिये सरकार इस विपदसे उद्धार पानेके लिये प्राणपणसे चेष्टा करने लगी। उच्चशिक्षित-व्यक्ति-गण भी सरकारके प्रयासमें यथासाध्य सहायता करने लगे।

जो लोग युद्ध करने चले गये उनके आत्मीय स्वजनोंके

प्रतिपालन करनेकी व्यवस्था हुई है। वे लोग जिन सब कार्य्यालयोंमें काम करते थे उनके मालिकोंने इसका भारले लिया है। इसलिये निश्चिन्त होकर ये लोग युद्ध क्षेत्रमें अग्रसर हुए हैं। कहीं कहीं गांव और नगरोंके शिक्षित और धनवान लोग चन्दा करके स्थानीय दुःखी परिवारोंका पालन करने लगे हैं। इसके सिवा गवर्नमेंट स्वयं भी बेकार और रोज़गार रहित लोगोंको नियुक्त करनेके लिये नये नये कारबार खोलने लगी है। देशके किन किन गांवोंमें कितने जुलाहे, दर्ज़ी, बढ़ई और श्रमजीवी बिना कामके बेकार बैठे हैं इसकी फ़िहरिस्त सरकारके पास पहुंचने में देर नहीं लगती। क्योंकि इस देशमें "ट्रेडयूनियन" या श्रमजीवी समिति और "सोशलिस्ट" समितियां असंख्य है। उनके यहां से सरकारी दफ्तरोंमें नियमित रूपसे फ़िहरिस्त आती हैं। इस उपाय से दरिद्रजनोंके अन्न वस्त्रका संस्थान करके देशके कर्त्ता लोग सेना तैयार करने और भेजनेमें समर्थ हो सके हैं।

इस दुःसमयमें भी बहुतसे स्वार्थपर महाजन और दूकानदार अपनेही लाभकी बातें सोचते हैं। इन लोगोंने इस मौक़ेको देखकर दाम चढ़ा दिया है। सभीको डर है कि, विदेशोंसे खाद्य द्रव्यकी आमदनी बन्द होजायगी। इसके अतिरिक्त देशमें प्रचुर परिमाणमें खाद्यद्रव्योंकी खेती नहीं होती। बेलजियम, डेनमार्क इत्यादि देशोंसे अंडा, सूअरका मांस, मक्खन इत्यादि आता है। और जर्मनी और आष्ट्रियासे चीनी आती थी, परन्तु इस समय

आमदनी बन्द होगई है। बड़े बड़े होटलोंमें भी लोग चीनी, अण्डे, मक्खन इत्यादि खानेको नहीं पाते। यह सब देखकर मध्य-वित्त और धनीलोग बोरा भर भर कर चीज़ें ख़रीद ख़रीदकर घरोंमें रख रहे हैं। दरिद्र श्रमजीवी विचारे एक साथ इतनी चीज़ें कहांसे ख़रीदेंगे? वे विचारे मारे चिन्ताके व्याकुल हैं। इंगलैण्डके नाना स्थानोंमें छोटा बड़ा कई एक दंगा हो गया। दूकान लुटनेका सम्वाद प्रायः सुननेमें आता है। पर हां, इनबातों-का अधिक प्रचार न करनाही समाचार पत्रोंका उद्देश्य है।

जोहो, परन्तु मामला बेढब समझकर सरकारने एक "कमी-शन" इस उद्देश्यसे बैठाया है कि जिसमें खाद्य द्रव्योंका सरबराह ख़ूब जल्दी जल्दी हो सके। ये लोग देशमें उत्पन्न होनेवाले द्रव्योंका परिमाण समझने लगे। विदेशोंसे जिसमें निर्विघ्न रूपसे माल आसके इसका उपाय सोचने लगे। और अनेक दूकानदार, अढ़तिये और महाजनोंके साथ सलाह करके मूल्य वृद्धि बन्द करनेकेलिये चेष्टा करने लगे।

सरकारने अनेकप्रकारसे प्रचार करदिया है कि—"कोई डर नहीं है हमारे देशमें इस समय आगामि चार मास तकके लिये गेहूँ मौजूद है। यूरोपके साथ हमारा कारोबार बन्द हुआ है सही, परन्तु इससे कुछ हानि नहीं होगी। हम उत्तर अमरीका और दक्षिण अमरीका से नियमित रूपसे गेहूँ मँगा सकेंगे।

मांसका आना भी बन्द नहीं होगा। जब तक हमारे जहाज़ समुद्र पर स्वाधीन और निरापद रूपसे चलते रहेंगे तब तक हमारे यहाँ दुर्भिक्ष्यका होना असम्भव है । इसके अतिरिक्त मुर्गी, हँस और अन्यान्य पक्षी तथा अंडोंको हम आयर्लैंडसे पाते हैं इसलिये युद्धके कारण इन द्रव्योंकी आमदनी कम नहीं हो सकती ।

इसप्रकार जनसाधारणको प्रत्येक खाद्य द्रव्यकी आमदनी-के सम्बन्धमें खुलासा तौरसे समझाया जाने लगा । सरकारी इच्छाके अनुसार अनेक बड़े बड़े महाजन लोगोंने जनसाधारणको समझा दिया कि किसीके हाथभी अधिक माल नहीं बेचा जायगा । सरकारने भी इस बातका प्रचार करदिया है । इन सब बातोंसे जनसाधारणको कुछ ढाढ़स हुआ है और लोगोंने एक साथ अधिक वस्तुएं ख़रीदना बन्द करदिया है जिससे बाज़ार दर बहुत कम होगया है ।

इसी बीचमें विदेशोंसे माल मँगानेकी चेष्टा होने लगी है । सैकड़ों जहाज़ मालोंसे भरे हुए इङ्गलिस्तानकी ओर आरहे थे । परन्तु युद्ध छिड़तेही सबने किसी निकटवर्ती उदासीन राष्ट्रोंके बन्दरोंमें अथवा ब्रिटिश साम्राज्यके पोताश्रयोंमें आश्रय ग्रहण किया था। बन्दरसे बाहर होते ही जर्मन युद्ध-जहाज़ोंके आक्रमणकी आशंका थी । युद्धकी विपत्तिके लिये यदि बीमा किया रहे तो जहाज़ोंके कप्तान साहस करके अग्रसर हो भी सकते हैं। क्योंकि

तब उनको इसबातकी दिलजमई रहती है कि यदि जहाज़ और माल शत्रु द्वारा गिरफ्तार हो जायगा तो बीमा कम्पनी उसकी क्षति पूर्ण कर देगी। किन्तु वर्त्तमान अवस्थामें किसी जहाज़ का भी बीमा युद्धके कारण नहीं हुआ था। इसीलिये जहाज़ सब दूरके बन्दरगाहोंमें ही रह गये। इस आशंकाको निवारण करनेके लिये सरकारने एक असम साहसका काम किया है। सरकारी वाणिज्य विभागके अधीन एक बीमा विभाग खोला गया है। पहिले तो जहाज़ोंका बीमा किया गया। उसके बाद मालका बीमा किया गया। साधारण बीमा कम्पनियोंके नियमानुसार युद्ध छिड़ते ही जहाज़ोंको किसी बन्दरमें आश्रय लेना पड़ता है। परन्तु सरकारने इस समय जो व्यवस्था की है उसके अनुसार युद्धके समय भी जहाज़ सब निर्भय समुद्र पथ पर चलते रहेंगे। लॉयेडजौर्ज महाशयने पार्ल्यामेन्टमें इस बातका दर्पके साथ प्रचार किया कि—

हमें इस बातकी आवश्यकता है कि जिसे जानकर व्यापारी लोग जहाज़ोंको बराबर चलाते रहें। इसकी अत्यन्त आवश्यकता है जिसमें की खाद्यपदार्थ और अन्य प्रकारकी वस्तुयें बराबर देशमें पहुंचती रहें। और हमारा व्यापार युद्धके समय भी उसी प्रकार चलता रहै जैसा कि शान्तिके समय चलता है। हम लोगों को इसका पूरा विश्वास है कि बृटिश जलसेनाके प्रभावसे व हमारी इस नई नीतिसे हमारा मन का अभिप्राय सफल होगा।

लॉयेडजौर्जकी बीमा प्रणाली और आश्वासवाणीके प्रचार होते ही देशमें जयजयकार मचगया। और एक दूसरे नामी मंत्रीने कहा कि "हमलोग अफ़वाहोंमें पड़कर अधिक डर रहे हैं। वास्तवमें हमारे वाणिज्यके नष्ट होनेकी कोई सम्भावना नहीं है। पर तौभी देश-वासीलोग व्यर्थ भयसे घबड़ा रहे हैं। यह देखकर लॉयेडजौर्जने जो बीमाप्रणाली प्रचलितकी है उससे मेरी संपूर्ण सहानुभूति है।" विपत्तिकालमें बुद्धिमान और विचक्षण व्यक्तियोंकी बातों से जितना उपकार होता है उतना और किसीसे भी नहीं होता। पण्डित लोग यदि साहस दिखाते रहें तो जन साधारण विचलित क्यों होंगे? इङ्गलिस्तानमें इस समय जो कठिन समस्या उपस्थित है उसके लिये पहिलेहीसे देशवासियोंको आश्वस्त और उत्साही रखना अत्यावश्यक है। यही समझकर चेम्बरलेन महाशय कहते हैं-

"मेरा और मेरे उन मित्रोंका जिनसे मैं इस सम्बन्धमें परामर्श ले रहाहूं ख्याल है कि हमारे देशको खाद्य पदार्थोंकी वास्तविक कमीका उतना भय नहीं है जितना कि इस कमीके डरसे जो आशंका बढ़ गई है उसका और जो बाज़ार दर बढ़ा जारहा है उसका है।"

"किन्तु इस आशंकाको शुरूहीमें बन्द करनेके लिये प्रयत्न करना उचितही है जिसमें कि भय कम हो और व्यापार वाणिज्य का क्रम सरल मार्गसे चल सकै जिसमें देशके किसी व्यक्तिको भी किसी प्रकारकी तकलीफ़ न हो।"

पार्ल्यामेंटमें आशावाणीके प्रचार होते ही, एक साथ हज़ारों कण्ठसे और लेखनीसे इनका प्रचार होने लगा। अशिक्षित, अर्द्धशिक्षित, मज़्दूर, कृषक, और श्रमजीवी लोगोंको निर्भय जीवनयापन करनेकेलिये उपदेश देनेको अनेक कर्मवीर उठ खड़े हुए। युद्ध क्षेत्रमें बन्दूक़ उठानेकी अपेक्षा इस कार्य्यमें व्रती होना कुछ कम स्वदेश सेवा नहीं है।

इसी बीचमें हर प्रकारकी वस्तुओंका मूल्य अत्यन्त बढ़ गया था। उसको निवारण करनेके लिये सरकारके खाद्य सरबराह विभागने स्वतन्त्र चेष्टा करना आरम्भ किया। १७००० मोदीख़ाने और दूसरे दूसरे दूकानदारोंके प्रतिनिधि एक बैठकमें बुलाये गये। उनके साथ सरकारने परामर्श करके समझा कि मूल्य वृद्धि रोकना कुछ कठिन नहीं है। यहां तक कि बड़े बड़े दूकानोंके मालिकोंने स्वयंही दाम कम करना आरम्भ किया। उन लोगोंने सरकारको लिखाकि-"हमलोग किसी ख़रीददारको भी मासूली तौरपर जितनी आवश्यकता होती है उससे अधिक माल न बेचेंगे।" किसी किसी दुकानदारोंने लिखा कि-"हम लोग समस्त कारबार सरकारके हाथोंमें देनेके लिये तैयार हैं। हमारे नौकर चाकर आपकी आज्ञानुसार काम करके दुकान चलावेंगे।" इस प्रकारकी आलोचनाके उपरान्त दूकानदारोंके प्रतिनिधि और सरकारके कर्मचारियोंने मिलकर खाद्य द्रव्योंकी एक दर बाँध दी है। चीनी, मक्खन, माँस, अंडे इत्यादिका दाम निर्द्धा-

रित कर दिया गया है। उससे अधिक दामपर कोई दूकानदार किसी वस्तुको नहीं बेच सकेगा। सरकार और व्यवसायी समाज अर्थात् कारबारियोंमें इस प्रकारकी सहानुभूति और एकता संसारके इतिहासमें बहुतही कम दिखाई पड़ेगी। जो लोग युद्धका प्रबन्ध कररहे हैं वे यदि इस प्रकार देशके प्रत्येक श्रेणीके मनुष्योंसे सहायता न पावें तो शीघ्रही व्यतिव्यस्त हो जायेंगे। समस्त देश इस युद्धके लिये तैयार हो रहा है और समस्त देशवासी इस युद्धको चाहते हैं। इसीसे धुरन्धर लोग इसमें सफलता प्राप्त होनेकी आशा करते हैं।

इस ओर इङ्गलिस्तानके उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम सभी ओरसे कृषिकार्यकी अवस्था, फ़सलका परिमाण, अनाज काटनेका उद्योग इत्यादिके सम्बन्धमें अनेक बातें प्रकाशित हो रही हैं। सरकारी कृषी विभाग और श्रमजीवी विभाग और देशके शिक्षित व्यक्तिगण सभीलोग देशकी खेती, अनाज और पशु पालनके विषयमें ध्यान दे रहे हैं। दोही सप्ताहके भीतर शिल्प-प्रधान अंग्रेज़समाज मानो कृषक समाज होगया। खेतीकी उन्नति, नयी नयी वस्तुओंके उत्पन्न करनेकी प्रणाली, पुरानी ज़मीनमें खेती करनेकी व्यवस्था, छोटे छोटे बागोंमें खेतीकी आवश्यकता, नयी नयी ज़मीनोंमें खेती करनेका प्रस्ताव लोगों के सम्मुख उपस्थित किया गया है। कोई कोई कहते हैं— विगत तीस वर्षोंके भीतर इङ्गलिस्तानमें घासकी खेती अधिक

की गई है। अर्थात् अनाज न बोकर उसपर पशुखाद्य स्वाभाविक रूपसे उत्पन्न होने दिया गया है। इन सब भूमिको इस समय कृषीक्षेत्रमें परिणत करना क्या कर्त्तव्य नहीं है? कृषि-तत्त्ववित् और धन-विज्ञानवित् पण्डितोंके द्वारा परामर्श मिलनेसे शीघ्रही इनकामोंमें लगजाया जासकता है। किन्तु सब भूमिके कृषीक्षेत्रमें परिणत होजानेसे पशुपालन और मांस दुग्ध इत्यादिकी अवस्था क्या होगी यह भी पूर्णरूपसे विचार लेना आवश्यक है। इन विषयोंमें "टाइम्स" का परामर्श नीचे लिखा जाता है—

कृषकोंके लिये उचित यह होगा कि अपने विचारको आर्थिक अवस्थाके अनुसार बनावैं। अगर वे लोग गेहूंकी उपजमें वृद्धि कर सकते हैं तो ठीकही है किन्तु उनको इसका ध्यान रखना चाहिये कि गेहूंके खेतीमें तीन सालका अन्तर डालना होता है। इसलिये उन्हें बीचके वर्षोंमें जौ, जई कुदन्नव मेरवने बीजके उत्पन्न करनेका उद्योगभी करना चाहिये जिसमें न तो ज़मीन खराब होवे न वह खाली पड़ी रहै। अंतरे सालभी गेहूं उत्पन्न किया जासकता है पर इससे पृथवी पर बड़ा भार पड़ैगा और ऐसा करनेसे जबतक मूल्यमें भी वृद्धि न होती जाय तबतक परता नहीं पड़ैगा।

खानोंका काम एकप्रकार बन्द होगया है। युद्धके प्रथम सप्ताहमें ही समाचार मिला कि एकही ज़िलेमें ५०,००० श्रमजीवी.

बेकार होगये हैं। इनलोगोंको नये कामोंमें नियुक्त करनेके लिये नानाप्रकारका आयोजन होने लगा है। कोई कोई तो खेतीके कामोंमें लगगये हैं। आजकल इङ्गलिस्तानमें सर्वत्र खेती बढ़ रही है। भूमिके मालिकलोगोंको बहुतसे किसानोंकी आवश्यकता है। इसलिये इन सब खानोंमें काम करनेवाले खेतीके कामोंमें अभ्यस्त होने लगे। इसी तरह अन्यान्य कार्य्योंमें अभ्यस्त श्रमजीवीलोगों को भी खेतीके कामोंमें नियुक्त किया जाने लगा। इस प्रकार बेकारी कम होती है, और साथही देशमें दुर्भिक्ष्य निवारण का पथ भी परिष्कार होता है। इसके सिवा बहुतसे शिक्षित भद्रपुरुषभी स्वेच्छा-सेवक होकर कृषक और भूम्याधिकारियों-के कामोंमें सहायता करते हैं। ये लोग बातकी बातमें किसान होगये। इसीका नाम स्वदेश सेवा है।
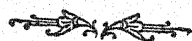
युद्धके समय समाज सेवा।

यह तो सभी जानते हैं, कि प्रबल पराक्रान्त प्रतिद्वन्दी-के साथ युद्ध करनेके लिये सबके पहिले सैन्य संख्याकी ओर ध्यान देना पड़ता है। अंग्रेज़ोंका काम अब सैकड़ों या हज़ारों मनुष्योंसे नहीं चलेगा। उनको इस समय लाखों मनुष्योंकी आवश्यकता है। इसलिये वर्त्तमान सेना विभागमें प्रवेश करनाही स्वदेश सेवाका सर्वप्रधान लक्षण और कार्य्य है।

लन्दन नगरके नाना स्थानोंमें सैन्य संग्रहका केन्द्र स्थापित हुआ है। उन सब स्थानोंमें सर्वदा बहुत मनुष्योंकी भीड़ दिखाई पड़ती है। ये लोग सैनिक होनेके लिये खड़े हैं। एक एक करके ये लोग अफ़सरके पास जाते हैं। शरीर और स्वास्थ्य देखकर इनको सेनामें भर्ती किया जाता है। बहुतसे मनुष्य लौटा भी दिये जाते हैं। प्रतिदिन चार हज़ार सेना इसप्रकारसे चुनी जाती है।

शिक्षित, अशिक्षित, श्रमजीवी, कृषक, शिक्षक, सम्पादक, दूकानदार, व्यवसायी, शिल्पी, चित्रकार, इत्यादि नाना श्रेणीके लोग सेना विभागमें प्रवेशकर रहे हैं। लन्दन, ऑक्सफोर्ड,

केम्ब्रिज इत्यादि सब विश्वविद्यालयोंके छात्रोंने इसके लिये आवेदन किया है । विश्वविद्यालयोंके कर्त्ता कहते हैं—"विश्व-विद्यालयमें तुमलोग युद्धके समय न रह सकोगे इसलिये कोई हानि नहीं होगी । तुम लोगोंमेंसे परीक्षाके लिये जिसने रुपया जमा किया है उसका रुपया हम लौटा देंगे । तदुपरान्त जिसमें भविष्यत्‌में तुम्हारी लिखने पढ़नेकी हानि न हो उसकी व्यवस्थाकी जायगी । विश्वविद्यालय तुम्हारी स्वदेश सेवामें प्रवृत्ति देखकर अपनेको गौरवान्वित समझता है ।

प्रत्येक धनीके घरमें बहुतसे द्वारवान, लेखक और अन्य नौकर प्रतिपालित होते हैं । ये लोग उन्हें युद्धमें जानेक लिये छुट्टी दे रहे हैं । बलिष्ट शरीरके पुरुष कठोर कामोंमें लग रहे हैं, और इनके स्थान पर स्त्रियां नियुक्त हो रही हैं ।

शान्तिके समय थोड़ेसे पुलिस कर्मचारी और पहरेदारोंके द्वारा काम चल जाता है। किन्तु युद्धके समय सरकारी काम सौगुणा बढ़ गया है । मामूली कामोंका परिमाण तो बढ़ाही है, ऊपरसे जलदानसे लेकर ज़मीन जोतने बोनेतक असंख्य कार्योंकी ओर सरकारको ध्यान देना पड़ता है । इसलिये इस समय बहुत से नये कर्मचारियोंकी आवश्यकता होती है। उसमेंसे मनुष्योंकी रक्षा, सम्पत्तिकी रक्षा, शान्ति रक्षा, खाद्य द्रव्यका एकत्रित करना इत्यादि कार्य्योंके लिये बीस हज़ार पहरेदारोंकी नियुक्ति होने

लगी। इनलोगोंको "विशेष पुलिस" कहते हैं। धनी, दरिद्र, शिक्षित अशिक्षित सभी श्रेणीके मनुष्य शान्ति रक्षाके कामोंमें नियुक्त हो रहे हैं।

सेना और पुलिस—इन दो विभागोंमें स्वेच्छासेवक गण दलकेदल प्रवेश कर रहे हैं। रास्तोंमें जो सब पुलिस या सैनिक दिखाई पड़ते हैं वे प्रायः स्वेच्छासेवक हैं। और एक ओर युद्धके समय स्वेच्छासेवकोंकी बड़ी आवश्यकता होती है। वह शुश्रूषा, या अस्पताल विभाग है।

इन कार्य्योंके लिये भी अनेक मनुष्य पाये जाते हैं। किन्तु ये लोग सेवा कार्य्यमें अनभ्यस्त हैं। इसलिये इन लोगोंको प्रारम्भिक शुश्रूषा, पट्टी बाँधना इत्यादि सिखानेकी व्यवस्था होरही है। लन्दन विश्वविद्यालय, लन्दन काउन्टी कौन्सिल और अन्यान्य प्रतिष्ठानोंकी सहायतासे ये लोग सहज ही में इन विद्याओंको सीख लेते हैं। इस ओर देशके नाना स्थानोंमें अस्पतालोंके व्यवहारके लायक मकान माँगा जारहा है। इंगलैण्डके प्रायः सभी धनी व्यक्ति अपना प्रमोदभवन, उद्यानगृह, बैठकख़ाना, ग्रीष्मभवन, क्लबगृह इत्यादि इसके लिये सेवा समितिको समर्पण कर रहे हैं। कोई कोई लोग अस्पतालके लिये प्रयोजनीय द्रव्य और असबाब भी ख़रीद देते हैं। इङ्गलिस्तानके बड़े बड़े ड्यूक, लॉर्ड, महाजन, और भूम्याधिकारी-गण

अपने शौकके महलों को आरोग्यशालाकी तरह व्यवहार करने देनेमें कुछभी कुण्ठित नहीं हैं। इतने मकान और महल मिले हैं कि सेवा समितिके अध्यक्ष लोग कह रहे हैं कि "और लेनेकी आवश्यकता कदाचित अब न पड़ेगी।" गृहदानके अतिरिक्त अर्थदानभी अनेक लोग कर रहे हैं।

बोर समरके समय अंग्रेज़ समाजमें इस प्रकार सेवा प्रवृत्ति और कर्म तत्परता दिखलाई नहीं पड़ी थी। वर्त्तमान अवस्थामें ये लोग स्वदेश वासियोंके स्वदेशानुरागको देखकर गद्गद हो रहे हैं। वास्तवमें इन कई दिनोंके भीतर भिन्न भिन्न उद्देश्यसे असंख्य सेवासमितियां स्थापित हुई हैं। सबको एक शासनके अधीन करके सुशृंखलित न करनेसे श्रम व अर्थके अपव्ययकी सम्भावना है। अंग्रेज़ लोग स्वयं इसे समझते हैं। बोर युद्धके समय उनका अपव्यय हुआ था। उस बातको बहुत लोग स्मरण दिला रहे हैं। इसलिये कार्य्य परिचालन जिसमें एकताके साथ और नियमित रूपसे होसके, इसके लिए विशेष चेष्टा होरही है। इन सेवा समितियोंके चलानेका भार लेकर इनलोगोंने एक विशाल राष्ट्र शासनका भार अपने ऊपर ले लिया है। सेवाका आन्दोलन कैसा विस्तृत और विपुल आकार धारण कर रहा है यह निम्नलिखित असम्पूर्ण तालिकासे कुछ कुछ समझमें आसकता है।

सेनाविभाग और शान्ति रक्षा।

इन दोनों विभागोंके कार्य्योंके लिये अनेक केन्द्र स्थापित हुए हैं। स्वेच्छासेवकगण निकटवर्त्ती किसी केन्द्रमें सम्मिलित होते हैं। सब केन्द्र प्रधानतः निम्नलिखित श्रेणियोंमें विभक्त किये जा सकते हैं।

(क) सैन्य संग्रह।

(१) साधारण स्वेच्छा सेवकोंको युद्ध विद्यामें अभ्यस्त किया जाता है। निरोग और बलिष्ठ पुरुष मात्र इसमें सम्मिलित हो सकते हैं। उनके परिवारके भरण पोषणका भार सरकार या धनी समाज, या व्यवसायीगण, या परोपकार समितियोंने ग्रहण किया है।

(२) 'वेटरन् समिति' जिन लोगोंने पहिले सेनाविभागमें काम करके छुट्टी ली है, वे लोग एकट्ठे होकर एक दल गठन कर रहे हैं।

(३) लन्दन रक्षिणी सभा।

(४) बारिस्टर महलका देशरक्षा विभाग।

(५) विदेशीय स्वेच्छासेवकगण अङ्गरेज़ी सेना विभागमें काम ले रहे हैं। "उदासीन" राष्ट्रसमूह अवश्यही अङ्गरेज़ पक्ष या जर्मन पक्ष ग्रहण नहीं कर सकेंगे। परन्तु अमरीका, इटली, स्पेन इत्यादि देशोंके जनसाधारण चाहे जिसका पक्ष-ग्रहणकर सकते हैं। अङ्गरेज़ोंकी ओरसे इस युद्धमें अनेक

इटालियन स्वेच्छासेवक, काम कर रहे हैं । इसके अतिरिक्त भारतीय स्वेच्छासेवक, अष्ट्रेलियाके स्वेच्छासेवक, कैनाडाके स्वेच्छासेवक, और आयरलैण्डके स्वेच्छासेवकभी नियुक्त होरहे हैं । ये लोग साम्राज्य रक्षिणी सभाके अन्तर्गत हैं । इङ्गलिस्तान प्रवासी भारतीय छात्र, पर्य्यटक, और व्यवसायी गणोंको साम्राज्य रक्षाका अधिकार प्रदान किया है । ये लोग अपनी अपनी योग्यताके अनुसार काम पारहे हैं ।

(ख) पुलिस विभाग । इस कार्य्यके लिये निम्नलिखित विज्ञापन जारी किया गया है ।

स्वयम सेवक पुलिस दल

युद्धके समयमें देशको इसकी आवश्यकता है कि प्रत्येक देश भक्त जिसे सेना विभागमें कार्य्य नहीं है इस विभागमें सम्मिलित हो जाय जिसमें पुलिसको जानोमालके बचानेमें व देशकी अन्य प्रकारसे रक्षा करनेमें पूरी सहायता मिले ।

(ग) छात्रदल समिति । विगत पाँच सात वर्षोंसे इङ्गलिस्तानमें छात्र और युवक सम्प्रदायको समाज सेवाके नाना प्रकारके कार्य्योंमें लगानेके लिये बड़ा भारी काम संगठित हो उठा है । इसका कार्य्य शान्तिके समय भी नियमित रूपसे चला करता है । परन्तु युद्धके समय इन सेवकगणोंका काम अत्यन्त बढ़ गया है । इन लोगोंमेंसे जो लोग युवावस्था अतिक्रम करके गृहधर्म पालन करते हैं वे लोग वर्त्तमान युद्धक्षेत्रमें संग्राम करनेके लिये एक स्वतन्त्र दल बना रहे हैं ।

शकट दान और नौका दान।

धनवान गृहस्थ और महाजन लोग सरकारको अपनी अपनी गाड़ी, नौका, जहाज़ इत्यादि मँगनी दे रहे हैं और बहुत लोग दान भी कर देते हैं। नाना प्रकारके कार्य्योंके लिये इस समय आने जानेकी सुविधा भली प्रकार करना आवश्यक है। और थोड़े ही समयमें अधिक कार्य्य करनेका प्रयोजन है। क्योंकि लोगोंके आने जाने, माल और समाचार भेजने इत्यादिका काम खूब जल्दी न निपटा सकनेसे युद्धमें जयलाभ करना कठिन है। इसीलिये देशके जनसाधारण अपनी अपनी सम्पत्ति सरकारके हाथोंमें समर्पण करनेके लिये उत्साहित हुए हैं।

(१) मोटर गाड़ी समिति। शान्तिके समय रोटीवाले, मक्खनवाले, दूधवाले, सब्ज़ीवाले, तथा अन्य दूकानदार लोग अपनी अपनी गाड़ियोंपर, गृहस्थोंके यहां माल पहुँचा आया करते थे। किन्तु इस समय गाड़ीकी खींच पड़ गई है। सरकार दूकानदारोंकी गाड़ियोंको विशेष कार्य्योंमें लगा रही है। इस लिये सरकारी समर-विभाग द्वारा धनी गृहस्थोंसे कहा जाता है कि आप लोग अपने अपने महल्लेके दूकानदारोंसे परामर्श करके अपनी अपनी मोटरगाड़ी उनको उनकेही कामोंके लिये प्रदान कीजिये। ऐसा होनेसे ख़रीदार लोग नियमितरूपसे यथा समय अण्डा, रोटी, मक्खन और तरकारी इत्यादि पा सकेंगे। इसके सिवा सैन्य संग्रहके कार्य्योंके लिये भी मोटर गाड़ीकी आ-

वश्यकता है। इङ्गलिस्तानके अनेक नगर व गांवोंसे स्वेच्छासेवक-गण शीघ्र शीघ्र शहरोंमें आकर उपस्थित नहीं हो सकते। मोटर-गाड़ीके मालिक लोग सेनाविभागके अध्यक्षोंको अपनी अपनी गाड़ियां प्रदान कर रहे हैं। अध्यक्षगण इनको व्यवहारमें लाकर गांव गांवसे सेना संग्रह कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त असली युद्धक्षेत्रमें भी अनगिनती मोटर गाड़ियोंकी आवश्यकता पड़ती है। बड़े बड़े सेनापति, समाचार लेजानेवाले, दूतगण, रसद पहुँचानेवाले और सेवा शुश्रूषा करनेवाले लोग यदि पैर घसी-टते हुए पैदल काम करें तो बहुतसा समय व्यर्थ नष्ट हो जाता है। इसलिये सहस्रों मोटरगाड़ियां युद्धक्षेत्रकी ओर भेजी जाती हैं। इन सब कामोंकी सहायता करनेके लिये मोटरगाड़ी वाले धनी सम्प्रदायोंने नाना समितियां स्थापित की हैं।

(२) मोटर, नौका और जहाज़। नदी और समुद्रपथमें शान्तिरक्षाकेलिये छोटी छोटी द्रुतगामी नावों की आवश्यकता पड़ती है। सरकार इन सब जलयानोंकेलिये धनी गृहस्थ और व्यवसायी लोगोंसे अनुरोध करती है। अल्प समयमें ही बहुत सी मोटरलगी नौका इत्यादि सरकारके पास पहुंच गई हैं। इसके लिये कई एक कर्मकेन्द्र और समितियां भी स्थापित हुई हैं।

पैर गाड़ी समिति। समाचार और छोटो छोटी वस्तुओंको भेजनेकेलिये यन्त्र-चालित पैरगाड़ीकी अत्यन्त आवश्यकता

होती है। जो लोग साइकिल चलानेमें विशेष निपुण हैं उनकी सहायता युद्धकालमें अत्यन्त मूल्यवान है। इसके सिवा आज कलके युद्धक्षेत्रमें पदातिक और अश्वारोही सेनाओंकी तरह साइकिल चलानेवाली सेनाभी व्यवहारकी जाती है। इसलिये तोप, गोला, बन्दूक़की तरह पैरगाड़ीको भी वर्त्तमान युद्धकी आवश्यक वस्तुओंमें समझना चाहिये। अस्तु सरकारके यहां बहुतसी पैर गाड़ियां प्रस्तुत होरही हैं और साइकिल चलाना जानने वाले लोग अपना जीवन उत्सर्ग कर रहे हैं।

अर्थ सहायता।

छोटे छोटे अनेक प्रकारके चन्दोंको उगाहनेकेलिये साम्राज्य भरमें असंख्य केन्द्र स्थापित हुए हैं। प्रत्येक केन्द्र-का उद्देश्य नक़द रुपयोंको संग्रह करना है। ठीक किस प्रकारके सेवाकार्य्यमें रुपया ख़र्च किया जायगा यह अब भी स्थिर नहीं हुआ है। कतिपय समितियां अस्पताल वि-भागके कामोंमें रुपया ख़र्च करेंगी। अन्य कई समितियोंका रुपया बेकार और रोज़गार-रहित स्त्री पुरुषोंके अभाव मोच-नमें व्यय किया जायगा। किसी किसी केन्द्रसे नये नये शिल्प, कृषी और व्यवसाय खोले जाकर श्रमजीवी लोगोंका कर्म अभाव दूर किया जायगा। कई एक कर्म केन्द्रोंका नाम नीचे लिखा जाता है—

(१) नेशनल रिलीफ़ फ़ण्ड। इस दान भण्डारके अध्यक्ष स्वयं युवराज हैं। इस भण्डारको चलानेके लिये कर्मचारी इत्यादि

नियुक्त करनेमें जितना व्यय होगा सब युवराज स्वयं सहन करेंगे। दो ही सप्ताहमें इस भण्डारमें तीन करोड़ रुपया संग्रह होगया। समस्त ब्रिटिश साम्राज्यसे इसमें आर्थिक सहायता मिली है। और कितना रुपया एकत्रित हो सकेगा यह नहीं कहा जा सकता।

(२) ब्रिटिश रेडक्रॉस सोसाइटी । ये युद्ध कालमें घायल और मृत व्यक्तियोंकी देख भाल, सेवा शुश्रूषा और सत्कारादि-की व्यवस्था करते हैं। इनके भण्डारमें रुपया जमा हो रहा है।

(३) सैनिक और नाविक गणोंकी पारिवारिक सहायता करनेके लिये कई एक समितियां हैं। बेकार, लाचार, मृतप्राय, रोगशीर्ण अथवा कार्य करनेमें असमर्थ सैनिक और नाविक तथा उनके स्त्री पुत्र कन्या व अन्य आश्रितजन इन सब समि-तियोंसे सहायता पाते हैं।

(४) स्वदेश सेवा भण्डार नामक कई एक भण्डार स्थापित हैं। नाना स्थानोंसे इस भण्डारमें रुपया जमा हो रहा है।

(५) युरपके अनेक स्थानोंमें अङ्गरेज़ साम्राज्यके पर्य्यटक-गण रुक गये हैं। उन व्याकुल ब्रिटिश नर नारियोंकी सहायताके लिये चन्दा इकट्ठा किया जारहा है।

(६) बेलजियम और फरासीसी सेना और उनके परि-वारवालोंकी सहायता करनेके लिये भी रुपया इकट्ठा किया जा रहा है।

शुश्रूषा-समिति।

इंगलैण्डके नाना स्वास्थ्यकर स्थानोंमें असंख्य गृह ठीक किये गये हैं। इन सबमें रखकर रोगी और मुमुर्षु व्यक्तियोंकी सेवाशुश्रूषा की जायगी। इन सेवा कार्य्योंके लिये गृहदान, वस्त्रदान, औषधिदान, असबावदान इत्यादि तरह तरहके दान संगृहित हो रहे हैं। इसके सिवा आर्थिक सहायता भी पहुँच रही है।

(१) सिलाई समिति ('मेरी' रानीका सिलाईका कारखाना)। यह कोई नया काम नहीं है पहिलेहीसे इसका कार्य्य चल रहा है। समस्त बृटिश साम्राज्यकी स्त्रियाँ इस सिलाई समितिके कार्य्यमें सहायता करती हैं। इस समय अस्पतालोंमें पड़े हुए घायल और मुमुर्षु लोगोंके लिये पायजामा, फलालीनकी क़मीस, गंजी, मोज़ा, टोपी इत्यादि संगृहीत हो रहा है। और सैनिक नाविक लोगोंके स्त्री पुत्र और कन्याओंके लिये नाना प्रकारका वस्त्र मांगा जा रहा है। गाँठके गाँठ कपड़े रानीके आफ़िसमें जमा हो रहे हैं।

(२) अस्पताल, सेवाश्रम, शुश्रूषागृह इत्यादि।

(३) चिकित्सा-शिक्षालय। स्वेच्छासेवकगणोंको शुश्रूषा-विद्या सिखानेके लिये देशके नाना स्थानोंमें अनेक विद्यालय स्थापित हुए हैं। रोगियोंको ढ़ोना, उनके घावोंका परिष्कार करना, पट्टी बांधना इत्यादि कामोंकी शिक्षाप्रदान करना इन सब केन्द्रोंका उद्देश्य है।

महिला समिति ।

अङ्गरेज़ महिलायें अनेक कार्य्यों में लगरही हैं । सेवा, सिलाई, चन्दा उगाहना, वस्त्रसंग्रह, औषधसंग्रह, सहज पाकप्रणालीकी शिक्षादेना, स्वेच्छासेवकोंको स्वास्थ्य विज्ञानमें पारदर्शी करना, इत्यादि अनेक प्रकारके कार्य्योंको स्त्रियाँ ग्रहणकर रही है । जो सब महिलायें अबतक राष्ट्रीय आन्दोलनकी मुखिया थीं वे सब भी सेवा कार्य्यमें व्रती हुई हैं । कुछ स्त्रियोंने लिख भेजा है कि—"युद्धके समय दरिद्र परिवारोंको आर्थिक कष्ट और अन्नकष्ट होगा । इसलिये पहिलेहीसे थोड़े खर्चमें गृहस्थी चलानेके लिये चेष्टा करना उचित है । हम अनेक उपायसे ख़र्च कम करके स्वास्थ्यकर और पुष्टिकर खाना बनानेकी क्रिया जानती हैं। हमारे पास पत्र लिखनेसे शाक, सब्ज़ी, रोटी, तरकारी इत्यादि सस्तेमें तैयार करनेका उपाय हम लिख भेजेंगी । हम लोगोंको इस समय छटांक भरभी चीज़ अपव्यय करना उचित नहीं हैं । मोटी रोटीसे ही बहुतोंको सन्तुष्ट रहना पड़ेगा । परन्तु यथा सम्भव स्वास्थ्य रक्षाका ध्यान रखनाभी आवश्यकहै । इसलिये नये तरीक़ेसे खाना पकाना जान लेना आवश्यक है ।" इस प्रकारके अनेक पत्र "टाइम्स," "डेलीन्यूज़," "वेस्टमिनिस्टरगेज़ेट," इत्यादि पत्रोंमें प्रकाशित हुए हैं । कोई कोई कहते हैं—"रोटीके बदले भात खानेका अभ्यास करना अच्छा है ।" कोई कहते हैं—"क्या बिना मांस खाये काम नहीं चल सकता ?"

देखते हैं कि आवश्यकता पड़नेपर सभी कहते हैं कि—

रूखी सूखी खायके ठंढा पानी पीव।
देखि पराई चूपड़ी मत ललचावो जीव॥

सरकारी कार्य्यालय

जनसाधरणके द्वारा परिचालित सेवासमितियों और सहायककेन्द्रोंके अतिरिक्त सरकारको भी अनेक कार्य्यविभाग खोलने पड़े हैं। और पुराने विभागों के कामोंकी सूची बढ़ा देनी पड़ी है। क्योंकि अन्त तक सरकार ही युद्ध और देशरक्षाके लिये ज़िम्मेदार है। इसलिये कहां किस उपायसे सेवा कार्य्य होरहा है यह जान रखना सरकारके लिये परम आवश्यक है। इसके अतिरिक्त देशवासीलोग नाना प्रकारके समाचारके लिये सरकारके पास पत्र लिखा करते हैं। तुरन्त उत्तर न पानेसे वे लोग भीत और अस्थिर हो उठते हैं। युद्ध-कालमें इस अस्थिरता, आशंका और संभ्रासको निवारण करना सरकारका एक प्रधान कर्त्तव्य है। निम्न लिखित विषयोंमें सरकार जनसाधरणको परामर्श, सहायता, अथवा समाचार, देनेके लिये सर्वदा प्रस्तुत रहती है।

(१) आमदनी, रफ्तनी, रुपयेकी बाज़ार, दलाली, कम्पनी-का कागज़ इत्यादि।

(२) कृषी, शिल्प और व्यवसायकी अवस्था।

(३) बाज़ार दर, श्रमजीवी नियोग इत्यादि।

(४) कृषी कार्य्योंके लिये स्वेच्छासेवकोंकी नियुक्ति, नई नई भूमिका उपयोग इत्यादि ।

(५) देशमें पैदा होनेवाले खाद्य द्रव्योंका परिमाण और भविष्यत अवस्था ।

(६) बीमाकार्य्य (क) जहाज़ विभाग (ख) माल विभाग ।

(७) सब प्रकारके स्वेच्छासेवकोंकी फ़िहरिस्त इत्यादि ।

(८) सेना नाविक और उनके परिवार वालोंकी अवस्था ।
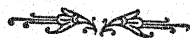
तीनखण्डोंमें विभक्त पोलैण्ड ।
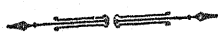
पोल जातिके सबसे बड़े स्वदेश--सेवक-गणभी स्वाधीनताके स्वप्नका प्रकाशरूपसे प्रचार करनेका साहस नहीं कर सकते थे । आज घटनाचक्रमें पड़ कर वही स्वाधीनता, पोलैंडके अत्याचारियोंके द्वारा, अत्यन्त विनीतभावसे, पोल जातिके सम्मुख आकर उपस्थित हुई है । पोलैंडके आष्ट्रियन प्रभुगण कहते हैं-" हे रूसवासी पोलगण, तुम लोग अपने आष्ट्रिया निवासी पोलोंके साथ मिलकर रूसके विरुद्ध उठ खड़े हो । तुमको स्वाधीनता और एकता हम प्रदान करेंगे । " पोलैंडके जर्मन कर्त्तागणभी यही कहते हैं । यह आश्चर्यका विषय है इसमें सन्देह नहीं । जिन तीन राष्ट्रोंने षड़यन्त्र रचकर पोल जातिका तीन टुकड़ा करडाला था आज उन्हींमेंसे प्रत्येक पोलैण्डकी एकता और स्वाधीनता घोषित करनेके लिये उद्यत हैं । तीनोंही कहते हैं-"तुम उठकर हमारे शत्रुके विरुद्ध खड़े होजाओ ।" असम्भव बातें इसी प्रकारसे सम्भव हो जाती हैं । जगत्का इतिहास आदिसे अन्त तक इसी प्रकारकी असम्भव कहानियोंसे परिपूर्ण है ।

पोलैंडके प्रति रूसका भ्रातृ-भाव देखकर हँसी रोकना कठिन है । आष्ट्रियाने तो अपनी पोल-प्रजाओंको उनकी जातीय

भाषा, धर्म, साहित्य इत्यादिकी रक्षा करने दी है। बल्कि थोड़ासा स्वराज्य और स्वायत्तशासनभी आष्ट्रियाके विजित पोल-लोग भोग करते चले आरहे हैं। किन्तु रूसने अब तक क्या किया है ? रूसके शासनमें पोल प्रजा अपनी मातृभाषा तक व्यवहार नहीं कर सकती थी। आज उसी रूसके द्वारा पोल गण स्वाधीनताका प्रलोभन पा रहे हैं । केवल यही नहीं, रूस अपनी विजित पोल प्रजाके साथ आष्ट्रियन पोल प्रजा, और जर्मनीकी पोल प्रजाको सम्मिलित करके एक युक्त पोल राष्ट्र गढ़ देनेके लिये कहता है। इस स्वाधीन पोलराष्ट्रका वह केवल रक्षक और अभिभावक मात्र रहा चाहता है। पोल जातिकी सभ्यता, समाज, साहित्य, धर्म, शिल्प, और शिक्षा सब वस्तु निखालिस स्वदेशी रूपसे चल सकेगी । इसीका एक-सौ पचास वर्षोंसे पोल जाति स्वप्न देख रही है, इसमें सन्देह नहीं । किन्तु रूसकी ओरसे इन प्रस्तावोंका उपस्थित होनाही विशेष विस्मय जनक है।

रूसका प्रस्ताव नीचे लिखा जाता है—

"पोल भ्रातृगण, इतने दिनोंपर तुम्हारे पितामहगणोंके स्वप्नके कार्य्य रूपमें परिणत होनेका समय आगया है।'

'डेढ़ सौ वर्ष पहिले तुम लोगोंकी एक अखण्ड जाति थी। उसी समय तुम लोगोंका तीन टुकड़ा किया गया, तथापि तुम लोगोंकी जातीय चेतना विनष्ट नहीं हुई। तुम लोग सदासे ही आशा

करते चले आ रहे हो कि एक दिन न एक दिन तुम्हारे जातीय जीवनकी उन्नति होगी। तुम लोगोंने सदा सोचा है कि एक दिन न एक दिन तुमलोग रूसके साथ भ्रातृत्व सम्बन्धसे युक्त होंगे।'

'आज हम जर्म्मन शत्रुको दमन करनेकी इच्छासे पोलैण्डके चौहद्दीके भीतरसे रूसी सेनाको ले जा रहे हैं। यह रूसी सैनिक-गण तुम लोगोंसे बन्धु और भ्रातृभाव जतला रहे हैं। आओ तुमलोगभी इनके संग सम्मिलित हो जाओ।'

'पोल जातिकी रूस सीमा, आष्ट्रिया सीमा और जर्मन सीमा ध्वंस हो जाय। और उसके बदले एक अखण्ड पोलैण्डकी नयी चौहद्दी निर्द्धारित हो जाय। आओ तुमको पराक्रान्त रूसीय पताकाके नीचे ऐक्य-बद्ध करदेते हैं। रूसके देखभालमें नव-प्रसूत पोल जाति अपना धर्म, साहित्य और स्वायत्तशासन स्वाधीन रूपसे विकासित कर सकेगी। पोल जातिके जीवनमें नवीन स्पन्दन दिखाई पड़ेगा।'

'प्रबल रूस तुमलोगोंको सस्नेह आलिंगन प्रदान करता है। तुम लोग अपना स्वाभाविक वीरत्व दिखलाते हुए रूस सैन्यकी सहायतामें अग्रसर हो।'

'आजके प्रभातमें, नवीन सूर्य्य नवजीवनको प्रकाशित कर रहा है। यह कहानी नहीं है, स्वप्न नहीं है, अब वह दिन आ गया है।'

'इस लिये विलम्ब न करके तुमलोग अपनी जातीय आकांक्षा चरितार्थ करो। वंशपरम्परा—व्यापी स्वार्थत्याग और जीवन्-

उत्सर्गके अनन्तर तुम लोगोंके ऊपर भगवान ईशूखृष्टका मंगल-मय हस्त प्रसारित हो !"

रूसके इस सम्बोधन और आह्वानको सुनकर ऐतिहासिक गण विस्मित नहीं होंगे । क्योंकि वे जानते हैं कि रणनीति और राष्ट्रनीतिके पुरोहितोंको लाज, शरम नहीं होती । डेढ़ सौ वर्ष तक रूसने एक दिनके लिये भी पोल लोगोंको मनुष्य नहीं समझा था। पर आज रूस अपनी स्वार्थसिद्धिके लिये इस पद-दलितका पैर चाटनेके लिये तैयार है, यही तो राष्ट्र-नीति है, और यही समाजनीति है। मध्य यूरपका मानचित्र देखनेहीसे रूसके इस भ्रातृभावका कारण समझाई पड़ सकता है। जर्मनी परआक्रमण करनेके लिये रूसको अपनी पोल प्रजाके भूमि परसे जाना होगा। उसके बाद जर्मन पोल प्रजाओंके भीतर जा पड़ना पड़ेगा। इस लिये जर्मनीकी पोल प्रजाओंको रूस यदि शत्रु समझकर ध्वंस करनेमें प्रवृत्त हो जाय तो क्या वह अपनी विजित पोलप्रजाको शान्त रख सकेगा ? रूसके पोल प्रजाओंमें विद्रोहाग्निका धधक उठना तो एक मुहूर्तका कार्य्य है। रूस यदि आष्ट्रिया आक्रमण करना चाहे तो भी उसको पहिले आष्ट्रियाकी पोल प्रजाके साथ शक्ति परीक्षा करनी पड़ेगी। यहाँ भी अपनी पोल प्रजाओंके विद्रोही होनेकी आशंका अत्यन्त स्वाभाविक है इसलिये विजित पोलगणोंके विद्रोहके भयसे ही रूस उनलोंगोको तथा उनके

स्वजातीयगणोंको स्वाधीनताकी आशा दे रहा है। इसी लिये वह जर्मनीके पोल लोगोंसे कह रहा है—"तुमलोग जर्मनीके विरुद्ध विद्रोही हो जाओ हमारे पोल लोगोंके साथ मिल जाओ। तुम जर्मनीकी क्षमतासे भीत न हो। हम तुम्हारी रक्षा करेंगे"। आष्ट्रियाके पोल लोगोंसे भी रूस कहता है—"आष्ट्रियाका दासत्व छिन्न भिन्न करके तुम स्वाधीन होकर उठ खड़े हो। हम तुम्हारी तीन टुकड़ोंमें विभक्त पोल जातिको एकमें जोड़ देंगे। और आष्ट्रिया तथा जर्मनीके विरुद्ध सर्वदा तुम्हारी रक्षा करेंगे।" समग्र पोलैण्ड यदि रूसकी सहायता न करे तो वह जर्मनी और आष्ट्रियाके विरुद्ध नितान्त पंगुल है। इसीसे पोलैण्डकी स्वाधीनता और ऐक्य-प्रतिष्ठा घोषित करना रूसकी सबसे पहिली चालाकी है। इसीका नाम है 'युद्धकी आवश्यकता'। इसके भीतर उच्चभाव, जातीय सम्मान तथा स्वाधीनताका गौरव इत्यादि बूंद भर भी नहीं है।

रूसके इस कार्य्यको देखकर ऐतिहासिकगण विस्मित तो नहीं होंगे, परन्तु उसके आवेगमय प्रेमालिङ्गनको देखकर कोई हँसी भी रोक नहीं सकेंगे। क्योंकि पोलैण्डकी वर्तमान दुर्दशाके लिये ख़ास करके रूसही ज़िम्मेदार है। रूसने ही पोलैण्डको बांट लेनेका कौशल किया था। उसीकी देखादेखी आष्ट्रिया और प्रशियाभी इस बटवारेमें सम्मिलित होगये थे। और एक बात यह भी है कि इस हिस्से बखरेमें रूसने ही सबसे अधिक अंश

पाया है। सब मिलाकर तीन वार यह राक्षसी लीला संघटित हुई थी। तीनोंही वार रूसके हिस्सेमें सर्वाधिक भाग पड़ा था।

इसके बाद डेढ़ सौ वर्ष बीत गये। इस बीचमें आष्ट्रियाने पोलोंको अनेक अंशोंमें सुखी किया है, उनके जातीयताका आदर किया है। जर्मनीने भी पोल लोगोंके शासनमें उच्च सभ्यताका परिचय दिया है। विजित पोल लोगोंकी आर्थिक अवस्थाकी उन्नति की है। किन्तु रूस किसी विषयमें भी पोलोंका कृतज्ञता भाजन नहीं हो सकता। जर्मनी और आष्ट्रिया की पराधीनताकी अपेक्षा रूसी पराधीनता पोलोंके लिये अब तक अत्यन्त हृदयविदारक थी। पर आज वही रूस कहता है— "पोल भ्रातृगण, तुम हमारे बन्धु हो। तुम आष्ट्रिया और जर्मनीके विरुद्ध उठखड़े हो। जगत् में स्लाव सभ्यताका विस्तार हो।"

रूसकी यह अत्याचार कहानी अङ्गरेज़ी साहित्यमें सदा लिखी गई है। पोलवीर कोसिउस्कोने देशमाताके ऐक्य और स्वाधीनता रक्षाके लिये जो विफल प्रयास किया था (१८८५ वि०) उस प्रयासने अङ्गरेज़ कवियों द्वारा परम प्रशंसा लाभ किया था। अङ्गरेज़ोंने कोसिउस्को की जिस प्रकार सम्वर्द्धना की है इटलीके स्वाधीनता प्रचारक मैजिनीकी भी शायद उतनी नहीं की है *।

* बायरन कहते हैं—

कवियोंसे दूषित व कलङ्कित यही रूस इस समय पोलैण्ड के बड़े भाई बन रहे हैं। यह हास्यकर है इसमें सन्देह नहीं, परन्तु राष्ट्र मण्डलके सनातन रीतिके विरूद्ध नहीं है।

पोलैण्डके अङ्गच्छेदनकी बात समझनेके लिये अठारहवीं शताब्दीके मध्यभागकी घटनावलीका स्मरण करना होगा। उसके ४०।५० वर्ष पहिले, कर्मक्षेत्रसे फ़रासीसी सम्राट चौदहवें लुईका तिरोभाव हो चुका था। उस प्रबल प्रतापी सम्राटके बाद फ्रांस अथवा स्पेनमें किसी पराक्रमशाली कर्मवीर के विजय काण्डका अनुष्ठान नहीं हुआ। इङ्गलैण्ड तो उससमय

"Kosciusko's name
Might scatter fire through ice like Hecla's flame."

टेनिसन रूसकी पोल-नीति का उल्लेख करके रोते हैं—

"Lord, how long shall these things be,
How long this icy-hearted Muscovite
Oppress the region ?"

कवि कैम्बेल ने भी अपने 'लाइन्स औन पोलैण्ड' (Lines on Poland) में लिखा है (१८८८ वि०)

"Poles ! with what indignation I endure
The half-pitying mouths that call you poor.
Poor ! is it England mocks you with her grief.
That hates, but dares not chide, the Imperial thief,

* * * * *

"States, quailing at the giant overgrown,
Whom dauntless Poland grapples with alone ?
No, ye are rich in fame even whilst ye bleed
We cannot aid you—we are poor indeed."

एक सामान्य राष्ट्र मात्र था। भारतवर्षमें हिन्दू और मुसलमानोंका प्रभाव अस्त नहीं हुआ था। क्लाइव, वारेन हेस्टिङ्ग्ज़ इत्यादि धीरे धीरे सिर्फ़ अपनी क्षमता विस्तार कर रहे थे। इसी युगमें उनविंश शताब्दीके दो विश्वसाम्राज्यकी दीवार खड़ी की जा रही थी—एक रूस, दूसरा प्रशिया (जर्मनी)।

जर्मन साम्राज्यकी नीव डालने वाले वीर पुरुष फ्रेडरिक 'दी ग्रेट' (१७४०—१७८६ ई०) प्रशियाकी सीमा बढ़ा रहे थे। रूसकी साम्राज्ञी द्वितीय कैथेरिन (१७६२—९६ ई०) अपने पिता राष्ट्रवीर पिटर दी ग्रेट (१६८९—१७२५) का पथ अनुसरण करती हुई उत्तर दक्षिण और पूर्वकी ओर रूस साम्राज्यकी वृद्धि कर रहीं थी। उस समय यूरपमें फ्रेडरिक और कैथेरिनके बराबर कोई-भी नहीं था। इनदोनोंने यथेच्छरूपसे यूरपका मानचित्र (नक़शा) बदलना प्रारम्भ किया। इनदोनोंको बाधादेनेकी शक्ति इङ्गलैण्डमें नहीं थी। अमरीकाका युक्तराष्ट्र उसीसमय अङ्गरेज़ोंके हाथसे खिसका जा रहा था। फ्रांस उस समय विराट विप्लव-की आर्थिक दरिद्रता और भीतरी अशान्तिसे उथल पुथलहो रहा था। इसलिये योरपके कलेजेमें छूरी चलाकर प्रशियाका राजा और रूसकी रानी क्षमता विस्तार करनेमें समर्थ हुए थे।

आष्ट्रियाको खर्व करके प्रशिया बड़ा होने लगा। सुइडेन और तर्कीको हटाकर कैथेरिन रूस साम्राज्यको बाल्टिक और

कृष्णसागर तक प्रतिष्ठित करनेमें समर्थ हुई थीं। इन दो दिग्विजयी सम्राटोंके बीचमें हतभाग्य पोलैण्ड देश अवस्थित था। रूस पश्चिम ओर अग्रसर होनेमें और प्रशिया पूर्व ओर अग्रसर होनेमें इस राष्ट्रको बाधक समझते थे। इसीसे इस मध्यवर्त्ती राष्ट्र (बफ़र स्टेट) को विभक्त करना आवश्यक समझागया।

इस समय पोलैण्ड एक बृहत् राष्ट्र था। आजकलके फ्रांस, जर्मनी और आष्ट्रियाकी अपेक्षा यह राष्ट्र आकारमें छोटा नहीं था। इसके अतिरिक्त इस देशकी उत्तरी सीमा बाल्टिक समुद्रके तट पर बहुत दूर तक फैली थी। दक्षिणमें इसकी सीमा प्रायः कृष्णसागर तक पहुँचती थी। मनुष्य संख्या भी कम नहीं थी। किन्तु बहुतसे छोटे छोटे धनी जमींदार लोगोंके द्वारा यथार्थ राजशक्ति खण्डित और दुर्बल हो रही थी। कैथेरिन यही सुअवसर देखकर पोलैण्डके राजा तथा राष्ट्रशासन विभागके ऊपर आधिपत्य विस्तार करने लगीं। फ्रेडरिकने सोचा—"देखता हूं कि रूस धीरे धीरे प्रशिया पर भी दखल कर बैठेगा। यदि ऐसा न हुआ तौ भी कमसे कम हम अपने बाल्टिकसागर तटस्थ गावोंकी रक्षा न कर सकेंगे।" यह सोच कर उसने अपने सहज शत्रु आष्ट्रियाके साथ मिलकर सलाह की। आष्ट्रिया और प्रशिया दोनोंने मिलकर कैथेरिनको भय और त्रास दिखलाना शुरू किया। अतएव कैथेरिन अकेली सब लूट न सकी। आष्ट्रिया और प्रशियाने भी कुछ कुछ पाया।

(१७७२ ई०)। इसी साल भारतशासनके लिये वारन हेस्टिङ्गज़ गवर्नर जेनरल नियुक्त हुए। रेगूलेटिङ्ग एक्ट जारी करके विलायती पार्लियामेन्टने भारतीय राज्योंकी देख भाल शुरू की।

पोलैण्डके पुरुषोंने स्वदेशी आन्दोलन करना नहीं छोड़ा। उनके कर्मवीरोंने तर्कीकी सहायता प्राप्तकी। तर्कीकी क्षमता उस समय भी खूब ज्यादा थी। किन्तु तुर्कोंकी सहायतासे पोल लोगोंका कुछ उपकार नहीं हुआ—रूसने तुर्कोंसे क्रीमिया तथा अन्यान्य स्थान छीन लिया। रूसके इस विस्तारसे यूरप स्तम्भित होगया (१७९३ ई०)।

पोल स्वदेश-सेवकगणोंने तथापि आशा नहीं छोड़ी। कसिउस्को ने आन्दोलन शुरू किया और दो एक युद्धमें जय लाभ भी किया, किन्तु फिर उनका देश लूटा जाने लगा। इस वार आष्ट्रियाने कोई हिस्सा नहीं पाया। तदुपरान्त कसिउस्कोने दूसरी वार चेष्टा की किन्तु उनके विरुद्ध इस वार रूस, प्रशिया और आष्ट्रिया तीनों एकट्ठे होगये। पोलैण्ड यूरपके राष्ट्र मण्डलसे अन्तर्हित होगया-तीन लुटेरोंने उसे बांट लिया (१६९५ ई०)।

तीनवारके बटवारेसे रूसने सबसे अधिक अंश पाया। उससे कम प्रशियाने पाया फिर सबसे कम आष्ट्रियाने पाया।

राक्षसी कैथेरिन ने सुविशाल पोलैण्ड देशके प्रधान भाग को हड़प लिया। तुर्क अब पोलोंकी सहायता न कर सके । इस ओर फ्रांस का विप्लव शुरू हुआ। उस आन्दोलनमें सभी व्यस्त हुए। अतएव पोलैण्डका भाग्य फिर नहीं फिरा।

श्रमजीवी-समस्या ।

प्रत्येक देशके लोग प्रायः दो श्रेणीका व्यवसाय और वाणिज्य करते हैं। पहिलेसे देशके भीतरके भिन्न भिन्न ज़िलोंमें आमदनी और रफ्तनी होती है। दूसरेसे, निज देशको छोड़कर विदेशोंके साथ लेन देन होता है। पहिले लेनदेनका नाम अन्तर्वाणिज्य है और दूसरेका नाम है बहिर्वाणिज्य।

वर्त्तमान कालमें रूस और अमरीकाके युक्तराष्ट्रमें अन्तर्वाणिज्य ही प्रधान है। बहिर्वाणिज्य अति सामान्य मात्र है। इन दो देशोंके लोग विदेशोंसे अधिक माल मंगवाते भी नहीं, और बाहर अधिक माल भेजते भी नहीं। व्यवसायके हिसाबसे ये आत्म-निर्भर हैं। आत्म-प्रतिष्ठाका एक मात्र कारण इन दोनों देशोंका विशाल आयतन और नाना प्रकारका प्राकृतिक उपकरण है। इनकी मनुष्य संख्या बहुत ज़्यादा है। खेतोंमें पैदा होने वाले द्रव्य तथा शिल्प उपकरण भी बहुत होते हैं। मनुष्योंके लिये जो कुछ आवश्यक है वह सब युक्तराष्ट्र और रूस देशमें पाया जाताहै। इसीलिये बाहिरी वाणिज्यकी ये देश ज़रा भी परवाह नहीं रखते। दक्षिण अमरीकाके 'ब्रेज़ील' और आर्जेण्टाइन देश भी वाणिज्यके हिसाबसे इसी प्रकारके स्वावलम्बी हैं।

किन्तु सुईज़रलैण्ड, बेलजियम, हॉलैण्ड, डेनमार्क, नौरवे, सुईडेन, ग्रीस, पुर्तगाल, इत्यादि छोटे छोटे यूरपीय राष्ट्रोंकी अवस्था दूसरे प्रकारकी है। इन सब देशोंमें मनुष्योंके जीवन धारणके लायक सब प्रकारकी वस्तुयें नहीं पाई जातीं। जल-वायु, भूमि, जंगल, खान इत्यादि से विचित्र प्राकृतिक पदार्थ उत्पन्न नहीं होते। इसीलिये ये विदेशोंकी आमदनीके ऊपर बहुत कुछ निर्भर करते हैं। और इसी आमदनीके बदलेमें यथोचित मूल्य देनेके लिये विदेशोंको उन्हें बहुतसा माल भेजना भी पड़ता है। इसलिये बाहिरी वाणिज्य इन सब देशोंका जीवन है। अन्तर्वाणिज्य इनके यहां अति सामान्य मात्र है, ये लोग किसी प्रकारसे भी व्यवसायमें स्वाधीन और स्वावलम्बी नहीं हो सकते। अङ्गरेज़ोंकी भी यही अवस्था है। बहिर्वाणिज्यके हिसाबसे इंगलैण्डका अन्तर्वाणिज्य कुछ भी नहीं है।

युद्ध छिड़नेपर अन्तर्वाणिज्य व बहिर्वाणिज्यका प्रभेद और प्रभाव भली प्रकार समझमें आ जाता है। आज जर्मनीसे और इङ्गलैण्डसे लड़ाई चल रही है। प्रत्येक निज निज वाणिज्यकी रक्षा करनेके लिये चेष्टा कर रहे हैं। अन्तर्वाणिज्यकी रक्षा करना विशेष कठिन नहीं है। बैंकोंकी रक्षा कर सकनेसे ही महाजन लोग कारबार चलानेके लिये मूल धन पा सकते हैं। तब सहज में ही गाड़ी चलाकर एक स्थानसे दूसरे स्थानमें माल भेजा जा सकता है। इङ्गलैण्डने सब प्रकारकी ज़िम्मेदारी लेकर रुपयेकी

बाज़ारको खुलासे कर दिया है । इसलिये देशके भीतर रुपयेका लेनदेन बहुत कुछ सरल और साधारण हो गया है। इसलिये अङ्गरेज़ोंका अन्तर्वाणिज्य यथारीति चल सकता है।

किन्तु अन्तर्वाणिज्य तो अङ्गरेज़ोंके लिये किसी गिन्ती ही में नहीं है। अङ्गरेज़ोंका धन और प्राण सभी बहिर्वाणिज्यके ऊपर निर्भर करता है। इस बहिर्वाणिज्यकी रक्षाकेलिये ही आज सब लोग चिन्तित हैं । विदेशोंसे इगलैण्डमें प्रायः दो प्रकारका माल आता है खाद्यद्रव्य और शिल्पके लिये खेतोंमें पैदा होने वाला उपकरण। खाद्य द्रव्यके अभावसे दुर्भिक्ष्य और हाहाकार अवश्य होगा, इसमें सन्देह नहीं। और कृषीजात उपकरणोंके अभावसे अङ्गरेज़ोंके कल कारख़ाने सब बन्द हो जायंगे, उसके कारण लाखों श्रमजीवी बेकार होकर घूमेंगें। इसके सिवा रफ्तनीकी बात है । रूईका सूत, रुईका कपड़ा, पशमका वस्त्र, कोयला इत्यादिके कारोबारमें अङ्गरेज़ोंके सबसे अधिक मनुष्य लगे रहते हैं। ये कारोबार एक सप्ताहतक भी बन्द हो जांय तो देश भरके शिल्पी, मज़्दूर, और अन्य श्रमजीवियोंके यहां अनशन, अर्द्धाशन और अशान्ति तथा विद्रोह होना शुरू हो जाय । इसलिये आमदनीका रास्ता रुक जानेसे अङ्गरेज़ी श्रमजीवी समाजमें जो बेकारी, और रोज़गारकी कमी होगी, उससे कहीं ज्यादा विपत्ति रफ्तनीका रास्ता बन्द हो जानेसे शोचनीय रूपमें दिखाई पड़ेगी । विदेशी व्यवसाय और वाणि-

र्य्यके ऊपर प्रथम तो अङ्गरेज़ जातिका खाद्यद्रव्य-संग्रह और धन-संग्रह निर्भर करता है, द्वितीय अङ्गरेज़ धनियोंका धनऐश्वर्य्य निर्भर करता है, तृतीय अङ्गरेज़ मज़्दूरोंका जीवन इसीपर निर्भर है। यह मज़्दूर समस्या ही अङ्गरेज़ राष्ट्रमें सबसे भीषण समस्या है।

अङ्गरेज़ोंकी आमदनी इस समय अमरीका, न्यूज़ीलैण्ड इत्यादि देशोंसे सहज ही में चल रही है। इसी प्रकार सहजमें चल सकेगी कि नहीं इसी सन्देहसे यहां दर चढ़ जाया करता है। और कल कारख़ानोंके मालिक लोग कारबार खोलने या बन्द करनेमें प्रवृत्त होते हैं। जब तक अङ्गरेज़ोंके लड़ाऊ जहाज़ अटलाण्टिक महासागरमें एकाधिपत्य रक्षा करनेमें समर्थ होंगे तब तक बाहरसे माल मंगाना निर्विघ्न रूपसे होता रहेगा। किन्तु बाहरसे माल आनेही से क्या होगा? मान लिया कि कृषीजात उपकरण समूह कल कारखानों तथा मालगुदामोंमें आकर जमा होता रहेगा। किन्तु इन वस्तुओंको काममें लाकर शिल्प सामग्री क्या प्रस्तुत की जा सकेगी? कपड़े लत्ते, अञ्जन, लोहा लक्कड़, यन्त्र इत्यादि प्रस्तुत करके कारख़ानोंमें इकट्ठा करनेसे तो लाभ नहीं होगा। इन सब वस्तुओं को बाज़ारमें बेचना चाहिये, अर्थात् रफ्तनी करना आवश्यक है। किन्तु अङ्गरेज़ोंकी बाज़ार खास करके दो ही है, एक तो भारतवर्ष, दूसरे यूरपके देश समूह। इन बाज़ारोंमें माल न भेज

सकनेसे या भेजनेका सुयोग न मिलनेसे अङ्गरेज़ महाजन लोग कदापि अमरीका और न्यूज़ीलैण्डसे शिल्पसामग्री नहीं खरीदेंगे। इन बाज़ारोंके खुली न रहनेसे अङ्गरेज़ व्यवसायी गण अपने शिल्प-कारखानोंमें माल तयार न करेंगे। अर्थात् यूरप और भारतवर्षमें आने जानेका रास्ता सब प्रकारसे बाधाहीन न कर सकनेसे अङ्गरेज़ोंकी फ़ैक्टरी और कारखाने ख़ाली पड़े रहेंगे। इसलिये श्रमजीवी समस्यासे अङ्गरेज़ राष्ट्र अस्थिर होजायगा।

जिन सब देशोंमें लोग बहिर्वाणिज्यके ऊपर निर्भर करते हैं, युद्धके समय उन्हें सबसे अधिक विपत्ति भोगना पड़ता है। किन्तु जिन देशोंमें बहुतायतसे शिल्प उपकरण पाया जाता है और नरनारियोंकी संख्या करोड़ों होती है वे देश युद्धके समय तनिक भी विचलित नहीं होते, वे सहजमें ही युद्ध कर सकते हैं।

अङ्गरेज़ोंके लिये युद्ध करना इसीलिये अत्यन्त कठिन और कष्टप्रद है। वर्त्तमान समरमें इङ्गलैण्ड यूरपीय राष्ट्रोंकी बाज़ारोंमें माल नहीं भेज सकता है। इसलिये बहुतसे कारखाने बन्द हैं और अनेक श्रमजीवियोंके जीविकाका रास्ता बन्द होगया है। किन्तु यूरपकी बाज़ारोंके बन्द होजानेसे अङ्गरेज़ोंको विशेष कष्ट नहीं उठाना पड़ेगा। क्योंकि अङ्गरेज़ोंके लिये सबसे बड़ा बाज़ार भारतवर्ष है। भारतवर्षकी बाज़ार जब तक अङ्गरेज़ोंके

हाथ है तब तक माल बेचनेके लिये अङ्गरेज़ोंको कुछ चिन्ता न होगी। यूरपीय बाज़ार बन्द होजानेसे जो हानि होरही है उसे संभालना कुछ विशेष कठिन नहीं होगा। किन्तु भारतवर्षकी बाज़ार यदि किसी प्रकारसे अङ्गरेज़ोंके हाथोंसे जाती रहे तो इङ्गलैण्डका सर्वनाश होजायगा, भारतवर्षकी बाज़ार दखलमें रखने हीके लिये अङ्गरेज़ोंके लिये भारतका शासन करना अत्यावश्यक है। भारत साम्राज्यके न रहनेसे अङ्गरेज़ोंका कारबार बन्द हो जायगा, मज़्दूरे बेचारे भूखों मरेंगे। इसलिये भारतवर्षकी बाज़ारको निष्कण्टक रखनेकी चेष्टा करनाही अङ्गरेज़ रण-नीतिका सबसे बड़ा उद्देश्य है। श्रमजीवी समस्या और भारत समस्या दोनोंही अङ्गरेज़ोंके लिये एक चीज़ है।

युद्ध छिड़तेही इङ्गलैण्डमें असंख्य सेवा-समिति, सहाय्य-समिति, परोपकार समिति इत्यादि स्थापित हुई हैं। भय, घबराहट और गड़बड़में पड़कर जिससे जो कुछ होसकता है सहायता करता है। असंख्य रुपया बराबर उतर रहा है। धीरे धीरे प्रश्न उठा कि किस प्रकारसे लोगोंका उपकार किया जायगा? अनेक स्थानोंमें रुपया एकट्ठा होरहा है यह देखकर इङ्गलैण्डके दरिद्र, बेकार, और गुण्डे लोग दलके दल तीर्थोंके पण्डों और कौवोंकी तरह नगरोंमें घूमने लगे। उन लोगों को यह अच्छा मौक़ा प्राप्त हुआ। उन्हें आशा हुई कि कुछ न कुछ दान भाग्यसे मिले ही गा। इस ओर जो लोग रुपया देते हैं वे

तो देश सेवाके लिये धन भण्डार खोल ही बैठे हैं, पर यह नहीं जानते कि इन रुपयोंसे क्या करना चाहिये। इसमें सन्देह नहीं कि जो सब सैनिक और नाविक युद्धमें प्रवृत्त हैं उनके रोग शोकके निवारणमें और उनके परिवारके लिये सबसे पहिले रुपये खर्च किये जायंगे। उसके बाद जो रुपये बचेंगे उसे खर्च करनेका तरीक़ा सोचनाही आवश्यक है।

बुअर समरमें दो लाख सैनिक परिवारोंकी सेवामें दो करोड़ रुपया ख़र्च हुआ था। दो करोड़ रुपया उगाहनेके लिये जो व्यवस्था हुई थी वर्त्तमान विपत्तिके समय महारानी-ने उस वृत्तान्तका उल्लेख किया है। *

युद्धकालमें सैनिक विभागके लोगों और उनके परिवारके अन्न वस्त्र और सुख स्वास्थ्य इत्यादिका देख भाल करना स्वदेश सेवकोंका प्रधान कर्त्तव्य है, इसमें सन्देह नहीं। किन्तु इस समय "साधारण" मनुष्योंको दुःख और कष्ट भी बहुत भोगना पड़ता है। कारवार बन्द होजानेके कारण ही यह दुःख

"I take this opportunity of referring my grateful thanks to the Press generally throughout the country, India, the colonies and abroad, who have so kindly supported the Association in the past; to the public who have so liberally provided us with funds; to the employers of labour and working men, who under similar circumstances, set aside part of their weekly earnings; and to the ladies and gentlemen, over 12000, who have voluntarily devoted so much time and labour to carry on this work."

उठाना पड़ता है। इसीलिये कारबारके अभावको मिटानेके लिये बुद्धिमान् अङ्गरेज़ पहिलेहीसे यत्न कर रहे हैं।

युद्धके समय श्रमजीवी लोगोंके दुःख दूर करनेका दो उपाय है। पहिले तो यह कि जिसमें कामका अभाव न होने पावे इसकी चेष्टा करना। ऐसा करनेसे दुःख उत्पन्न होई नहीं सकता। इससे दुःख निवारणके लिये चेष्टा करने की भी फिर आवश्यकता न पड़ेगी। दूसरे, कामका अभाव यदि वास्तवमें होई जाय तो उसके कुफल अनाहार, चरित्र हानि, अकाल मृत्यु, अशान्ति और विद्रोह इत्यादिसे देशवासियोंकी रक्षा करना। अङ्गरेज़ कर्मवीरोंका मत है कि पहिला उपाय अवलम्बन करना सबसे पहिले उचित है। इसलिये नये नये कारबार खोलकर और पुराने कारबारोंको पूरे ज़ोरोंसे चलाकर श्रमजीवी मज़्दूरोंको कामोंमें लगा रखना अति आवश्यक है। किन्तु यूरपीय बाज़ार जब तक बन्द है तब तक इङ्गलैण्डके बहुतसे कारबार बन्द रहेंगे, इसलिये मज़्दूरोंको कामका अभाव होहीगा। तिसपरसे यदि भारतवर्षकी बाज़ार किसी कारणसे खुली न रह सके तो अगणित नरनारी भूखों मर जायंगे। इन सब लोगोंको तुरन्तकी तुरन्त किसी शिल्पकार्य्यमें लगा देना असम्भव है, क्योंकि नये शिल्पको इतने अल्प समयमें गढ़ लेना कठिन है।

अतएव अङ्गरेज़ लोग कामके अभावको निवारण करनेके लिये

उठ खड़े हुये हैं। नये नये कारबार खोले जा रहे हैं, और पुराने कारखानोंमें अधिक मनुष्य नियुक्त किये जा रहे हैं। परन्तु कारोबार खोलना भी सहज नहीं है। कारबार खोलनेके पहिले इन बातोंकी आलोचना करना नितान्त आवश्यक है कि कौन सा कारबार खोला जाय? किस काममें अधिक मनुष्य नियुक्त किये जा सकते हैं? किस कारबारसे भविष्यतमें उपकार हो सकता है? इत्यादि। घबराहटमें पड़कर, चाहे कोई एक व्यवसाय खोल देनेहीसे कुछ लाभ नहीं है।

युद्धकालमें अङ्गरेज़ लोग बहिर्वाणिज्यके उपयोगी कोई कारबार नहीं खोल सकते हैं। इसलिये अन्तर्वाणिज्यके लिये ही इस समय सब प्रकारके श्रमजीवी नियुक्त किये जा रहे हैं। स्वदेशका अभाव और प्रयोजनका विचार करके सरकार और व्यवसायियोंने कतिपय कारबारोंकी फ़िहरिस्त तयारकी है। अधिकांश ही घर, रास्ता, घाट, बाग़, खेत इत्यादि तयार करने या सार्वजनिक कामके अन्तर्गत है। विलायतकी "फेबियन सोसायटी" नामक विख्यात श्रमजीवी-स्वार्थ प्रचारिणी सभाने एक सूची इन कार्य्योंकी प्रकाशित की है। उसका कुछ अंश नीचे लिखा जाता है।*

---

1. Keep up the volume of Employment.

2. Increase all Municipal Enterprises. Don't think yet of "relief works", think of the following:

इस प्रकारके कामोंमें मज्दूरोंको नियुक्त करनेके लिये सरकारने डेढ़ अरब रुपया मौजूद रक्खा है। इसलिये कहते हैं कि राष्ट्रोंके लिये लड़ाई करना कुछ साधारण काम नहीं है। जब तक युद्ध चलता रहेगा तब तक जन साधारणके शान्ति विधान और अन्न संस्थानके लिये सरकारको इतना अधिक

I. Elementary schools, provided and non-provided, that need to be enlarged, remodelled for smaller class rooms, improved or built (don't forget equipment and school furniture).

II. Additional secondary schools, training colleges, hostels, domestic economy centres, technical institutes, etc., that are required.

III. Further buildings and equipment for University Colleges, Science laboratories, etc.

IV. Roads, bridges, foot-paths, etc., that need bringing up to the standard of the Road Board.

V. Tramways called for to complete the local system.

VI. Housing enterprises, including the improvement of slum areas, the erection of additional cottages, etc.

VII. Hospitals for all diseases.

VIII. Street improvements, paving works, main drainage schemes, extensions of the water supply or of the gas and electricity works and plants.

IX. Afforestation of the municipal water catchment area or other waste lands.

X. Additional parks and open spaces—now is the time to move to lay them out.

XI. Waste lands, whether in public or private ownership, for the reclamation or planting of which the Development Commission might be asked for grants.

XII. Harbour improvements, improvement of sea walls and other coast defences, prevention of floods, etc.

अर्थ व्यय करनेकी ज़िम्मेदारी लेनी पड़ी है। "सामरिक" मनुष्योंके खुराक, पोषाक और परिवार पालनमें समर्थ होनेही से युद्धमें जयलाभ कोई नहीं कर सकता। लक्ष लक्ष "साधारण" मनुष्योंके भोजनका प्रबन्ध करना भी नितान्त प्रयोजनीय है। इसलिये युद्धके व्ययमें श्रमजीवियोंको नियुक्त करनेका व्यय भी जोड़ना पड़ेगा।

जो हो लड़ाईके समय देशके कार्य्याभावको दूर करना सर्व-प्रधान कर्त्तव्य है। जहाँ कार्य्याभाव दूर करना असम्भव है वहाँ दुःखी लोगोंको नक्द रुपया और भोजन सामग्री देनी ही पड़ेगी। पर इस दानमें भी अत्यन्त सावधान होना आवश्यक है। नहीं तो फिर घोर अनर्थ हो सकता है। इसविषयमें विलायतवालोंका मत यह है—

मुफ्त में भोजन, अन्न वा धन उस समयतक न बांटना चाहिये जबतक कि इसकी नितान्त आवश्यकता न पड़े, और उस समय भी उसको मशहूर न करना चाहिये। यदि ख़ैरात भी करना हो तो आदमियोंको मज्दूरी देकर उनसे कुछ काम कराना चाहिये। यदि काम न हो तो काम पैदा करो। काम पैदा करते समय इसका ख्याल मत करो कि हमें ख़ैरात करना है।

बेकार मज्दूर लोग यह बात न जानने पावें कि दातागण दानभण्डार खोलकर बैठे हैं।

॥ इति ॥

पं० आत्माराम शर्मा द्वारा जार्ज प्रिंटिंग वर्क्स काशी में मुद्रित

• सिर्फ़ कवर पेज अभ्युदय प्रेस, प्रयाग में छपा।